नीराजन

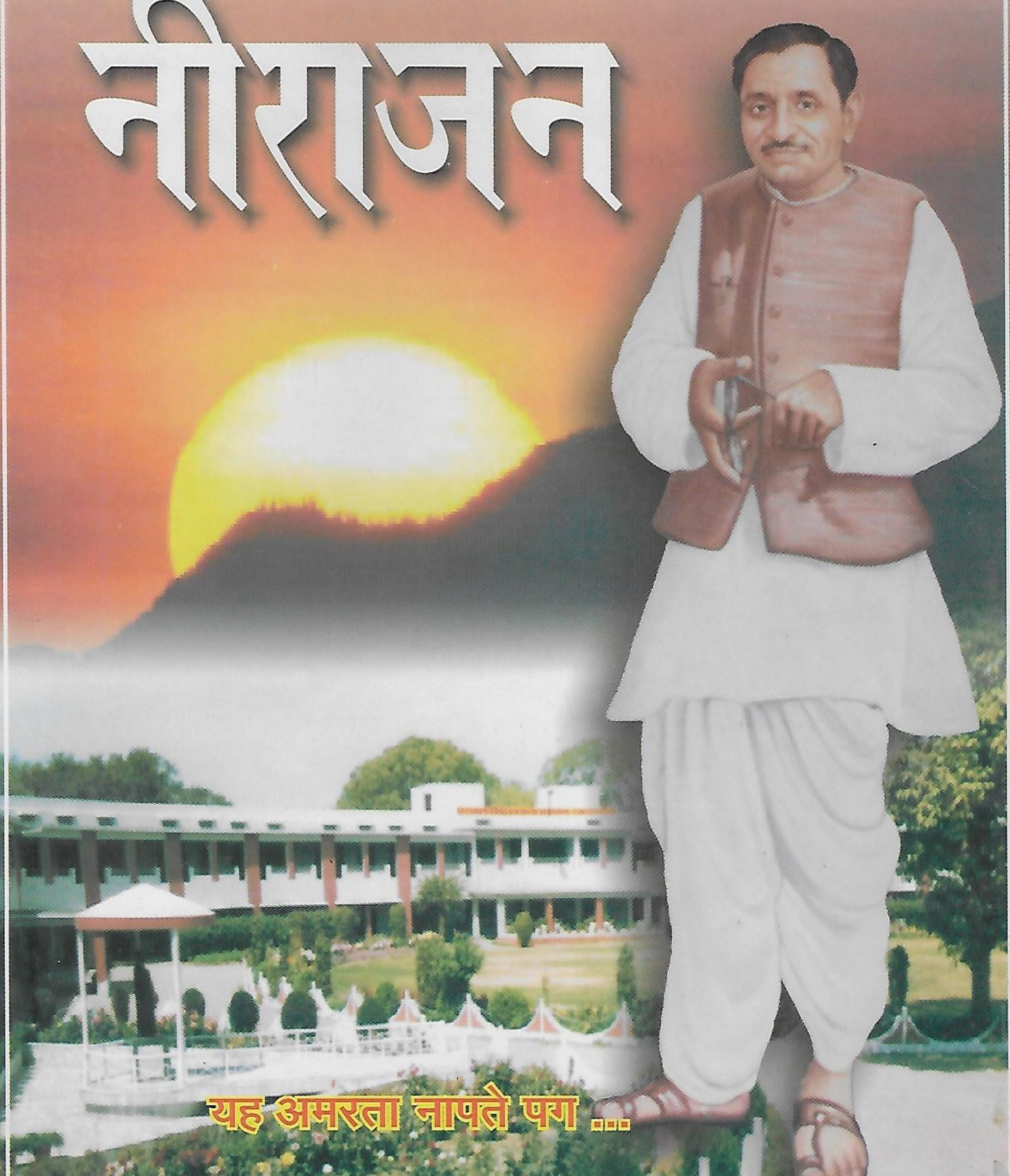

यह अमरता नापते पग ...

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

सत्र : 2002-2003

आराध्य

अतुलित बलधामम् हेम शैलाभदेहं,
दनुज–वन कृशानुं, ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकल गुण निधानं, वानराणामधीशं,
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय कानपुर

वार्षिक पत्रिका : २००१–२००२

प्रेरणा

श्री ओमशंकर

परामर्श

श्री सुमन दुबे, श्री दिनेश भदौरिया

प्रयास

श्रीमती शारदा राव (अंग्रेजी प्रभाग) दुर्गेश वाजपेयी (हिन्दी प्रभाग)

छात्र सहयोग

परेश पांडेय, हरिप्रताप सिंह, आशुतोष द्विवेदी

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,
प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक
क्षमता एवं निस्सीम भाव संपन्ना
मन:शक्ति का अर्जन कर,
अपने जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों में
अर्पित करना ही हमारा परम
साध्य है।

विद्यालय के अधिष्ठाता पूज्य श्री गुरू जी

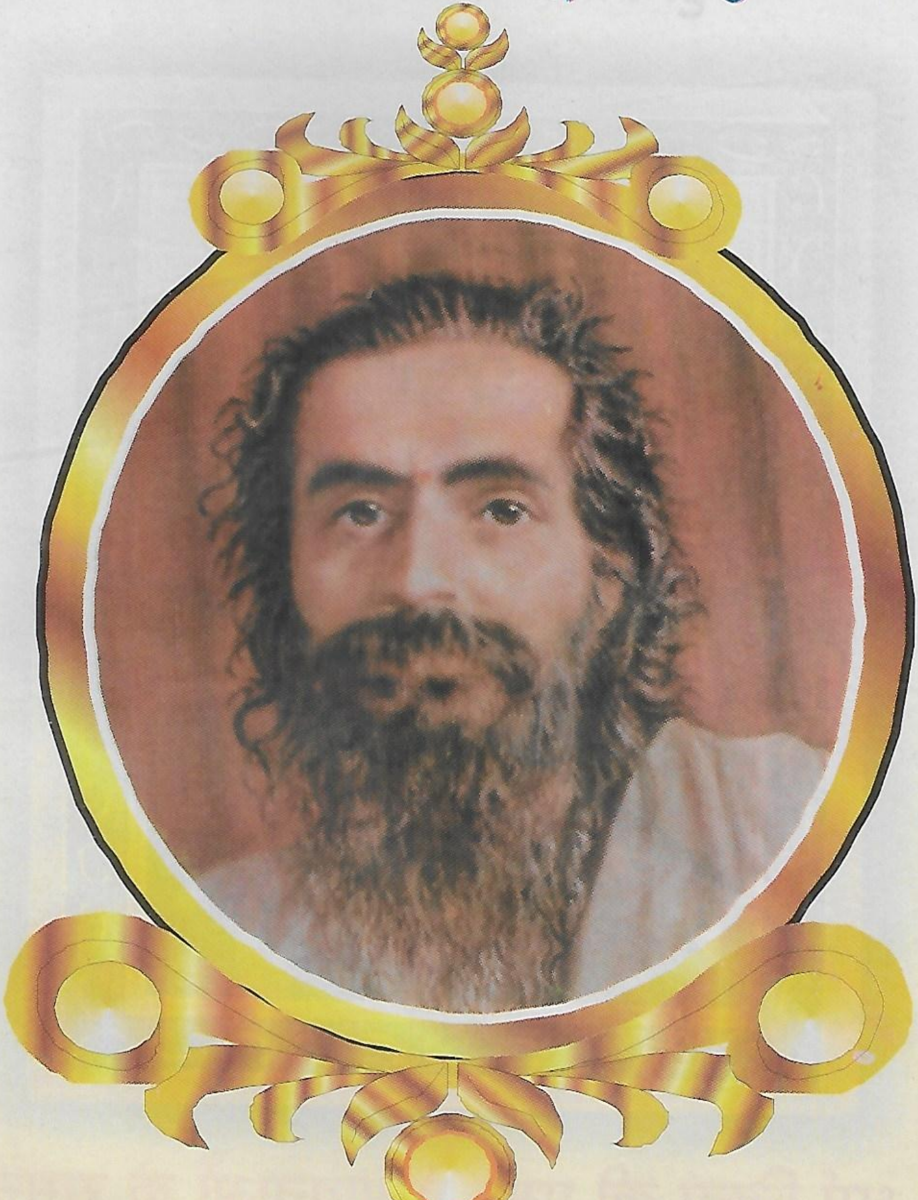

हे युगद्रष्ट्रा, हे कर्मव्रती, निस्पृह अनुरागी धर्म प्राण,
युग का अभिनन्दन स्वीकारो, युग-तप के हे ! शाश्वत प्रमाण

स्मृतिशेष बैरिस्टर साहब

धर्म निष्ठा की प्रभा, हे भावनाओं के सुमन
ओ वशी, युग के तपस्वी,
शत नमन, शत शत नमन।

ममता-मूर्ति 'बूजी'

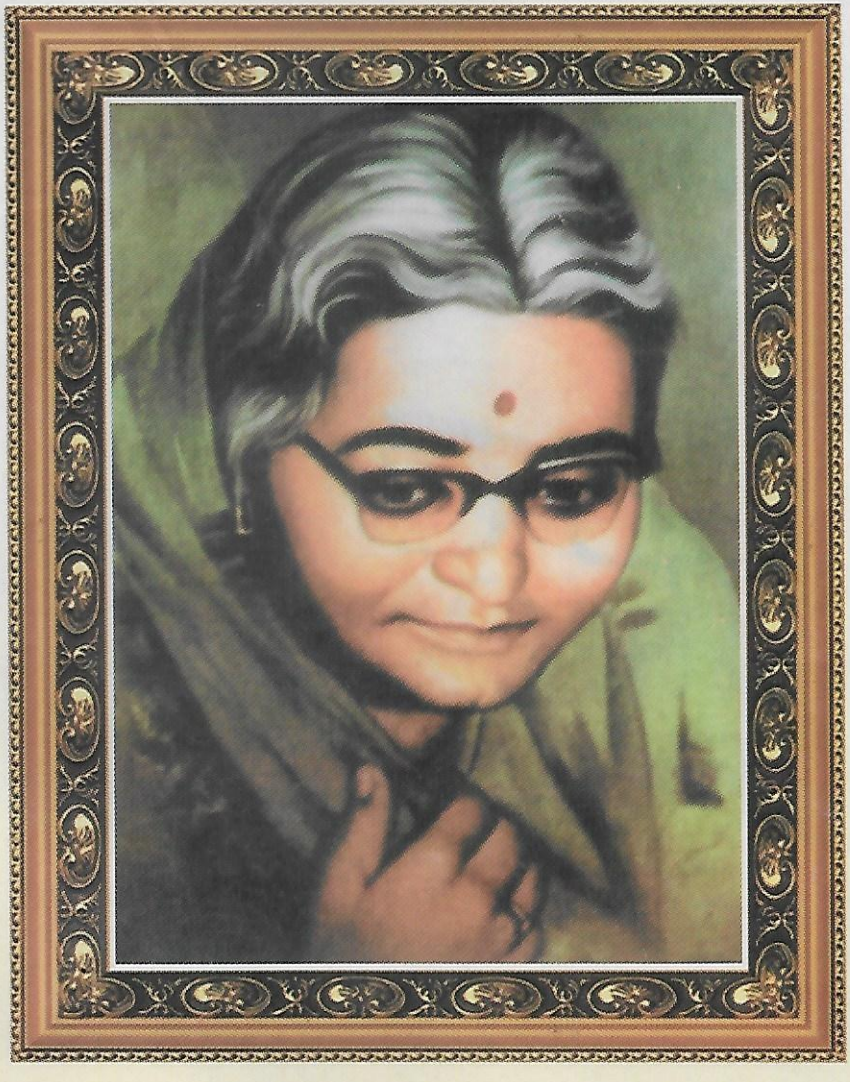

भारत भविष्य की माता हे, विदुला सी प्रेरक गाथा हे
सुत संकल्पित हो रहे सतत, युग सृजन-कर्म उद्गाता से

ब्रम्हलीन श्री भाउराव देवरस

तप रहा केवल जीवन सत्य, प्राण का स्नेह जला हर दीप
समर्पण के अनन्य पर्याय, परम सत्ता के हुए समीप।

श्रद्धांजलि

माननीय श्री गौतम जी तालवाड़, अब हमारे बीच नहीं रहे। प्रख्यात समाजसेवी बाबू द्वारिका प्रसाद सिंह के पौत्र एवं प्रसिद्ध अधिवक्ता श्री गंगाराम तालवाड़ के पुत्र श्री गौतम जी अत्यंत सरल एवं स्नेहिल व्यक्तित्व के स्वामी थे।

मध्य प्रदेश के सिंचाई विभाग के मुख्य अभियंता पद से सेवा निवृत्त होने के पश्चात् वे कानपुर के विभिन्न समाजसेवी संगठनों से जुड़ गए। शिक्षा में उन्होंने नए प्रयोगों को सदैव प्रोत्साहित किया । विद्यालय की प्रबन्ध समिति के सदस्य के रुप में उनका अमूल्य मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहा है। समय-समय पर विद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमो में सम्मिलित हो वे सदैव उत्साहवर्धन करते थे। उनकी सहज सरल मुस्कान को भुला पाना हमारे लिए संभव नहीं है। उनके आकस्मिक अवसान से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। विद्यालय परिवार की ओर से हम उन्हें अश्रुपूरित भावांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। हम परिजनों को उनकी विछोह-व्यथा सहने की शक्ति भी दें।

अनुक्रमणिका

क्रम रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं०
१ हम कहाँ भटक गए	ओमशंकर	७
२. इतिहास बनेगा इतिवृत्त हमारा	---	८
कविता – कानन		
१. राष्ट्र मंदिर का पुजारी	– ओम शंकर	१४
२. मैं धारा के विपरीत चला विद्रोही	– ओम शंकर	१५
३. अँखिया नहिं सूर की काहे दयीं	– सुमन दुबे (आचार्य)	१६
४. समझौते सभी दिखावा हैं	– मयंक मणि त्रिपाठी (पुस्तकालय प्रभारी)	१८
५. इस कारण काँटे बागी हैं	– दुर्गेश वाजपेयी	१९
६. मुझको भी सदबुद्धि दो	– गोपाल सिंह	२०
७. आजादी के बाद	– आशुतोष द्विवेदी	२१
८. भारत माता जय हो तेरी	– नितिन प्रताप सिंह	२२
९. समय की महत्ता	– आशुतोष गुप्त	२३
१०. जो 'माता' को सिर न नवाए	– आशुतोष गुप्त	२३
१०. सच्चे पथ की पहचान	– मयंक गुप्ता	२४
११. जीवन का चित्र बनाता हूँ	– शौर्यजीत सिह 'अंकुर'	२५
१२. पहचान	– प्रशांत द्विवेदी	२६
१३. आतंकवाद	– आदर्श अवस्थी	२७
१४. दुनिया बदलेगी	– नितिन शंकर सिंह	२८
१५. आग जल रही है	– नितिन शंकर सिंह	२९
१६. दहेज प्रथा	– श्रीकांत वशिष्ठ	३०
१७. बापू से कह देना	– अनुज कुमार मिश्र	३१
१८. रहे सुरक्षित हिन्दुस्तान	– सजल गोयल	३२
१९. मन में प्रखर ताप की ज्वाला	– आलोक चतुर्वेदी	३३
२१. स्वतंत्रता	– प्रकाश चन्द्र त्रिवेदी	३४
२२. तुमने लिया शेर से पंगा	– आनन्द शाक्य	३५
२३. चाकमा गीत	– अमर ज्योति चाकमा	३६
राष्ट्र चिन्तन		
१. मन्दिर आन्दोलन साक्षी है कि भारत आज भी ऐतिहासिक चेतना से सुरक्षित है : सर नायपॉल	– मदन मोहन मालवीय	३८
२. सनातन धर्म और छात्रधर्म	– डॉ० विशम्भरनाथ द्विवेदी	४२
३. साहित्य, साहित्यकार और सरकार	– दुर्गेश वाजपेयी	४५
४. सगीत का चतुर्मुखी प्रभाव	– कुशल द्विवेदी	४६
५. सच्ची वीरता	– पंकज	४७
६. अच्छे लोग	– शौर्यजीत सिंह	४८
७. मानव जीवन से श्रेष्ठ कुछ नहीं	– आशीष वर्मा	४८
८. आतंकवाद का समूल विनाश दमन नीति से ही सम्भव है	– अभिषेक अग्निहोत्री	४९

९. आतंकवाद का समूल नाश दमन नीति से सम्भव नहीं है — ऋषि तिवारी ५२
१०. राष्ट्रसेवा के लिए स्वयंसेवक सजग रहें — अनुपम द्विवेदी ५४
११. कठिनाइयाँ, सक्रियता और कुशलता बढ़ाती हैं — संदीप कुमार शिवहरे ५५
१२. सुस्त है भारतीय खुफिया तंत्र — अक्षय यादव ५५
१३. अनुशासन — कुलदीप यादव ५६
१४. 'प्रयास' का प्रारम्भ — शौर्य जीत सिंह ५७
१५. गम्भीर समस्या है प्लास्टिक प्रदूषण — शिवनाथ सिंह ५८
१६. बहुतेरे रोगों की दवा तुलसी — मुनीश शर्मा ६०
१७. ऐसे करें परीक्षा की तैयारी — मनीष कुमार तिवारी ६१
१८. जातिविहीन समाज की जरूरत — रोहित कटियार ६२
१९. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन जरूरी — प्रकाश चन्द्र त्रिवेदी ६३
२०. हिंदुओं के राष्ट्र में हिन्दुत्व की दुर्गति — कुमार सौरभ ६४
२१. भूल जाता हूँ — शौर्य जीत सिंह ६६
२२. गोधरा हत्याकांड पर प्रतिक्रियाएँ — मदन मालवीय ६७
२३. अनियंत्रित खान पान मौत को दावत — हेमंत कश्यप ७०
२४. हिन्दू राष्ट्र नेपाल की काली रात — रोहित ओमर ७१
२५. आतंकवाद और पोटो — अभिनव चतुर्वेदी ७२
२६. आतंकवाद और भारत — सौरभ त्रिपाठी ७३

रोचक एवं जानकारी परक लेख

१. चींटियों का विचित्र संसार — नितिन शंकर सिंह ७५
२. क्या आप जानते हैं — अम्बर अग्रवाल ७६
३. एज्बेस्टस जिसे आग जला नहीं सकती — सौरभ कटियार ७७
४. ऐसा क्यों होता है — अंकित गुप्त ७७
५. अन्तरिक्ष ज्ञान — सत्यम गुप्त ७८
६. सेकरीन का आविष्कार — कुशाग्र द्विवेदी ७९
७. क्या आप जानते हैं — अंकुर रस्तोगी — विकल यादव ७९
८. अनोखा जीवन सम्राट पेंग्विन का — अंकित गुप्त ८०
९. कुछ रोचक जानकारियाँ — अभिनन्दन तिवारी ८१
१०. तरह — तरह के वृक्ष — उत्कर्ष पाण्डेय ८२
११. दुनियाँ की अनोखी झीलें — अभिनन्दन तिवारी ८२

चित्रकूट — यात्रावृत्त

१. चित्रकूट : समाज सेवा का प्रेरणा केन्द्र — कैलाश जोशी (आचार्य) ८४
२. चित्रकूट के प्रमुख दर्शनीय स्थल — पुलकित अग्रवाल ८७
३. ग्राम सेवा में रत दीनदयाल शोध संस्थान — पुलकित अग्रवाल ८९
४. देवभूमि पर चार दिन — रोहित कटियार ९१
५. चित्रकूट की डायरी — प्रज्ञेश गुप्त ९३
६. सैर कर दुनिया की गाफ़िल — आशुतोष द्विवेदी १००
७. चित्रकूट का शैक्षिक शिविर — मृत्युंजय प्रताप सिंह १०४
८. शिक्षक परिवार ------ १०६
९. हाईस्कूल व इंटरमीडियेट परीक्षा सन् २००२ मे सम्मिलित छात्र सूची ------ १०७

Valuable Contributions

Prose :- A reflection of intellect, wit and wisdom

1-	Work is its own reward	- G.P. Verma	2
2-	Pollution Explosion	- Naman Kumar	3
3-	The Book I like Most	- Sudhansu Shekhar	4
4-	The Education of Children	- Pankaj	4
5-	Glorious India	- Ashutosh Dwivedi	5
6-	Science: Uses and Abuses	- Satyam Gupta	6
7-	The Heroic Religion - Hinduism	- Abhishek	7
8-	The Problem of Unemployment	- Nishant	7
9-	The Importance of Trees	- Kuldeep Yadav	8
10-	Mahabharat : The Great Epic in Indian History	- Nishit Kumar	9
11-	Our Duty Towards Mankind	- Munish Sharma	10
12-	Parents : God's most wonderful Gift	- Sandeep Shivhare	11
13-	Violence in Young Children	- Pratyush Pranjal	11
14-	The Value of Sports	- Ankit Gupta	12
15-	The world of Advertisement	- Ashwini Kumar	12
16-	Mystery of Success	- Pranjal Srivastava	13
17-	Fasting : The True Spirit	- Ravi Prakash	14
18-	Attitude is 100 Percent	- Ankit Bhatnagar	15
19-	My Experiences on Selecting Biology	- Abhinav Kushwaha	17
20-	Greening the Red Planet	- Ashutosh Dwivedi	19
21-	Kuran-A-Sharif Says....	- Abhay Chaturvedi	21
22-	Think It Over	- Vivek Pandey	21
23-	Islam & Terrorism	- Abhay Chaturvedi	23

Pearls of Wisdom

(1) Alphabetical order for good student	- Nitin Pratap Singh	24
(2) Meaning of some words	- Sharad Kashyap	24
(3) Points to ponder	- Amit Tiwari	26
(5) Cricket v/s Examination	- Shriyansh Purwar	27

Poetry - The blessings of Muse

1- The Poor	- Ashutosh Dwivedi	28

ज्ञान

ध्येयसिद्धि के लिये उस पर अपनी श्रद्धा रखनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति एक ही समय में सहस्त्रों उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपने सामने एक ही लक्ष्य रखकर उसकी प्राप्ति के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ता है। श्रद्धा और विश्वास से अपने सामने रखा हुआ एकमात्र लक्ष्य प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना सफलता की कुंजी है। एक बार विचारपूर्वक अपना लक्ष्य और उसकी पूर्ति के साधन निश्चित हो जाने पर उसपर अटल श्रद्धा रखनी चाहिये। अपने लक्ष्य पर श्रद्धा और हृदय में लक्ष्य के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा के बिना हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कदापि नहीं कर सकेंगे।

— श्री गुरुजी : समग्र दर्शन

हम कहाँ भटक गए

अंधकार में राह ढूँढ़ता भारत। अविश्वास से आशंकित जवानी। दिशाहीन नेतृत्व। सत्तालोलुप राजनीति। पतित प्रशासन। काहिल न्यायपालिका। पथभ्रष्ट पत्रकारिता और दिवान्ध मनीषा। विचारणीय प्रश्न है कि भास्वर भारत को इस काले कुहासे ने कैसे जकड़ लिया। हम अपने मंगल मार्ग से भटक कर इस गहरी खाई में कैसे आ गिरे ? इस कैसे और क्यों का उत्तर खोजने के लिये परिस्थिति के इतिहास को पढ़ना तो आवश्यक है ही उनके कारणों पर चिंतन करना उससे कम जरूरी नहीं है।

हमारा देश भारत अध्यात्मवादी संस्कृति के अधिष्ठान पर खड़ा है। इसकी मूल प्रकृति सात्विक और प्रवृत्ति समन्वयवादी है। ऐहिक भोगों को इसने जीवन के साधन और परमात्म चिंतन में लीन हो जाना ही जीवन का साध्य माना है। त्याग में सुख और और भोग में दुःखों की अनुभूति इसके जन–जीवन का स्वभाव रहा है। इस देश ने अपनी भावी पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए जिस दर्शन का आधार लिया वह दो पंक्तियों में स्पष्ट हो जाता है–

विद्यांचाविद्या च यस्तद् वेदोभयँ सह
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया मृतमश्नुते।।

भौतिक आधार से अध्यात्म के आधेय तक की सकुशल और सफल यात्रा का जैसा सुस्पष्ट चित्र हमारी आर्ष परंपरा ने इस श्लोक में स्पष्ट कर दिया है वह विश्व भर की किसी संस्कृति में प्राप्य नहीं है।

किंतु काल बड़ा क्रूर होता है और लिप्सा उसकी मायाविनी चादर। अपनी चादर को उसने कब इस देवभूमि पर डाल दिया इसका पता आज तक नहीं चल सका। वयम् राष्ट्रे जागृयाम् का उद्घोष करने वाला ऋषित्व उसी मायामयी चादर को ओढ़े गहरी मूर्च्छा में सोने चला गया है और अभी तक बिना करवट बदले सो रहा है। इसी कारण हमारा चिंतन अपनी स्व–स्थता को विस्मृत कर अस्व–स्थ किंवा प्रकृतिस्थ हो गया है।

पेट के प्रभाव से हमारी सदसद्विवेकिनी प्रज्ञा भी प्रभावित हो गयी। परिणामस्वरूप मलिनबुद्धि लुब्ध मानस और क्षुब्ध भाव लेकर पूरी पीढ़ी भटकती घूम रही है। इने गिने जागृत चिंतन युवा दधीचि की भाँति कभी भावुकता में अश्रुपात करते तो कभी आक्रोश में मुट्ठियाँ भींचते हुए गहन अंधकार में मोह की चादर चीरने का असफल सा प्रयास करते दीख जाते हैं।

अनेक बार सात्विकता सचिन्त सवाल करती है। क्या होगा भविष्य ? विश्वास के अंकुर क्या कभी उग सकेंगे ? क्या फिर से इस देवभूमि पर वसुधा को कुटुंब मानने और जीवमात्र में आत्मदर्शन की परंपरा का उदय होगा ?

क्या विद्या और अविद्या के सत्य को फिर से पहचाना जायेगा ? क्या सत्यमेव जयते सचमुच में विश्वास–वाक्य होगा ? मेरे विचार से यह होगा, किंतु इसके लिये भी विश्वास करने की शक्ति और धैर्य की आवश्यकता है। अतः अपने परमात्मा को अपने कर्मों से पूजकर प्रकारांतर से कर्म को पूजाभाव से करते चलना ही इस युग का अभिप्रेत और अपना सत्सकल्प होना चाहिये। कोई माने न माने, सुने न सुने अपनी धुन में लगे रहना और कर्मों को परमात्मा को अर्पित करते रहना ही आज की समस्याओं का समाधान है।

अतः ओ राष्ट्र नीराजना हित समर्पित शौर्य समन्वित मेधाओ ! अपने कर्म को पहचानो, धर्म को जानो और मर्म को पाने का अभियान रचो।

ओमशंकर

इतिहास बनेगा इतिवृत्त हमारा

स्थापना

"तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें" का जीवन-मंत्र लेकर चलने वाले आर्ष परम्परा के ध्वजवाहक युग-दधीच पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारत माता के चरणों अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रूढ़ शब्दावली हो सकती है; किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शो को मूर्त रूप देने का शपथ-पत्र है। इसका एक-एक अक्षर अंकित करने का महत्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरुषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना-मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी **पूज्य भाऊराव**, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा **परम पूज्य श्री गुरु जी**, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमूर्ति ममतामयी बूजी और इसकी कंचन-काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी माननीय **बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरणीय रहेंगे।

संवत् २०२६ की गुरु पूर्णिमा (१८ जुलाई १६७०) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय जुलाई २००२ में अपने जीवन के बत्तीस स्वर्णिम पृष्ठों को संग्रंथित कर रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हिता लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं० दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैःशनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा यह विद्यालय **भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोद्दीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिग शैल-शृंग।**

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र २४ छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित हैं, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर-ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीर-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनो का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान बीथी, भाऊराव भवन तथा बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव-स्मृति परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक ७ कक्षाओं के १६ अनुभागों में छात्रों की संख्या ७८३ है। इनमें से २१६ छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव–भवन तथा नरेन्द्र–निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही बिहार तथा अरुणांचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय–परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यो द्वारा की जाती है। वास्तव में हमारी अभिलाषा और प्रयास इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवासीय विद्यालय बनाने की है, जिससे अपना सुचिंतित व्यक्ति–निर्माण का कार्य है और अधिक प्रभावी ढंग से पूर्ण हो सके।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में २६ है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रु० से अधिक मूल्य की १५००० पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में ६ दैनिक, ३ साप्ताहिक तथा ६ मासिक पत्र–पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम–पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट कोटि के विद्यालय के रूप मे कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों के समग्र विकास में प्रयास–रत हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल १९७५ में तथा द्वादश का प्रथम दल १९८१ में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा–परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है। प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के आधार पर ही शासन विगत वर्षो से विद्यालय को इण्टरमीडिएट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। वर्ष २००१ का परीक्षा–परिणाम निम्नांकित है :

वर्ष – २००१

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	१२४	१०७
उत्तीर्ण	१२४	१०७
प्रथम श्रेणी	७६	५६
द्वितीय श्रेणी	०६	०७
तृतीय श्रेणी	००	००
ससम्मान	३६	४१
प्रदेश में स्थान	८	१२
	(५वाँ, १६वाँ, १६वाँ, १६वाँ, १८वाँ, १६वाँ, २०वाँ, २२वाँ, २२वाँ)	(५वाँ, ८वाँ, १२वाँ, २०वाँ, २०वाँ, २१वाँ, २२वाँ, २४वाँ, २५वाँ, २५वाँ, २५वाँ, २५वाँ)

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (२७ वर्षो का)		द्वादश (२१ वर्षो का)	
कुल	२२६०	–	१८७६	–
उत्तीर्ण	२२७५	९६.३४	१८६५	९६.२५
प्रथम श्रेणी	१९१५	८४.१७	१४७७	७६.२३
द्वितीय श्रेणी	०३१४	१३.८४	०३४२	१८.२०
तृतीय श्रेणी	००१०	००.४३	०००५	००.२६
ससम्मान	८८४	३८.८५	४२६	२२.८५
प्रदेश में स्थान	६१	७५		

प्रतियोगी परीक्षाएँ

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार है :

जे.ई.ई. (संयुक्त प्रवेश परीक्षा आई.आई.टी., मर्चेन्ट नेवी तथा धनबाद खनन विद्यालय हेतु)	१२
रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज	०५
यू.पी.सी.ए.ट./(क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी विद्यालय)	४४
कुल (इंजीनियरिंग)	६१
सी.पी.एम.टी./संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेज हेतु)	०७

इसके अतिरिक्त सैन्य–सेवा की परीक्षाओं में भी अपने विद्यालय के अनेक छात्र चुने जा चुके हैं तथा विद्यालय से प्राप्त संस्कारों के आधार पर अपने क्षेत्र में अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर रहे हैं।

संघ लोक सेवा आयोग की प्रशासनिक परीक्षा में भी अपने विद्यालय पीछे नहीं हैं। प्रान्तीय प्रशासनिक सेवा (पी.सी.एस.) में अपने विद्यालय के छात्र चि. सुनील कुमार सिंह ने पी.सी.एस. मे पूरे प्रदेश में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त चार अन्य छात्रों का भी चयन हुआ है।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'एकीकृत छात्रवृत्ति' तथा 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' तथा हिन्दी समिति की 'हिन्दी ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रति वर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

छात्रवृत्तियाँ

विगत वर्ष छात्रवृत्तियों का निस्तारण उ.प्र. शासन के वित्त विभाग से न हो सकने के कारण इसकी अद्यतन संख्या नहीं दी जा सकती है, विगत वर्ष की सभी छात्रवृत्तियाँ सतत् चल रही हैं। इसके अतिरिक्त हमारे अनेक

छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं यथा –

श्री हरि भार्गव ट्रस्ट

श्री सोमनाथ चोपड़ा

श्री इन्द्रजीत जैन

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट छात्रवृत्ति

तथा हमारे विद्यालय के पूर्व छात्र श्री अजय शंकर दीक्षित, श्री प्रवीण भागवत, श्री महेश सिंह चौहान, श्री नितिन मित्तल, श्री संदीप मेहरोत्रा एवं श्री शशि शर्मा भी विद्यालय को छात्रवृत्ति दे रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल–कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो–खो, कबड्डी, बॉलीबॉल, टेबिल टेनिस जैसे खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है।

गत वर्ष १९९०–२००० में कबड्डी तथा खो–खो में विद्यालय जनपद स्तर पर प्रथम रहा। खो–खो की पूरी टीम तथा कबड्डी में ६ छात्रों का चयन मण्डल स्तर पर हुआ।

विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडिट कोर (एन.सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र देशदर्शन हेतु जाते रहे हैं। विगत वर्षों में अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय–सारणी में नित्य, प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण–सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मानदंडों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय–रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीकता, सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व–भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थायें कार्य करती हैं– अष्टम कक्षा तक बाल–भारती, नवम–दशम में किशोर–भारती और एकादश–द्वादश में तरुण–भारती– जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रम का संचालन करते है। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र अनुशासन तथा छात्रावास–संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद–विवाद, लेखन ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते हैं।

कंप्यूटर शिक्षण

इस वर्ष कम्यूटर प्रयोगशाला को और अधिक विस्तार दिया गया है। अब हमारी प्रयोगशाला में २४ कम्प्यूटरों के साथ ३ प्रिंटर व १ स्कैनर भी है। सॉफ्टवेयर द्वारा ऑन–लाइन परीक्षा हमारी विशिष्टता है। इसके साथ ही हमने अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश–परीक्षा को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया है। प्रवेश–परीक्षा का परिणाम भी इस वर्ष से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

इसके अतिरिक्त हम अन्य संस्थाओं के लिये भी सॉफ्टवेयर का निर्माण कर रहे हैं। इनमें दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली की वेब साइट तथा इसी के शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र के लिए बनायी जा रही शैक्षिक फिल्में प्रमुख है। साथ ही भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के साथ मिलकर कुछ अन्य सॉफ्टवेयर भी बनाये जा रहे हैं।

युग–भारती

बाल, किशोर और तरुण–भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग–भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र के विद्यालय से जुड़ाव की समाप्ति न माना जाये। इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण–भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग–भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और अपने आप में एक इतिहास भी। यही विशेषता हमारे विद्यालय को अन्य विद्यालयों से एक अलग पहचान देती है।

भारतीय चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा–शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज–जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा–प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करे जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए प्रज्ञा–प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग–भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र–निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज–बन्धुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

– प्रधानाचार्य

अनुभाग – एक

कविता–कानन

राष्ट्र मन्दिर का पुजारी

श्री ओम शंकर त्रिपाठी
(प्रधानाचार्य)

'वज्रादपि कठोराणि मृदून कुसुमादपि' की जो पहचान शास्त्रों में बताई गयी है वह ओमशंकर जी के व्यक्तित्व में सिद्ध होती है। उनके ह्रदय में स्नेह का, ममता का सरोवर है, नंदन वन है, दशरथ का दुलार और कौशल्या का प्यार है लेकिन तमाम सांसारिक छल–छद्मों, प्रपंचों, विध्न--बाधाओं के लिये वे निरे चट्टान हैं, पत्थर हैं, बबूल हैं। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व ही इस कविता में बोल रहा है।
— सम्पादक

राष्ट्र मन्दिर का पुजारी, मुक्ति का कामी नहीं हूँ।
त्याग का पाथेय अक्षय पास मेरे
क्रूर कंटक दलन का उत्साह प्रेरे
विश्व विजयी भावना से मैं भरा हूँ
मैं न अल्हड़ बाल या जर्जर जरा हूँ
हूँ पथिक अविराम, क्षण भर भी सुखद विश्राम का कामी नहीं हूँ।
राष्ट्र मन्दिर का पुजारी ––– ।।१।।

पंथ दुर्गम है कठिन भी, जानता हूँ
विध्न--बाधाएँ बहुत हैं, मानता हूँ
लक्ष्य का उन्नत शिखर अति दूर दुस्तर
फिसलता चमचम चिलकता पंथ प्रस्तर
सततता का मैं अथक अभ्यास कुंठित हार का स्वामी नहीं हूँ।
राष्ट्र मन्दिर का पुजारी ––– ।।२।।

साधना का दीप हर दम ही जला है
भावना संगीत अंतर में पला है
रूठकर सुविधा सलोनी जा चुकी है
अब विराग बयार की मुरझा चुकी है
लक्ष्य का अच्युत अभय संधान, यश का किन्तु अनुगामी नहीं हूँ।
राष्ट्र मन्दिर का पुजारी ––– ।।३।।

मैं चला हूँ और चलता ही रहूँगा
अंधतम में ज्योति बन जलता रहूँगा
मोह के बादल भले घिर घोर छायें
द्रोह की काली घटाएँ रीत जायें
सूर्य की पहली किरण का गीत मैं अँधियार का हामी नहीं हूँ।
राष्ट्र मन्दिर का पुजारी ---- ।।४।।

हो निराशा की भले घर-घर कहानी
झूम झंझाएँ उठे खोये निशानी
जाह्वी पथ सिन्धु का भ्रम भूल जाये
अंधतम रवि को भले ही लील जाये
शुद्ध शोणित का उमड़ता ज्वार हूँ, पानी नहीं हूँ।
राष्ट्र मन्दिर का पुजारी ---- ।।५।।

मैं धारा के विपरीत चला विद्रोही हूँ

श्री ओम शंकर त्रिपाठी
(प्रधानाचार्य)

मैं धारा के विपरीत चला विद्रोही हूँ
फिर भी अपनी मति-कृति का सन्तत मोही हूँ।।
अद्‌भुत अशान्त भावों का उठा बवन्डर हूँ
मैं धरती को धारे कठोरतम मन्दर हूँ
निर्भ्रान्त जगत की मैं अदम्य तरुणाई हूँ
निर्धूम वन्हि की या प्रदीप्त परछाई हूँ।१।

मैं हूँ सरिता का स्रोत सरल पथ की सीमा
संघर्षण का उद्योत शक्ति का अथ भीमा
मैं अन्तरिक्ष की ज्वाला का आमन्त्रण हूँ
धरती की ज्वाला मुखियों का अभिमन्त्रण हूँ।२।

मैं हूँ विश्वास निरीहों का उच्छ्वासों का
अम्बर में अटकी दृष्टि दिशाओं श्वासों का
उर में कराल कालाग्नि पचाने की क्षमता
आँसू अनुताप कराहों पर पूरी ममता।३।

अखियाँ नहिं सूर की काहे दयीं

✍ श्री सुमन दुबे
आचार्य

हिन्दी साहित्य की उत्कृष्टता और शुचिता का सार्थक्य उसके भक्तिकाल में है। कवि कभी ज्ञानी और भक्त–वत्सल श्री कृष्ण के माध्यम से बोलते हैं तो कभी गोपिकाओं के माध्यम से। चर्म–चक्षुओं के बिना सूरदास ने अपने भाव–नेत्रों से भगवान कृष्ण को देखा और उनके साथ हँसे–खेले। आचार्य कवि श्री सुमन जी ने अपने को रसखान के भाव घरातल पर अवस्थित पाया और कान्हा की गायों के साथ खारन–खोहन में घूमते रहे। प्रेम की पीर में बावरे सूर को उन्होंने अपनी आँखों में बसाया है। सुमन जी पिंगल शास्त्र के आचार्य हैं इसलिये मात्रिक छंद सवैया उनका प्रिय छंद है।

– संपादक

ऊँची कगारन पै चढ़ि गाय गुहारिबौ जोर सों टेरिबौ तेरौ।
खोजिबो खारन खोहन में चलि घूम घमौस में घेरिबौ तेरौ।
साँझ लौं माइ मिलावनी बेरि लौं गायन कौं घर फेरिबौ तेरौ।
मोहि तो चाहिये प्यारे गोविंद जू, एकाहि बार कौं हेरिबो तेरौ।

मति अंध बनाइ जो मोहि दयो अखियाँहु जो घूरती काहे दयी ?
छिनहूँ तुमकौं नहिं देखि सकीं, अखियाँ जो बिसूरती काहे दयीं ?
तुम तो कहूँ दूर के देस बसौ, अखियाँ नहिं दूर की काहे दयीं ?
दिखतौ न कहू तुम हीं दिखते अखियाँ नहिं सूर की काहे दयीं ?

घनश्याम कौं देखि नच्यो करतौ, ब्रज कौ मोहि मोर न काहे कर्यौ ?
रहते ब्रजचंद सदा चित में, कहुँ बौरो चकोर न काहे कर्यौं ?
रुकि रीझति बाँसुरी की धुनि पै, मृगनाद विभोर न काहे कर्यौं ?
पनही बुनतौ उन पायन की, अस भाग कौ जोर न काहे कर्यौं ?

विचर्यो करतौ हौं चर्यो करतौ उन कुंजन में तुम टेरिते तौ।
कबहूँ पुचकारि दुलारि कै श्याम, सुकोमल से कर फेरते तौ।
अरुझान विषै झखरान कितैं, निज हाथन से निरबेरते तौ।
तुम सौं कहुँ दूर जो जातो चल्यो, तुम दौरि कै स्याम जू घेरितै तौ।

(सूरदास के प्रति)

गावत है करताल पै ताल दै, नाचत है पद–ताल पै रावरो।
नीर बहावत आँधरी आँखिन, प्रेम की पीर में लागत बावरो।
दै दृग द्वार की ओर तैं दीठि, सुदीठि सुझावत भीतर साँवरो।
दीदन ही सों कहा लखिबो, जग सूर के सामुहें लागत आँधरो।

गावत सूर अमंद अनंद सौं, बंद विलोचन वारि बहाए।
सामुहें बैठि कैं बाल–गोविंद, सुनैं दृग मूँदि सुचित्त लगाए।
आँखिन वारे रहे निगुनी सब आँधरे ने गुन देखे–दिखाए।
भीतर–बाहर देखे जितै उतै बावरे सूर ने साँवरे पाए।

आपु कौं आप में देखै नहीं, तो कहा भयो बाहर दूर के देखे।
जो पुतरी में नहीं उतरी छवि, होत कहा तब घूर के देखे।
आँखिन की करतूत कहा बिनु आँखिन ने गुन देखे–दिखाए।
भीतर–बाहर देखे जितै उतै बावरे सूर ने साँवरे पाए।

आपु कौं आप में देखै नहीं, तो कहा भयो बाहर दूर के देखे।
जो पुतरी में नहीं उतरी छवि होत कहा तब घूर के देखे।
आँखिन की करतूत कहा बिनु आँखिन हूँ रस नूर जो देखे।
मोहिं तो आँखिन वारेहु लागत, आँधरे आँधरे सूर के देखे।

सखि सोहत गोपसभा महिं गोविन्द बैठे हुते द्युति को धरिकै।
जनु केशव पूरण चन्द्र लसै चित चारु चकोरनि को हरिकै।
तिनिको उलटो करि आनि दियो केहु नीरज नीर नयो भरिकै।
कहि काहे ते नेकु निहार मनोहर फेरि दियो कलिका करिकै।

– महाकवि आचार्य केशवदास

समझौते सभी दिखावा हैं...

✍ *मयंक मणि त्रिपाठी*
पुस्तकालय प्रभारी

गांधी नेहरू की याद अभी
हर एक भयंकर भूलें है
जिन्ना की कुटिल करवटों से
हिल गयीं देश की चूलें हैं

सैंतालिस, पैंसठ इहत्तर
क्यों भूल रहे हम कदम–कदम
पीछे क्यों भाग रहें अब तक
पहचानें जानें अपना दम

समझौते सभी दिखावा हैं
यह दुनिया एक छलावा है
हम क्यों दुनिया के पीछे हों
जब अपने मन में दावा है

दुनिया को दुनिया रहने दें
अपनी दुनिया को पहचानें
हम अटल हमारा भाग्य अटल
इस सच को हम हरदम जाने

आज तो हर कृष्ण ने तेवर बदल डाले–
हम सुदामा की तरह जिंदा रहे कब तक ?
प्राण–प्यारी कूबरी–कुर्सी हुई उनको –
राधिका सी विद्वता धीरज धरे कब तक ?

इस कारण काँटे बागी हैं

दुर्गेश वाजपेयी
Sub editor - www.Jagran.com

शिवम् सदा सुंदर होगा ही, यह कहना नादानी है
सुंदर शिवम् नहीं होता है जनजीवन की बानी है
काँटे जीवन की सीख, फूल के रक्षक सदा हितैषी हैं
उद्धत हाथों के शत्रु और सुंदर के निस्व शुभैषी हैं
फिर भी यश फूलों को मिलता काँटे अपयश के भागी हैं।
इस कारण काँटे बागी हैं।

दुनिया हरदम सोचा करती काँटे तो केवल काँटे हैं
इसके स्वार्थी कुठारों ने निर्मम हो कर–पग छाँटे हैं
लेकिन पी पीकर पीर–सिंधु संसृति की शक्ल सजाई है
आँसू पीकर भी मुस्काए होठों से बीन बजाई है
आजन्म त्यागमय जीवन है, भोगों से सदा विरागी हैं।
इस कारण काँटे बागी हैं।

जब रात खराटे भर फूलों की मस्त जवानी सोती है
सपनों में अरूणोदय अथवा झिलमिल प्रभात के मोती हैं
उस समय पूस की रातों में भी जागा करता काँटा है
पर कभी फूल ने काँटे का दुःख दर्द प्रेम से बाँटा है?
परवाह नहीं इसकी उसको, काँटे युग–युग से त्यागी हैं।
इस कारण काँटे बागी हैं।

डाली पर एक साथ रहकर काँटे दुनिया से निंदित हैं
सिर चढ़े स्वार्थी देवों के, ये फूल सभी से वंदित हैं
सम्मान, मान, सुख–सुविधाएँ क्षणजीवी ने मन भर भोगीं
पर चिरंजीव काँटा हरदम है निस्पृह कर्मनिरत योगी
काँटों का होता तिरस्कार, भौंरे मंचस्थ शराबी हैं।
इस कारण काँटे बागी हैं।

जीवन परार्थ ही होम दिया, कुछ नहीं स्वार्थ का ख्याल किया
अपना सर्वस्व लुटाकर भी फूलों को मालामाल किया
फिर भी कृतघ्रता में ऐंठी इस कदर गुलाबों की महफिल
खुद तो जा बैठी मंदिर में बोली काँटे हतभागी हैं।
इस कारण काँटे बागी हैं।

मुझको भी सद्बुद्धि दो . . .

✍ गोपाल सिंह
नवम्

नवीं कक्षा के छात्र गोपाल सिंह का यह गीत भक्ति–भाव से विगलित होने के कारण भजन जैसा पावन हो गया है। – *संपादक*

मुझको भी सद्बुद्धि दो हे मेरे भगवान,
कहलाऊँ मैं भी यहाँ समझदार इन्सान।
तेरी पूजा प्रतिदिन करता,
दुनियाँ से मैं कभी न डरता।
छिड़ी हुई दर्शन पाने की मन मन्दिर में तान,
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

धन दौलत से अब क्या रिश्ता,
मन तेरे चरणों में बसता।
भ्रमित हो गया अँधियारो में
ढूंढूँ, तुझको गलियारों में।
क्यों भटकाता भाव–सिन्धु, मेरी छोटी सी जान,
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

हर अक्षर तुझसे निसृत है, तुझसे ही संसार,
ईश्वर यदि मिल जाये तो होगा हर्ष अपार।
तेरी कृपा दृष्टि ही मेरे जीवन का आधार,
मिल जाये आधार तो, जीवन का उद्धार।
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

सारे जग का नियति–नियन्ता।
बिन अनुमति पत्ता ना हिलता।।
तुझसे ही सब जन्मे प्राणी,
लौट तुम्हीं में आते प्राणी।
हम तो बस कठपुतली है, तेरी दयानिधान,
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

जड़–चेतन में तू ही दिखता,
अन्दर झाँक तो तू है दिखाता।
हर प्राणी में विद्यमान है,
जो दे देता सहज–दान है।
मुझको भी तो दर्शन दे दो हे मेरे भगवान,
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

हम भक्त तुम्हारी पूजा करते,
तुम भक्तों के हृदयों में बसते।
फिर क्यों हैं हम भटका करते,
मन्दिर विपिन मसान।
मुझको भी तो दर्शन दे दो हे मेरे भगवान,
मुझको भी सद्बुद्धि .... ।।

आजादी के बाद

✍ आशुतोष द्विवेदी

एकादश 'क'

अशुतोष ग्यारहवीं कक्षा में इस विद्यालय में आए और सभी क्षेत्रों में अपने होने का एहसास कराया। विज्ञान और गणित में अव्वल होने के साथ वह कविताएँ भी अच्छी लिखते हैं।

— संपादक

इन चौवन वर्षों के भीतर क्या पाया क्या खोया है
आजादी के बाद राष्ट्र में राष्ट्रवाद क्यों रोया है
आज देश के सेनापति सरहद के नक्शे बेच रहे हैं
और देश के नेता ही पशुओं का चारा खींच रहे हैं
हथियारों के सौदों में भी खूब दलाली पाई है
भारत के सत्ताधीशों ने रोज मलाई खायी है
ना जाने नैतिक चरित्र कहाँ कुम्भकरण सा सोया है
आजादी के बाद राष्ट्र में ....
जातिवाद की आग में जलता, सारा देश हमारा है
किंतु स्वार्थपरता में डूबा, सत्ता का गलियारा है
सीमाओं की क्या सोचें अंदर जहरीले नाग पले
इतनी है घुसपैठ कि अब आतंक के साए साँझ ढले
डगर पे चलते बहू डरे, विश्वास कहाँ पर खोया है
आजादी के बाद राष्ट्र में, राष्ट्रवाद क्यों ....
गौ माता के रक्त–मांस को धन की खातिर तोल दिया
एक रूबिया की खातिर दस–दस गुंडो को खोल दिया
मातृभूमि पर मिटने वाले अशफाकों का क्रंदन है
क्यों भारत माँ को डायन कहने वालों का अभिनंदन है
आज देश में गद्दारों ने अपना जाल बिछाया है
आजादी के बाद राष्ट्र में.......

भारत माता जय हो तेरी

नितिन प्रताप सिंह
अष्टम् 'ख'

बाल–वय नितिन की यह कविता, यति, गति औय लय से अपने कवित्व को सार्थक करती है। राष्ट्रभक्ति की इस कविता में संगीत है जिसमें भारत माता की आरती सुनाई देती है।

– संपादक

भारत माता जय हो तेरी,
बजती रहे नित्य रणभेरी।
हम न कभी पीछे हो जाएँ,
और नहीं पग कभी हटाएँ।
प्रगति मार्ग पर बढ़ते जाएँ,
शस्य श्यामला जननी मेरी।
भारत माता जय हो तेरी।।१।।

हम न कभी रिपु से घबराएँ,
दुष्टों को हम मार भगाएँ।
इस धरती को शीश नवाएँ,
अमिय पूत यह धरती मेरी।
भारत माता जय हो तेरी।।२।।

कभी न पल भर समय गवाएँ,
भारत हिन्दू राष्ट्र बनाएँ।
सुमन सुगन्धों से महकाएँ,
पावन भारत माता मेरी।
भारत माता जय हो तेरी।।३।।

अपने मन के दोष हटाएँ,
हम बिछड़ों को पुनः मिलाएँ।
भ्रमित विश्व को मार्ग दिखाएँ,
यह संकल्प यही ध्वनि मेरी।
भारत माता जय हो तेरी।।४।।

समय की महत्ता

✍ आशुतोष गुप्त
अष्टम 'क'

समय की गति अबाध है। समय बड़ा कीमती है, जिसने इसका सम्मान किया, वह जमाने से सम्मानित हुआ और जिसने इसकी उपेक्षा की वह वक्त के कूड़ेदान में फेंक दिया गया। — *सपादक*

बीता समय न लौट कर आता
बन्धु न इसे खरीदा जाता
भरसक कर लो तुम प्रयत्न
कोई नहीं फिर इसको पाता
किया सदुपयोग इसका जिसने
हुई न उसके मन में पीर
किया है जिसने दुरुपयोग निरन्तर
बन्धु शर्म से हो गया है नीर
नष्ट न करो इस अमूल्य समय को
क्यों कि जाकर नहीं है आता
कर लोगे यदि सदुपयोग
तो बन जाओगे भाग्य–विधाता।

जो 'माता' को सिर न नवाए

✍ आशुतोष गुप्त
अष्टम् 'क'

सच्चा देशभक्त वही कहलाता
जिसे देश पर गर्व है
चरणों पर भारत माता के
अर्पित करता सर्व है।

सच्चा देश भक्त वही कहलाता
बांध कफन जो बढ़ता जाता
भारत माँ की आन बचाने
फाँसी पर हँस कर चढ़ जाता।

जो 'माता' को सिर न नवाए
गीत वंदेमातरम् का ना गाए
उसका तो मर जाना अच्छा
जो मौके पर काम न आए।

सच्चे पथ की पहचान

✍ मयंक गुप्त

एकादश 'ख'

एक रास्ता सफलता का होता है, एक रास्ता सच्चाई का होता है। सच्चाई और सफलता को साथ लेकर चलें, परन्तु यदि दोनों में से एक को ही चुनना पड़ जाए तो सच्चाई को चुनें, सफलता की कीमत पर। मयंक अपनी कविता में यही कहना चाहते हैं। — *संपादक*

गतिमान पथिक, सुन लो
सच्चे पथ की पहचान बताता हूँ।
जो शुभ सच्चा पथ होता है,
मैं उसका राज सुनाता हूँ।।

जिस पथ पर पैसा बिछा और
कालीन बिछे हों लाल–लाल।
जिसको आलोकित करने में
शोणित की जलती हो मशाल।।
ऐसी राहों से मैं हरदम
राही को दूर हटाता हूँ।।

जिस पथ पर करुणा रोती हो,
सम्पदा कुटिल इठलाती हो।
ठठरी को चूस रहे शिशु को
माँ बरबस रोज सुलाती हो।।
ऐसे पथिकों के लिये सदा
जलते अंगार बिछाता हूँ।।

जो पथिक खून के प्यासे हों,
लालची स्वर्ण के खासे हों।
निर्धन जन जिनके दास और
सोने के महल मवासे हों।।
उन पथिक और पथ, दोनों को
निर्भय हो खूब जलाता हूँ।।

जिस पथ पर काँटे–फूल और
सुख–दुःख दोनों ही पलते हों।
जिस पथ अज्ञान–अँधेरे में
शुभ दिये ज्ञान के जलते हों।।
ऐसे पथ की ही राह सदा
राही को रहा बताता हूँ।।

गतिमान पथिक, सुन लो
सच्चे पथ की पहचान बताता हूँ।
सुख–दुःख की चिन्ता छोड़
सदा मैं गीत विजय के गाता हूँ।।

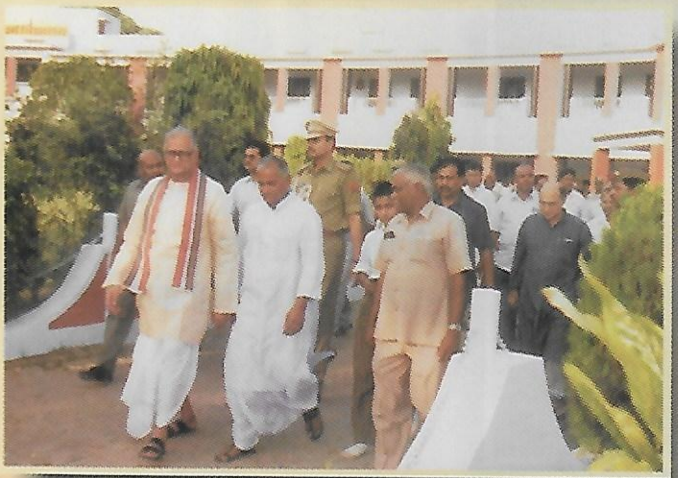

राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री
प्रधानाचार्य जी के साथ वार्षिकोत्सव
स्थल की ओर जाते हुए।

एन.सी.सी. परेड का अभिवादन
स्वीकार करते राज्यपाल।

पवनपुत्र की प्रतिमा लेकर
भाव-विगलित श्री विष्णुकान्त शास्त्री

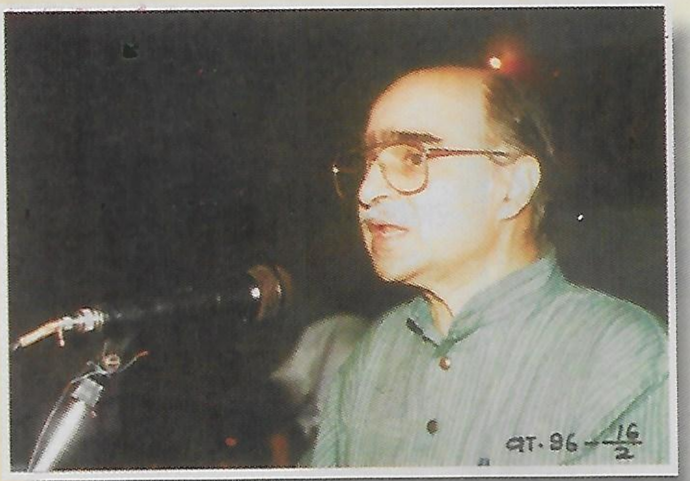

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह :
सरलता और विनम्रता कोई इनसे सीखे

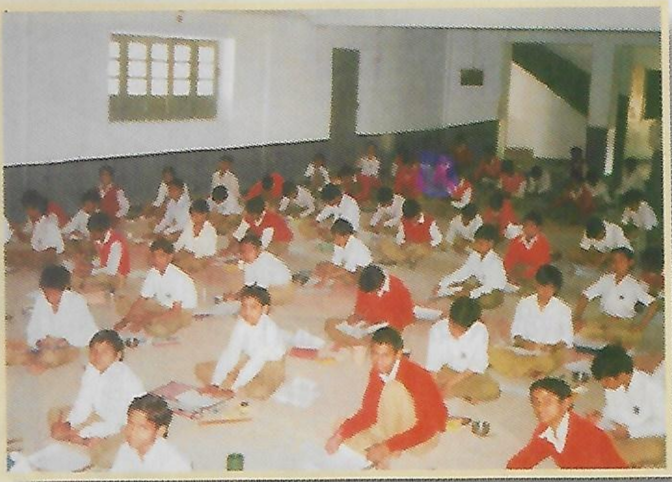

सृजन के रंग
चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थी

शैक्षिक संगोष्ठी में
आई. आई. टी. के निदेशक
एस.जी. धांडे का स्वागत करते
प्रधानाचार्य जी

जीवन का चित्र बनाता हूँ

✍ *शौर्यजीत सिंह 'अंकुर'*
द्वादश (क)

कवि भावज्ञ होता है। जड़–चेतन सर्वत्र वह संवेदनाओं का एहसास करता है। शौर्यजीत के अनुभव भी उसी श्रृंखला में अनुस्यूत हैं।
– संपादक

नयनों के आभूषण आँसू,
मुझसे करते बातें आँसू।
पाषाण हृदय में देखे हैं,
मैंने सुख के दुःख के आँसू।
जिसकी आँखों में नीर नहीं,
दुःख दर्दों की तस्वीर नहीं।
पाषाण हृदय उस मानव के,
दृग से भी अश्रु बहाता हूँ।
मैं कवि हूँ युग का द्रष्टा हूँ,
जीवन का चित्र बनाता हूँ।।
ये पुष्प हमेशा कहते हैं,
जब मुझसे बातें करते हैं।
शबनम के आँसू ढुलकाकर
कवि से नित बातें करते हैं।
दुनिया की पीर पचाकर ही
अपना दर्द छिपाकर ही
छंदों की माल बनाता हूँ
कविता में रंग सजाता हूँ।
मैं कवि हूँ युग का द्रष्टा हूँ
जीवन का चित्र बनाता हूँ।
माटी में भी तस्वीर दिखे,
सबकी आँखों की पीर दिखे।
उस सजल नयन के प्रेम–अश्रु से,
मैं अपनी प्यास बुझाता हूँ।
मैं कवि हूँ, युग का द्रष्टा हूँ
जीवन का चित्र बनाता हूँ।

पहचान

✍ प्रशान्त द्विवेदी
द्वादश 'क'

आर्यावर्त का गौरवशाली इतिहास है, एक पहचान है लेकिन आज की पीढ़ी अपने को न पहचानने के कारण हीनभाव से ग्रस्त है। प्रशांत ने अपनी इस कविता में यही पहचान बताई है। – *संपादक*

शिक्षा का यह राष्ट्र जहाँ पर, जन–जन शिक्षक होता था।
जगह–जगह गुरुकुल होते थे, घर–घर शिक्षण होता था।
चन्द्रगुप्त से छात्र जहाँ, चाणक्य द्रोण से शिक्षक थे।
आर्यभट्ट से गणितज्ञ जहाँ, धन्वन्तरि महा चिकित्सक थे।
तक्षशिला व नालंदा जिसकी समृद्ध शाखाएं थी।
विद्वानों का राष्ट्र जहाँ कण–कण बिखरी प्रतिभाएं थी।
मैं दुनिया को भारत का इतिहास बताने आया हूँ।
ऐसी पुण्यमयी धरती कर गुणगान सुनाने आया हूँ।१।

यह कंगालों का देश नहीं, सोने चाँदी की धरती थी।
सोने के भवन जहाँ बनते, रत्नों की ढेरी लगती थी।
हीरे थे अनमोल यहाँ, मोती हुआ खिलौना था।
धन का अतिशय संचय करना, सबसे कर्म घिनौना था।
दान धर्म की खातिर रत्नों के कोष लुटाये जाते थे।
शासन–सत्ता का त्याग, मोक्ष के स्रोत बताये जाते थे।
मैं पश्चिम के भोगवाद का हश्र बताने आया हूँ।
मैं अमरीका के डॉलर को औकात बताने आया हूँ।
मैं दुनिया को भारत का ....।२।

भारत की पावन धरती पर, हिन्दी बनी बेचारी है
आजादी को बरसों बीते लेकिन क्या लाचारी है
आज देश के नेता–मंत्री, हिंदी भाषण में शरमाते।
हिदीं को माँ कहने वाले, अपने को मजबूर बताते
मैं दुनियाँ को हिन्दी की समृद्धि बताने आया हूँ।
हिन्दी – हिन्दू, भारत की पहचान बताने आया हूँ।
मे दुनिया को भारत का ....।३।

आतंकवाद

✍ गोपाल सिंह

नवम्

आज देश आतंक की आग में जल रहा है। जम्मू की सरजमीं लहू से लाल है। रोजाना किसी का सिन्दूर पोंछ दिया जाता है तो किसी के बुढ़ापे के सहारे को छीन लिया जाता है। कभी भगवान शिव के दर्शनार्थ गये सौ–सौ शिवभक्तों को गोलियों से भून दिया जाता है तो कभी पवित्र रघुनाथ मंदिर पर फिदाईन हमला होता है। पूरे देश में आई.एस.आई. का संजाल फैला है। छोटी ही आयु में चि० गोपाल के मानस में राष्ट्रवाद हिलोरें ले रहा है, देखे इस काव्य–प्रयास में–

– *संपादक*

आतंकवाद की जड़ फैली, उन्मूलन बहुत विनाश जरूरी है,
विनाश हुआ ना इसका तो सबकी प्रगति अधूरी है।
इसका बीजारोपण होता कुछ लोगों की गद्दारी से
उसके पाँव बहुत बढ़ आए, शासन रहा खुमारी में।
आतंकवाद के घोर घनों में देश हमारा घिर आया है,
जाने क्या होने वाला अंधेरा देखो छाया है।
उग्रवाद की लपटों से जनता में कोहराम मचा,
इसका ऐसा दुष्प्रभाव है जिससे कोई नहीं बचा।
इससे लोहा लेना ही अब सबके लिये जरूरी है,
आतंकवाद की जड़ फैली, उन्मूलन बहुत जरूरी है।
आतंकी संजालों का हर कोने में फैला डेरा,
शासन भी न रोक सका, सत्ता ने है माथा फेरा।
जनमानस को इसके प्रति दृढ़ संकल्पित होना ही होगा,
इसके समूल विनाश में सबको हाथ बटाना ही होगा।
राष्ट्र कल्याण के हित में इसका विनाश जरूरी है,
आतंकवाद की जड जो फैली, उसका विनाश जरूरी है।

दुनिया बदलेगी

✍ *नितिन शंकर सिंह*
अष्टम् 'क'

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। 'संसरति इति संसारः' अर्थात् जो लगातार सरक रहा है, वह ही संसार है। आने वाले समय में दुनिया और बदलेगी। वैज्ञानिक प्रगति होगी, आविष्कारों की होड़ होगी लेकिन यह नन्हा कवि भगवान से प्रार्थना करता है कि हथियारों की होड़ रुके, युद्धों की विभीषिका टले।

– संपादक

है यह सत्य अटल यह दुनिया बदलेगी,
आज नहीं तो कल अपना हुलिया बदलेगी
बदलेगी, निश्चय ही यह दुनिया बदलेगी।।

होंगे तब भी धरती और आकाश यही,
अग्नि, वायु, जल का होगा एहसास यही।
सूरज, चाँद, सितारे ऐसे ही होंगे,
दृश्य प्रकृति के सारे ऐसे ही होंगे।।

केवल दृष्टि बदल जाएगी मानव की,
और मनों की दुनिया भी बिल्कुल बदलेगी।
नहीं रुकेगी उन्नति भी आविष्कारों की,
पर रुक जाए भगवान होड़ इन हथियारों की।

यदि वैज्ञानिक सृजन–सहायक ही होंगे,
साधन फिर सच्चे सुखदायक ही होंगे।।
होगा युग निर्माण, रुके युद्धों की विभीषिका
बदलेगी, निश्चय ही यह दुनिया बदलेगी।

होगी तंद्रा दूर सगर की संतानों की,
पाकर गंगाजल, यह दुनिया बदलेगी।
बदलेगी, निश्चय ही यह दुनिया बदलेगी।।

आग जल रही है

✍ *नितिन शंकर सिंह*

अष्टम् 'क'

इस्लामिक आतंकवाद से दुनिया के तमाम देश पीड़ित है। भारत बीस वर्षों से जेहादियों से जूझ रहा है। गृहमंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार अकेले जम्मू कश्मीर में ही आज तक साठ हजार हिन्दुओं का कत्ल हो चुका है। इस माहौल से बाल कवि आहत है। *— संपादक*

हर तरफ मचा है, जोर–शोर, आतंकवाद ने घेरा है।
सारी दुनिया को लिए साथ, क्यों फैला यहीं अंधेरा है ?
यह हिन्दुस्तान हमारा है, हम प्यारे बेटे हैं उसके।
लेकिन यह क्या आघात हुआ, सारे रिश्ते टूटे उसके।।
पर अब भी आग न शान्त हुई, भारत माता को खंडित कर।
फिर से जेहादी छोड़ दिये कश्मीर को तोपों पर रखकर।।
सम्यक युद्ध में हार गये, तो आतंकवाद का लिया सहारा।
जाने कितने मासूमों को, आतंकवादियों ने मारा।।
ममता की गोद हुई, सूनी, सिंदूरों को है मिटा दिया।
फिर ढहा दिये मेहनत के घर आशाओं पर पानी फेर दिया।।
मेंहदी भी सूखी नहीं जहाँ सिंदूर खून में बदल गया।
केसर के बागों में देखो लाशों का सागर मचल गया।।
यह क्या आतंकवाद ने दिखलाया जिससे दुनिया थर्रायी है।
नभ पर काला बादल छाया सारी पृथ्वी डगमगाई है।।
मैं तो कुछ और लिखूँ लेकिन आँखे नम हो जाती हैं।
हाथों में कम्पन होने से, लेखनी स्वतः गिर जाती है।।

प्यार का व्यापार मानवता नहीं है
शत्रु का संहार दानवता नहीं है
ओ नियति को कोसने वाले अकर्मठ
निराशा के अश्रु भावुकता नहीं हैं।

दहेज प्रथा

✍ श्रीकान्त वशिष्ठ
एकादश 'क

दहेज भारतीय समाज की बुराई है। दहेज के लिये बहुएँ जलाई जाती हैं, यह अभिशाप है। बहुएँ बेटियों की तरह रखी जानी चाहिये। तुलसीदास जी ने कहा था–'वधू लरिकिनी घर पर आयीं–राखहु नयन पलक की नायीं'
– *संपादक*

जब से हमारे बीच दहेज रूपी दानव आया,
जिंदगी की खौफनाक सौगात लाया।
आदमी बँध चुका है लोभ के बंधन में,
बस पैसा ही सब कुछ हो गया जीवन में ।।१।।
कभी ममता की प्रतीक थी नारी,
अब दहेज के खौफ से सहमी बेचारी।
दहेज–दानव ने कर दिया भयभीत उसको,
अब कहाँ वो आदर मिल रहा है उसको ।।२।।
कहने को तो दहेज विरासत है इतिहास की,
नारी केवल पहल है पैसे पर विश्वास की।
कभी दहेज में भी नारी का झलकता था सम्मान,
अब दहेज रूपी दानव देता है मौत का फरमान ।।३।।
क्या नारी किसी की क्रीत दासी है
जो आजीवन यातनाएँ सहने को अभिशप्त है।
हद है इस क्रूरता की, समाज की मूर्खता की,
क्या आवश्यकता नहीं है, दहेज उन्मूलन की क्रांति की ।।४।।
दहेज इस समाज में बीमारी के समान है,
जो निरन्तर सुरसा की जिह्वा के समान है।
इस दानव का ऐतिहासिक वध करना ही होगा,
नहीं तो हर बेटी के बाप को जीवन भर रोना होगा।।५।।

बापू से कह देना ...

✍अनुज कुमार मिश्र
नवम्

अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति दिलाने में महात्मा गाँधी का अभूतपूर्व योगदान था। वे मुक्ति यज्ञ के अग्रदूत थे, परंतु आज उनके नाम का कुछ लोग व्यापार कर रहे हैं। ऐसे ही लोगों पर किशोर कवि का कटाक्ष।
– संपादक

मेरे बापू से कह देना, देश तुम्हारा रोता है,
तुम्हारी कल्पनाओं का, यहाँ पर खून होता है,
तुम्हारे त्याग को सबको, नहीं एहसास होता है।
मेरे बापू .... ।

सिसक कर रो रही देखो, अहिंसा और आजादी,
अनीति नाचती देखो, देश को सौभाग्य सोता है।
मेरे बापू ....

पहन कर वस्त्र खादी के, बने बहुरूपिये नेता,
अहिंसा, न्याय, नीति का, यहाँ हर आसरा लेता,
तुम्हारे नाम का बापू, यहाँ व्यापार होता है,
तुम्हारे सत्य–व्रत का, यहाँ उपहास होता है।
मेरे बापू से .... ।

हरिगीतिका

बंधुत्व की या प्रेम की यदि बात हो संसार में
भाई भरत सा क्या भला मिल पायेगा युग चार में
तपते रहे, भू पर शयन, आँसुओं की धार में
घुलते रहे, रमते रहे थे राम जी के प्यार में।

रहे सुरक्षित हिन्दुस्तान

✍ सजल गोयल
नवम

परवेज मुशर्रफ धोखेबाजी का दूसरा नाम है। आज वार्ता की सदा उठाने वाला ही कारगिल का खलनायक है। सरौता काटने के काम आता है, सजल ने अपनी कविता में कहा है कि परवेज के दिल में सरौता छिपा है। — संपादक

पापी पाकिस्तान का हमने अब ललकारा है।
माँ चंडी का क्रोध, हाथ में चमचम तेज दुधारा है।
माँ का मस्तक माँग रहा तू, जो सुंदर कश्मीर है।
इससे माँ उद्विग्न बहुत है उसके दिल में पीर है।

दादाओं ने दिया सहारा
पा न सका कश्मीर बेचारा।
करने हैं हमको बलिदान,
रहे सुरक्षित हिन्दुस्तान।
चाह कर भी कारगिल वह ले न पायेगा।
वक्ष पर गोली पड़ेगी भाग जायेगा।

युद्ध हम हर बार जीते
मेज पर फिर हुए रीते
शांति, संयम और समझौता,
परवेज के दिल में, छिपा है सरौता
कहने से अब कर जाना ही बेहतर होगा,
इस जीने से तो मर जाना ही बेहतर होगा।

स्वर्ण मृगों ने सदा छला है रामों को, पंचवटी की कथा जगत में जाहिर है
लक्ष्मण रेखाओं का कोई मूल्य नहीं है, हर रावण अपहरण कला में माहिर है
पंचवटी की हर कुटिया सूनी सूनी, सोने की लंका पर चढ़ी जवानी है
रावण के रथ की गति रोके रुकी नहीं, हर जटायु होकर निराश भूदानी है।

मन में प्रखर ताप की ज्वाला

✍ आलोक चतुर्वेदी

द्वादश

कश्मीर दुनिया का स्वर्ग है, भारत माता का मुकुट है लेकिन उस पर पाकिस्तान–पोषित उग्रवाद का पंजा है। नियंत्रण रेखा के उस पार विध्वंस के शिविरों में किशोरों के दिलों में जेहाद का जुनून भरा जा रहा है।

– संपादक

केसर के बागों को मैंने गंध बदलते देखा है
अंधेरों को ऊषा की किरणों पर चढ़ते देखा है।
सिंह वाहिनी के किरीट के श्वेत शुद्ध हिमवान मुकुट पर
राष्ट्र–देव को आहत करने दुश्मन को बढ़ते देखा है।
केसर के .... ।।

कहीं पुष्प थे नीर–क्षीर था और विवेकी जनमानस था
नव प्रभात था नंदन वन में नीर भरा सुंदर पावस था
आजादी के बाद हमारी उम्मीदें सब तार–तार है।
प्रेम वत्सला भारत माँ को बिलख–बिलख रोते देखा है
केसर के .... ।।

स्वस्ति भाव की भाषा थी नगराज हिमालय के कानन में,
भाव नयन भी विषपावक थे गोरीसत्ता के शासन में।
भावों के कोमल अन्तर में प्रखर ताप की भी ज्वाला है,
जिस ज्वाला से शक–हूणों को हमने थर्राते देखा है
केसर के .... ।।

जहाँ हाथ में कलम चाहिये, वहाँ थमा दी ए.के. छप्पन।
जेहादी नारो में जिनके बारूदों में छिपता बचपन।
जहाँ आज बेबस मानवता नंग नाच दानवता का है
वहीं मदरसों में उन्मादी 'तकरीर' सुनाते देखा है।
केसर के .... ।।

व्योम फलक पर उड़ने से क्यों आज परिदें कतराते है ?
संगीनों का सम्बल ले क्यों आज दरिदें इतराते है ?
सूरज की लाली हो या फिर दीपक का सायास उजाला
इन सब पर अँधियारा मैंने घुमड़–घुमड़ उड़ते देखा है
केसर के .... ।।

स्वतंत्रता

✍ *प्रकाश चन्द्र त्रिवेदी*
एकादश 'क'

देश की आजादी के पचास वर्ष से ऊपर हो गए लेकिन स्वतंत्रता अपने अर्थों में सार्थकता को नहीं प्राप्त हो सकी है। छल और प्रवंचना शिखरस्थ है, सदाकत अपदस्थ है। – *संपादक*

सिसक रही बूढ़ी स्वतन्त्रता अब मानव लाचार हो गया
धू–धू ज्वाला धधक रही है कर्मठ अब बेजार हो गया
चन्दन के सब के सब उपवन
अब विषधर के नाम हो गये
द्रोपदियाँ असहाय सभा में
धन के श्याम गुलाम हो गये
छल–प्रपंच, अन्याय–अनिष्ठ जीवन का आधार हो गया
सिसक रही ....

कैसे बढ़े सत्य की नौका
अवरोधक असत्य की धारा
तिमिर भँवर से दूर बहुत है
भाव–सिंधु का ज्योति किनारा
हर–प्रपंच अन्याय साथ ले, कूड़ा भी उस पार हो गया।
सिसक रही ....

धर्म जाति के फुटपाथों पर
बारूदों के जाल बिछाये
समय खड़ा है चौराहे पर
हाथ उठाये हाथ गिराये
भौतिकता के अँधेरे में सदाचार बेजार हो गया।
सिसक रही ....

तुमने लिया शेर से पंगा

✍ आनन्द शाक्य
षष्ठ 'ख'

देश बारुद के ढेर पर खड़ा है। जगह–जगह दंगे हो रहे हैं। सिमी जैसे संगठनों ने देश में अशांति का बवंडर खड़ा कर दिया है। गुजरात में साबरमती की होली जलाई गयी, इन परिस्थितियों पर बाल–कवि कुछ कहना चाहता है : – *संपादक*

करा लो दंगे करो लो फसाद,
तुम हो गुण्डे, तुम हो बदमाश।
तुम्हारे अन्दर जेहादी जुनून,
बहाते हो तुम सज्जनों का खून।।

करा लो दंगे . . .
तेरे अन्दर मजहब की ज्वाला,
भारत का मुँह कर डाला काला।
तुमने किया गुजरात में दंगा,
तुमने लिया शेर से पंगा।।

जब तुमने मनाई ईद बकरीद,
हमारे जवान हुए उसमें शहीद।
जब हमने मनाया दशहरा का मेला,
उसमें भी किया तुमने झमेला।।

करा लो दंगे . . . . . .
जब तुमने डाली कश्मीर पर नजर,
उस समय थे हम बेखबर।
चुपचाप वहाँ तुमने बस्ती बसाई,
फिर हमारी सेना गुर्राई।।

राजनीति कैकेयी पर जबसे हावी पद लिप्सा की दुष्ट मंथरा दासी है
पराधीनता धनुष भंग करने वाला, जनसाधारण राम विपिन का वासी है
चार साल के बाद आधुनिक भरतों को कुछ दिन को रामों का विरह सताता है
मतपत्रों की चरण पादुका पाने को बेचारा सौ–सौ सौगंध उठाता है।

चाकमा गीत

नसाङ मुय जागान सारी

✍ *अमर ज्योति चाकमा*

षष्ठ 'ख'

अपने विद्यालय में अरुणांचल प्रदेश के दो छात्र छात्रावास में रहकर अध्ययन कर रहे हैं। यह उन्हीं की भाषा में उनका लोकगीत है और उसका हिन्दी अर्थ। *– सम्पादक*

नेदूङ न साङ जागान सारी
इदू आगंङ मुय जनमान गूरी

ऐत जागानत रोयेदी मनानत गूरी
होयेल पेक्को दगरेर कूक ! कूक !
बिजू पेक्को दगरेर बिजू ! बिजू !
गरबा पेक्को दगरेर गोरबा ऐततोक गोरबा ऐततोक
तूर रीम पूलोर दूप रंगानी
रीबेक पूलोर तूम बस सानी
जेदूङ न साङ मुय जागान सारी
इदू आगंङ मुय जनमान गूरी
ऐ जागानत रोयेदी आमी मनातत गूरी ! गूरी !
संसारत ऐल ऐल भूयेनी देले
सीरो पानी परान जूरेदे
जीवनर सूककानी सुगोत बाजे
जेदङ न सोङ मुय जामान सारी
इदू आगंङ मुय जनमान गूरी
इदू आगंङ मुय जनमान गूरी

चकमा गीत का हिन्दी अर्थ

मैं इस मातृभूमि से जाना नहीं चाहता हूँ।
मैं इस मातृभूमि में ही जीवन भर रहूँगा। इस जगह में हम मन रमा कर रह रहें हैं।
कोयल और अन्य पक्षी कलरव कर रहे हैं। बिहू की चिड़ियाँ बिहू ! बिहू ! कर रही हैं।
चिड़ियाँ कहती है कि हमारे घर पर जब कोई अतिथि आता है तो उसे अच्छी तरह से भोजन कराते हैं।
चमेली के फूल के सफेद रंग और बेला के फूल को सूँघने पर सुगन्ध आती है।
मैं अपनी मातृभूमि से जाना नहीं चाहता हूँ मैं जीवन भर यही रहूँगा।
इस स्थान पर हम मन रमा कर रहते है। संसार में हरे हरे खेत को देखकर कितना सुन्दर लगता है।
हमारे ह्रदय का पानी ठंडा हो जाता है। जीवन का सुख दुख आँखों मे झलक आता है।
मैं इस मातृभूमि से जाना नहीं चाहता हूँ मैं इस मातृभूमि में जीवन भर रहूँगा। मैं इस मातृभूमि में जीवन पर रहूँगा।

अनुभाग – दो

शब्द-चिन्तन

मंदिर आंदोलन साक्षी है कि भारत आज भी ऐतिहासिक चेतना से अनुप्राणित है : सर नायपॉल

✍ मदन मालवीय

भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता सर नायपॉल राष्ट्रवादी विचारों से सरोकार रखते हैं। यहाँ भारत के तीन ख्यातिनाम पत्रकारों द्वारा मंदिर मुद्दे पर नायपॉल के साक्षात्कारों का संग्रहणीय संकलन प्रस्तुत किया है हमारे मदन जी ने।

– संपादक

६ दिसम्बर, १९९२ को अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि स्थल पर बने बाबरी ढाँचे को रामभक्तों ने ध्वस्त कर दिया। सेकुलर कलमचियों ने आसमान सिर पर उठा लिया। कैसे–कैसे प्रलाप सुनने को मिले – हमारी तो गर्दन झुक गई! चेहरे पर कालिख पुत गई! माथे पर कलंक लग गया! तोड़ने वाले हिन्दू उग्रवादी और साम्प्रदायिक हैं! गुंडे व अनुशासनहीन हैं! मगर हजार वर्षों में कितने मंदिर टूटे? आजादी के बाद ही कितने मंदिर तोड़ें व जलाये गये? परन्तु भारत में सेकुलरिज्म की ऐसी महिमा व्याप्त हो गयी है जिसके कारण उन पर कोई चर्चा नहीं की गयी! हाय–तौबा नहीं! सफाई नहीं! माफी नहीं! किसी की गर्दन नीची नहीं! किसी के चेहरे पर कालिख नहीं पुती!

मन्दिर निर्माण के फैसले को देखते हुए एक बार फिर इन कलमचियों के पेट में दर्द शुरू हो गया है। श्री रामजन्म भूमि आन्दोलन की आत्मा की सही पहचान की, इस वर्ष साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता सर विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल ने। सर नायपॉल भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक हैं जो इग्लैण्ड में बसे हैं। उनकी कठोर निष्पक्षता, तीखी शोधात्मक दृष्टि और चिन्तन की निर्मलता विश्वविख्यात है। अयोध्या आन्दोलन के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न समय पर तीन विभिन्न भारतीय पत्रकारों ने उनका साक्षात्कार किया था। सर विद्याधर के विचार उन्हीं की भाषा में प्रस्तुत करना उचित होगा।

दिलीप पटगाँवकर द्वारा साक्षात्कार (द टाइम्स ऑफ इण्डिया, १८ जुलाई, १९९३)

दिलीप – अयोध्या प्रकरण पर आपकी क्या प्रतिक्रिया रही ?

सर नायपॉल – इतनी बुरी भी नहीं थी। जो लोग कह रहे हैं कि वहाँ राम मंदिर था ही नहीं वे इस आन्दोलन के मूल से अनभिज्ञ हैं। आपको यह स्वीकार करना होगा कि बाबर के मन में अपने जीते हुए देश के लिए केवल हिकारत थी और मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाना उसी हिकारत का मूर्त रूप था।

टर्की में उन लोगों ने सेण्टा सोफिया के चर्च को मस्जिद में परिणित किया था। निकोशिया में तो कितने ही चर्चों को तोड़कर मस्जिदें बनायी गयी थीं। स्पेन के वासियों ने कितनी ही शताब्दियाँ अपनी स्वतंत्रता वापिस हासिल करने के लिए लगाईं थी। तो ये सारी हरकतें बहुत काल से होती आईं हैं। अयोध्या में हिन्दुओं के परम श्रद्धा के स्थान पर बने मन्दिर को तोड़कर केवल अपमान करने की नीयत से ही मस्जिद बनाई गई थी। वह कृत्य राम के चरित्र की दो–तीन हजार वर्ष प्राचीन छवि पर सोचा–समझा प्रहार था।

दिलीप – जो लोग गुम्बद पर चढ़े थे वे दाढ़ी वाले, गेरुआ वस्त्रधारी, माथे पर तिलक एवं धुनि रमाए लोग नहीं थे। वे युवा, जीन्स और टी–शर्ट पहने लोग थे।

सर नायपॉल – जो लोग गुम्बद पर चढ़े थे उनके सीने में उबलते लावा को समझने की जरूरत है। जीन्स और टी–शर्ट केवल सतही वस्तुएँ हैं। उनके अन्तस का आक्रोश ही वास्तविकता है। उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। उस वेग को संयमित करना होगा। भारत में अब तक विचार ऊपर से थोपे जाते रहे हैं। कुछ काल पूर्व मैंने भारत की दशा वर्णित की थी – फटेहाल, रौंदा गया और चकनाचूर। उन्नीसवीं सदी के विचारकों द्वारा बंगाल से नवचेतना की लहर उठी थी। वह विचार–शृंखला ऊपर से चली थी। आज आन्दोलन की शक्ति नीचे से उठी है।

दिलीप – हाल में मैंने अपने सहयोगी, कार्टूनिस्ट आर० के० लक्ष्मण के साथ महाराष्ट्र में हजारों मील का दौरा किया। कितने ही स्थानों पर मूर्तियों की नाकें और देवियों के स्तन काटकर फेंके हुए पाये थे, जो किसी आक्रान्ता की विजय के प्रतीक थे। हिन्दुत्ववादी आज उन अपमानित मूर्तियों के सहारे भावनाओं को उत्तेजित कर रहे हैं। समस्या यह है कि इन भड़की हुई भावनाओं को छलकने और नये तनावों को जन्म देने से कैसे रोका जाएगा ?

सर नायपॉल – मुझे एहसास है। पर उन्हें गाली देने अथवा यूरोप से प्राप्त उस फैशनेबुल शब्द 'फासिस्ट' का लेबिल लगाने से काम नहीं चलेगा। भारत में एक विराट ऐतिहासिक प्रक्रिया करवटें ले रही है। दानिशमन्दों को इसे समझने की जरूरत है जिससे इसका नेतृत्व कट्टर पंथियों के हाथों में न रहे। वास्तव में उन्हें इस शक्ति का प्रयोग भारतवासियों की मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिए उपयोग करना चाहिए।

दिलीप – सोवियत यूनियन का स्खलन और उससे जनित कई इस्लामिक देशों का सृजन, सलमान रुश्दी का प्रसंग, उसी प्रकार के उदारवादी मुसलमानों का इस्लामी कट्टरवादियों द्वारा उत्पीड़न, ये सारी बातें ऐसी हो रही हैं जिसके कारण कुछ शक्तियों ने निष्कर्ष निकाला कि एक बँटा हुआ हिन्दू समाज इस्लामिक कट्टरवाद का जवाब नहीं बन पायेगा ?

सर नायपॉल – मैं इसे कुछ इस तरह नहीं देखता। आपने जितनी घटनाओं का जिक्र किया वे सब सतही है। भारत में जो हो रहा है वह एक ऐतिहासिक चेतना का संचार है। गांधी ने मजहब का प्रयोग आजादी दिलाने के लिए किया। जो स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े वे कुछ नाम कर जायेंगे इसलिए जुड़े। आज भारतवासी अपने इतिहास की चेतना से अनुप्राणित हैं। रोमिला थापर की इतिहास की किताब मार्क्सवादी मानसिकता का इतिहास है जो समझाना चाहतीं हैं कि आक्रान्ताओं के आक्रमणों के पीछे कोई दिव्य दैवी योजना थी। इस इतिहास की सही पहचान करनी है तो पहचानना होगा कि आक्रान्ता अपने आक्रमणों का आंकलन अपनी निगाह में क्या करते थे। वे विजयी होते जाते थे, गुलाम बनाते जाते थे और वे एक ऐसे देश में थे जिनके लोग समझ ही नहीं पा रहे थे कि ये सब क्या और क्यों हो रहा है।

केवल अब लोगों को चेतना आ रही है कि भारत बुरी तरह रौंदा गया है। आक्रान्ताओं की प्रकृति जिस प्रकार की थी और हिन्दू समाज के संस्कार जैसे थे उसके कारण उन्हें वास्तविकता का बोध तब नहीं हो पाया।

भारत में आज एक प्रचण्ड सृजन की बेला है। जो भारतीय बुद्धिजीवी अपने उदारवाद में व्यस्त हैं वे नहीं समझ पा रहे कि क्या हो रहा है। विशेषतया वे बुद्धिजीवी जो अमेरिका में बसे हुए हैं। परन्तु प्रत्येक भारतीय पहचान रहा है कि क्या हो रहा है। वह अन्तःकरण की गहराइयों में एक व्यापक समर्थन का अनुभव कर रहा है, भले ही उस समर्थन की व्यापकता से भयभीत ही क्यों न हो रहा हो।

एक विचित्र प्रकार का उदारवाद तो सब देख ही रहे हैं। यह उदारवाद एक प्रकार के कट्टरवाद को संसार के लिए स्वीकार्य मानता है। वह कट्टरवाद जिससे वे स्वयं भयाक्रांत हैं – इस्लामी कट्टरवाद। इसकी मूल शक्ति अरब धन शक्ति है। बुद्धिजीवी इसमें कुछ एतराज के योग्य नहीं मानते। मैं हिन्दू प्रतिक्रिया को एक कट्टरवाद के प्रत्युत्तर में दूसरे कट्टरवाद को नहीं देख पा रहा। इस प्रतिक्रिया का रूप कहीं अधिक व्यापक है.... मुस्लिम कट्टरवाद मौलिक रूप से ऋणात्मक है, एक प्रकार की बचाव प्रक्रिया उस संसार से है जिसका भाग बनने की

भी उसमें उत्कट इच्छा है। एक प्रकार से संसार से बचाव का आशाहीन अन्तिम प्रयास।

पर हिन्दुओं में जो अपने इतिहास की चेतना जगी है वह नई बात है। कुछ भारतवासी मिश्रित संस्कृति की बात करते हैं। ऐसी बात सदा हारने वाले लोग किया करते हैं। व्यवहार में संस्कृतियों का मिश्रित होना नितान्त सम्भव है परन्तु उस मिश्रित संस्कृति को ही असली संस्कृति वही मानता है जिसका इतना उत्पीड़न हुआ हो कि वह अपने मूल को भूल चुका हो।

राहुल सिंह द्वारा साक्षात्कार (द टाइम्स ऑफ इण्डिया, २३ जनवरी, १९९८)

राहुल – आपने टाइम्स ऑफ इण्डिया को एक साक्षात्कार दिया था जिसे भाजपा ने बाबरी ढाँचा ध्वस्त करने का समर्थन माना है। क्या इसे आप गलतफहमी मानेंगे ?

सर नायपॉल – मुझे बोध है कि तब मैंने जो कुछ कहा था उसका भिन्न अर्थ निकाला जा सकता है। मैंने तो इतिहास का जिक्र किया था। मैंने तो इतिहास की उस प्रक्रिया की बात की थी जो होनी ही थी। मेरे विचार में १००० ए.डी. से प्रारम्भ हुई मुस्लिम आक्रान्ता के आक्रमण की एक घटना को भारत कई सौ साल तक जीता चला गया है। उस घटना से सदियों से चली आ रही एक पूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक थाती आहत हुई थी। मेरे अनुमान में भारतवासी उस आघात को भुला नहीं पाये हैं। वस्तुतः उस सबने ऐसी गहरी पीड़ा पहुँचाई कि उन्हें यह भी होश नहीं है कि वास्तव में सब कुछ हुआ क्या था ? मेरा विचार है कि यह भाजपा का आह्वान और वह मस्जिद का मामला इतिहास को एक नई दृष्टि से देखने का प्रयत्न है। यह बहक सकता है और इसका राजनैतिक लाभ उठाने को गलत भी माना जा सकता है। परन्तु फिर भी यह इतिहास की प्रक्रिया का अंश ही है और उसे फासिस्ट कहकर गाली देने वालों को सोचना चाहिए कि आखिर उस आन्दोलन की प्रतिध्वनि करोड़ों हृदयों में इतने व्यापक स्तर पर क्यों गूँज रही है।

सदानन्द मेनन द्वारा सर विद्यासागर नायपॉल का साक्षात्कार (दि० ५ जुलाई, १९९८)

मेनन – अबकी आगमन पर आपने जो विचार प्रकट किए उससे संकेत मिल रहा है मानो उदीयमान संकुचित हिन्दू राजनीतिक व्यवस्था की संगठित शक्ति देखकर आप ...... हो सकता है कि मेरा शब्द चयन गलत हो .... अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। आप अपनी इस प्रतिक्रिया को कैसे निभा पायेंगे ?

सर नायपॉल – नहीं ! मैंने ऐसी कोई प्रसन्नता वगैरह तो नहीं प्रकट की। मैंने तो केवल इतिहास की बात की थी। मैंने उस आन्दोलन की बात कही थी। मैंने ये तो नहीं कहा कि मैं यहाँ हिन्दू धार्मिक शासन चाहता हूँ। मैंने जो कहा था वह यह कि इस्लाम भारत में व्यापक रूप से विद्यमान है। उसका कारण रहा है और हम उन कारणों से आँख नहीं मूँद सकते। आक्रान्ताओं के आक्रमण बहुत नीचे दक्षिण तक हुए थे – मैसूर तक।

जब आप दसवीं सदी या उससे भी प्राचीन अनगिनत मन्दिरों को देखते हैं जिन्हें बेदर्दी से विध्वंस और विकृत किया गया है तो उससे साफ प्रकट होता है कि वह कोई खेल नहीं खेला गया था। एक अत्यन्त भयंकर काल बीता था। मैं महसूस करता हूँ कि उन आक्रमणकारियों ने अपने में पूरी तरह पूर्ण और संतुष्ट, संसार से अछूती एक पूर्ण संस्कृति को प्राणलेवा आघातों से आहत किया था। और मैं चाहूँगा कि लोग उस प्राचीन संस्कृति के प्रति गहरी श्रद्धा से देखें, उसे समझने की कोशिश करें, न कि उस संस्कृति के खण्डहरों में जीवन बिताएं। अतीत में एक पूरा संसार ध्वस्त हुआ था। प्राचीन हिन्दू भारत को विध्वंस करके रौंदा गया था।

मेनन – भारत के इतिहास में बहुत से परिवर्तन भी हुए और बहुत सी घटनायें एक के ऊपर एक घटित होती गईं। पर क्या वह घटनाक्रम आज एक ऐतिहासिक प्रतिशोध लेने को न्यायोचित ठहराता है ? क्या ऐसा घटनाक्रम ऐसे प्रतिशोध को अवश्यंभावी बनाता है ? आप अपने मन के दर्पण में कैसे घटनाचक्रों को घटित होते देख रहे हैं ?

सर नायपॉल – नहीं ! मैं ऐसा नहीं सोचता। ऐसा घटनाक्रम होना अवश्यंभावी नहीं है। यदि लोग इतिहास

को स्वीकार कर लें तो पराजय और गहरी लज्जा की भावनाओं को बलात् दबाया नहीं जाएगा और तब कालान्तर में इतने भयावह हिंसा के विस्फोट नहीं हो सकेंगे। जैसे–जैसे लोग सुरक्षित अनुभव करेंगे और जैसे–जैसे मध्यम और निम्न मध्य वर्ग का आकार बढ़ेगा वैसे–वैसे वे लोग उन भावनाओं के घेरे में आते चले जायेंगे। और यह वो वर्ग है जिसके अन्तस् की गहराइयों में उस महान पराजय की स्मृतियों से जनित भावनायें उन्हें आन्दोलित कर रहीं हैं। जो गाइड बेलूर और हेलेबिड के मन्दिरों को दिखाते हैं वे हर समय उसी काल की घटनाओं को ही तो दोहराते रहते हैं। आज से २० वर्ष पहले जब मैं वहाँ गया था तब वे गाइड ऐसी भाषा नहीं बोला करते थे। अतः जैसे–जैसे नई पीढ़ी आती जाती है वह अपने इतिहास को चुपचाप स्वीकार करने की जगह अनेक प्रश्नों के उत्तर चाहती है। मेरा मत है कि हमें उनकी वेदना, उनके आक्रोश को संवेदना से समझना चाहिए। उनका यह वेदनामय आक्रोश कदापि निन्दनीय नहीं है। वे लोग अपने को समझने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी अवहेलना नहीं होनी चाहिए। उन्हें गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। उनसे वार्ता करनी चाहिए।

मेनन – पर क्या आप नहीं मानते कि इससे यह प्रवृत्ति और उग्र रूप धारण करेगी – धर्म और इतिहास की मनमाने ढंग से व्याख्या करके उसे सड़क छाप बनाने की प्रवृत्ति ?

सर नायपॉल – मेरा मत है कि यह प्रवृत्ति तब तक बढ़ती जायेगी जब तक आप उन्हें सतत् गाली से ही नवाजते जायेंगे। हाँ ! यदि आप हिंसा भड़काना चाहते हैं तो हिंसा अवश्य भड़केगी। पर यदि उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया तो वे शान्त भी हो सकते हैं।

सर विद्याधर सूरज प्रसाद नायपॉल ने हिन्दुत्व के सम्बन्ध में जिस निर्भीकता एवं बेबाकी से अपने विचार व्यक्त किये हैं वे तथाकथित सेकुलर लेखकों, पत्रकारों एवं राजनेताओं के मुँह पर करारा तमाचा है। मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति एवं छद्म धर्मनिरपेक्षता के पोषक ये सेकुलर तालिबान भारत की आत्मा के साथ सतत् अनाचार करते चले आ रहे हैं। आज सर नायपॉल यदि भारतीय नागरिक के रूप में ऐसे सत्य विचार व्यक्त करने का साहस दिखाते तो उन्हें कोई सरकारी सम्मान मिलना तो दूर की बात है, इन सेकुलर कलमचियों की काँव–काँव के सामने वे किसी कोने में पड़े गुमनाम जिन्दगी जी रहे होते। ●

पराभक्ति

भगवान श्रीकृष्ण में परम प्रेम का होना ही भक्ति है। यों तो भक्ति के अवान्तर भेद बहुत से हैं परन्तु साधारणतः भक्ति के दो भेद हैं–एक साधन भक्ति और दूसरी साध्य भक्ति। साधन भक्ति के द्वारा अन्तःकरण शुद्ध होता है, उसके शुद्ध होने पर आत्मतत्व का, भगवत् तत्व का बोध होता है और उसके बाद पराभक्ति अथवा साध्य भक्ति की प्राप्ति होती है। पराभक्ति से रहित जो ज्ञान है, वह परम ज्ञान नहीं है केवल साधन ज्ञान है, परोक्ष ज्ञान है। पराभक्ति और परमज्ञान एक ही चीजें हैं इनमें कोई भेद नहीं है। परमज्ञान अथवा पराभक्ति का प्राप्त होना ही जीवन की सफलता है। जब तक यह प्राप्त नहीं होता है जीव भटकता ही रहता है। यह किस प्रकार प्राप्त होते हैं इस प्रश्न का उत्तर उद्धव का जीवन है। इनके जीवन में क्रमश साधनभक्ति, साधनज्ञान, पराभक्ति और परमज्ञान का उदय हुआ है।

सनातन धर्म और छात्र धर्म

✍ डॉ० विश्वम्भर नाथ द्विवेदी

"धर्म" शब्द का अर्थ है कि एक ऐसी स्वयं उद्भूत ऊर्जा जो किसी भी जड़ या चेतन पदार्थ के साथ जुड़कर न केवल स्वयं को बनाये रखती है, अपितु उस पदार्थ की भी अपनी एक अलग पहचान बनाए रखती है, जिस पदार्थ के साथ वह स्वयं जुड़ी रहती है। इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि जब तक यह किसी पदार्थ विशेष से जुड़ी रहती है तब तक यह निरन्तर उस पदार्थ में उस शक्ति विशेष को चार्ज या जेनरेट करती रहती है, जिससे उसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान या विशिष्ट उपयोगिता समाज में स्वीकार की जाती है।

उदाहरण के लिए टेलीफोन के कार्डलेस यन्त्र को ले लीजिए। यह यन्त्र भी टेलीफोन का ही काम करता है, परन्तु तभी तक करता है जब तक वह या तो विद्युत से आवश्यक पावर प्राप्त कर रहा हो, या फिर विद्युत से उसने अपने भीतर आवश्यक शक्ति अथवा ऊर्जा को संचित कर लिया हो। ऐसी अवस्था में वह विद्युत–शक्ति–पूरक यन्त्र (इलेक्ट्रिकल पावर सप्लायर इन्स्ट्रुमेण्ट) से जुडकर भी और उससे – काफी देर तक अलग रहकर भी – घर के बाहर भी और भीतर भी अपने स्थान से लगभग सौ–पचास फीट दूर रहकर भी दूरभाष का काम पूरा करता रहता है। इस उदाहरण में कार्डलेस तो जड़ पदार्थ है और उस पर बातचीत करने वाला दोनों ओर का व्यक्ति चेतन होता है, परन्तु इन दोनों ही जड़ व चेतन पदार्थों की सार्थकता एवं सफलता केवल इसलिए है कि उन दोनों जड़चेतन पदार्थों के मध्यस्थता करने वाला वह वैद्युत–शक्ति (इलेक्ट्रिकल पावर) ही है, जिसे हम 'धर्म' कह सकते हैं।

यह धर्म एक ओर अपने आपको भी धारण करता है अर्थात् अदृश्य एवं गुप्त रहकर भी अपनी पहचान बनाए है और दूसरी ओर जड़ कार्डलेस और चेतन दूरभाषी पुरुषों की भी सार्थकता एवम् उपयोगिता को सिद्ध कर रहा है। यदि यह गुप्त पावर रूपी धर्म न होता तो कार्डलेस और उस पर बात करने वाले पुरुष – दोनों ही असफल एवम् – अनुपयोगी सिद्ध होते।

इसका अर्थ यही है कि सामाजिक और सांसारिक जीवन में जड़ ओर चेतन पदार्थों की व्यावहारिक उपयोगिता (प्रैक्टिकल यूटिलिटी) को सिद्ध करने वाला दोनों के संयोग से स्वतः – उद्भूत (सेल्फ जेनरेटेड) जो शक्ति किंवा व्यावहारिक क्षमता है उसी को 'धर्म' कहते हैं। अब यदि हम 'धर्म' की कोई जानी पहचानी परिभाषा करना चाहें तो निःसंकोच कह सकते हैं कि धर्म वह तत्व है जो स्वयं सिद्ध है, स्वतः उद्भूत है, स्वयं को धारण करने वाला होने से स्वयंधृत है, जो अपने सम्पर्क में आए सभी जड़ चेतन पदार्थों को भी धारण करता है अर्थात् उनकी अपनी उपयोगिता को जीवित रखता है – बरकरार रखता है और कुल मिलाकर सम्पूर्ण सृष्टि चक्र की समस्त गतिविधियों का गुप्त – सूत्रधार भी वह धर्म ही होता है। तभी तो कहते हैं–

"धर्मेण धार्यते पृथ्वी धर्मो धारयति प्रजाः।
धर्मेण धरते लोकः धर्मो रक्षति रक्षितः।।"

यहाँ "धर्मो रक्षति रक्षितः" का सन्देशात्मक अर्थ यही है कि जो प्राणी अपने आप में अपने आचरण से धर्म की पहचान को बनाए रखता है तो वह धर्म भी अपनी ऊर्जा से उस प्राणी अथवा पदार्थ की अपनी विशिष्ट पहचान को बरकरार रखता है। धर्म से शून्य हो जाने पर किसी भी जड़ व चेतन पदार्थ की सत्ता तो रहती है लेकिन संसार या समाज में उसकी अपनी जो विशिष्ट प्रकार की पहचान होती है – वह समाप्त हो जाती है। सूर्य की अपनी विशिष्ट पहचान उसके प्रकाश रूपी धर्म से है। प्रकाश शून्य हो जाने पर वह एक निर्जीव पार्थिव पिण्ड ही रह जाएगा सूर्य नहीं।

निष्कर्ष यह है कि जड़चेतन पदार्थों के संयोग से उनमें जो संसार के अनुकूल, समाज के लिए उपयोगी एक खास प्रकार की व्यावहारिक–चेतना जागृत होती है – स्वतः स्फूर्त होती है– अथवा सामाजिक सभ्यता व संस्कृति से परम्परया प्रकाशित होती है – उसे 'धर्म' कहते हैं।

यही 'धर्म' जब विश्व–बन्धुत्व अथवा 'वसुधैव कुटुम्बकम्'' जैसी मान्यताओं और सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्'' जैसी सैकड़ों सदाकाङ्क्षाओं के सभी मानकों को पूरा करने वाला बन जाता है – तब वह ''सनातन धर्म'' बन जाता है। यह सनातन धर्म भले ही धृतिः क्षमा आदि दस लक्षणों वाला हो अथवा श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार तीस लक्षणों वाला हो – वह सब सनातन धर्म ही होता है। यह अविनाशी होने से सनातन, सब देशों में एक समान होने से सार्वदेशिक, सब समयों में समान होने से सार्वकालिक, सभी भूमिखण्डों में एक समान होने सार्वभौम तथा सभी जनों (मनुष्यों) में एक जैसा – हितकारी होने से सार्वजननि कहलाता है।

इसी सनातन धर्म को कोई जाति विशेष, वर्ग विशेष अथवा दृष्टिकोण विशेष, जब अपनी पहचान को, अपनी मान्यता को, अपने कट्टरपन को अपनी रहनी, करनी और कहनी को सनातन धर्म से अधिक महत्व देने लगता है, तब यही सनातन धर्म मत, पन्थ, सम्प्रदाय, अखाड़ा तथा उपासना मार्ग आदि उपनामों से पुकारा जाने लगता है। वस्तुतः यदि इन सभी उपनामों के अभिप्राय का ईमानदारी से पालन किया जाय तो ये सबके सब सनातन धर्म ही है। इसके अतिरिक्त अन्य सब केवल उपासना पद्धतियाँ ही हैं, धर्म नहीं।

इसी सनातन धर्म को जब हम अपनी सुविधा एवम् अवस्था के अनुसार जाति वर्ण, देश, काल, परिवार, समाज, व्यक्ति, राष्ट्र अथवा लोक आदि के अनुरूप भिन्न भिन्न सन्दर्भों में अलग–अलग देखने का प्रयास करते हैं, तब वह अपने समष्टि रूप को ही विभिन्न व्यष्टि रूपों में प्रकट करता दृष्टिगोचर होता है। सनातन धर्म का यह समष्टि व्यष्टि रूप तत्त्वतः एक ही है। यहाँ मात्रा का अन्तर हो सकता है, गुणवत्ता का नहीं। जैसे :– मानवमात्र सब एक हैं, अब यदि देशविशेष या प्रान्त–विशेष के निवासी होने के कारण हम उन्हें बंगाली गुजराती, मराठी पंजाबी, मद्रासी आदि नामों से पुकारते है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वे मनुष्य न होकर अब कुछ और हो गए हैं। वस्तुतः वे सब मनुष्य ही हैं।

छात्र–धर्म :– मानवजाति की एक अवस्था विशेष का नाम छात्र है। इसी को विद्यार्थी कहते हैं, क्योंकि यह विद्या (ज्ञान) प्राप्त करने का इच्छुक होता है। इसी प्रकार जो अपने गुरुजनों, माता पिता व बड़े बूढ़ों के दोषों को छिपाता है और केवल अपने आपमें अनेक गुणों को बढ़ाने का निरन्तर प्रयास करता है, उसे 'छात्र' कहते हैं। इस प्रकार अन्य मनुष्यों की अपेक्षा इस वर्ग की अपनी एक अलग पहचान बन जाती है, **अतः यह मानवों के सामान्य वर्ग** से कुछ अलग एक विशेष वर्ग अर्थात् छात्र वर्ग के रूप में पहचाना जाता है। उसकी इस विशिष्ट पहचान के अन्तर्गत कुछ अन्य लक्षण भी शामिल हैं। जैसे :– पाँच वर्ष से पच्चीस तीस वर्ष तक की अवस्था, सदैव पुस्तकों, पुस्तकालयों और शिक्षा दीक्षा देने वाले सभी स्तर के गुरुजनों की सेवा एवं सम्पर्क में रहना, लगन से विद्या पढ़ना, अपनी–अपनी परीक्षाओं में उत्तम से उत्तम अंक प्राप्त करना, गुरुजनों के द्वारा बताए गए नियम–संयम का पालन करना, समुचित–आहार–विहार, क्रीड़ा, व्यायाम आदि करना। ये और इसी प्रकार के अन्य अनेक लक्षणों से छात्र वर्ग की पहचान होती है। इस मार्ग से हटकर जो कुसंगति के कारण तोड़ फोड़ की राजनीति, प्रपञ्च व गुटबाजी या अन्य बुरी आदतों में फँस जाते है – वे छात्र नहीं रहते, वे महापात्र बन जाते हैं– ऐसा पुराने गुरुजनों का कहना था।

जीवन के प्रथम पच्चीस तीस वर्षों में ही छात्र धर्म काम करता है, इसके बाद तो सामान्यतः गृहस्थ धर्म आ जाता है। छात्र धर्म के मूल में भी सनातन धर्म ही रहता है। वही धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय दमन, चोरी न करना, ईमानदारी आदि जो अनेक सद्‌गुण मानव धर्म या सनातन धर्म के लिए आवश्यक माने गए हैं, वे ही सारे अच्छे गुण व अच्छे आचरण छात्रधर्म के लिए भी आवश्यक है। अतः सनातन धर्म और छात्रधर्म में कोई अन्तर नहीं है। इसका

सीधा अर्थ यही है कि अपने विद्यार्थी जीवन में जब हम सनातन धर्म का पालन करते हैं, तो वही छात्र धर्म कहलाने लगता है। इस प्रक्रिया में धर्म नही बदला केवल उसका पालन करने वाले की पहचान उसके साथ जुड़ जाती है, तो वह सनातन धर्म से छात्र धर्म बन जाता है।

इसी प्रकार राष्ट्र के मूल में छिपा सनातन धर्म राष्ट्रधर्म और गृहस्थ के मूल स्वरूप में छिपा सनातन धर्म गृहस्थ धर्म बन जाता है। इसी प्रकार जातिधर्म, वर्णधर्म, देशधर्म, कालधर्म, परिवार धर्म, व्यक्ति धर्म, लोक धर्म, आपद्धर्म, सम्पद्धर्म आदि जो अनेक शब्द हमारे देश के साहित्य और संस्कृति में प्रयोग किए जाते हैं। उन सबके मूल में सनातन धर्म ही है। आशय यह है कि जैसे मिट्टी से बने सैकड़ो प्रकार के बर्तनों में उपादान कारण तो मिट्टी ही रहती हैं और कुछ नहीं, उसी प्रकार 'धर्म' शब्द से जुड़े प्रत्येक शब्द, प्रत्येक मान्यता अथवा प्रत्येक अवधारणा के मूल में 'सनातन धर्म' अथवा 'मानवधर्म' के अतिरिक्त अन्य कुछ हो ही नहीं सकता। यदि कोई बलपूर्वक उसमें अन्य किसी पदार्थ अथवा मान्यता को जोड़ने का प्रयास करता है, तो उस प्रयास को यही कहा जा सकता हैं कि वह अण्डी के पेड़ में बैंगन लटकाकर और उसे अण्डी बताकर लोगों को भ्रमित कर रहा है। अस्तु :- अपने व्यक्तित्व से लेकर राष्ट्र के और आत्मा के स्वाभिमान की रक्षा पर्यन्त जीवन भर बड़ी सावधानी से सनातन धर्म का पालन करने में ही हमारा और हमारे देश का तथा सम्पूर्ण विश्व का हित है। अतएव श्री वेदव्यास जी महाभारत में लिखते हैं –

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न कश्चिच्द्रण्येति मे।
धर्मादर्थश्चकामश्च स धर्मः ककिं न सेव्यते।।

यहाँ सधर्मः का संकेत सनातन धर्म है।

चमकति चपला न फेरत फिरंगै भट,
इन्द्र को न चाप रूप वैरख–समाज को।
भाये धुरवा न छाए धूरि के पटल मेघ,
गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दराज को।
भौंसिला के डरन डरानी रिपु–रानी, कहैं,
पिय भजौ, देखि उदौ पावस के साज को।
घन की घटा न, गज की घटनि सनाह साजे,
'भूषण' भनत आयो सैन सिवराज को।

महाकवि भूषण वर्षा ऋतु का शिवाजी की सेना के रूप में वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह बिजली नहीं चमक रही है वरन् शिवाजी के योद्धा जो तलवारें घुमा रहे हैं, यह उसी की चमक है। आकाश में जो इन्द्रधनुष है वह इन्द्रधनुष न होकर शिवाजी की सेना की ऊँची ऊँची पताकाएँ हैं। आकाश में जो बादल हैं वे भी बादल न होकर वह धूल है जो शिवाजी की सेना के चलने से उड़कर आकाश पर छा गयी है और बादल होने का भ्रम दे रही है। इसी प्रकार मेघों की गर्जना भी शिवाजी की सेना में अनवरत बजने वाली दुंदुभियों की आवाज है। शत्रुओं की स्त्रियाँ (रानियाँ) शिवाजी से इतनी भयभीत हैं कि वे अपने पतियों से कहती हैं कि हे प्रियतम! भागो! जिसे तुम वर्षा ऋतु का आगमन समझ रहे हो वे काली घटायें न होकर शिवाजी की सेना के सजे हुए हाथियों का समूह है। भूषण कवि कहते हैं कि वर्षा ऋतु के रूप में मानो शिवाजी की सेना ही चली आ रही है।

साहित्य, साहित्यकार और सरकार

✍ दुर्गेश वाजपेयी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रतिस्थापित और हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल के हाथों अभिसिंचित हुआ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग आज भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य संवर्द्धन में सन्नद्ध है। दिसम्बर २००१ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन मुंबई में हुआ जिसमें देश के तमाम ख्यातिनामा लेखकों, प्राध्यापकों ने भाग लिया। इसी सम्मेलन में साहित्य, साहित्यकार और सरकार विषय पर मेरे द्वारा दिया गया वक्तव्य।

विषय को गंभीर भी कह सकते हैं और हास्यापद भी, जहाँ साहित्य और साहित्यकार की बात होती हैं वहाँ सरकार को जोड़ना दोनों को केवल कमतर करके ही आँकना नहीं होगा अपितु उसके प्रति अविश्वास करना भी होगा। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर निराला तक और आज भी कतिपय इस प्रकार के साहित्यकार होंगे जिनकी पहचान इसी सरकारी मानसिकता के कारण शायद हमको नहीं हैं। जो सच्चे अर्थों में साहित्यकार हैं वे न सरकार के भरोसे रहते हैं न ही भयभीत।

महोदय सरकार सरकार होती है उसके पास न तो कालजयी विचार होते हैं और न ही भावनाएँ। सरकार तो परिस्थितियों को भाँपकर परिस्थितियों की सीमाओं में ही शासन–प्रशासन चलाते हुए समाज में अपनी एक पहचान बनाए रहती है। हम साहित्यकार तो भावनाओं में जीते और विचारों में पल्लवित होते हैं। हमारा धन हमारी अंतःसलिला पयस्विनी में है, दुनिया के कोश खजानों में नहीं। अपने अंतरतम को जलाकर दूसरों को प्रकाश देना हमारा धर्म है और साधनों से विहीन रहते हुए भी लक्ष्य तक पहुँचना हमारा विश्वास। जब हमको सरकार से मतलब होने लगता है तब यह विचार करना आवश्यक हो जाता है कि कहीं हम साहित्यकार का लबादा ओढ़े साहित्यकार के नाम को कलंकित तो नहीं कर रहे हैं। आज साहित्य में भी बडी चर्चा होती है परिस्थितियों और सरकारी उपेक्षाओं की और शायद इसी कारण मुंबई की इस मायानगरी में हम परमुखापेक्षी मनोवृत्ति को व्यक्त कर रहे हैं। यह कहा जा सकता हैं कि मैं कोरी कल्पनाओं के वक्तव्य दे रहा हूँ लेकिन यह कल्पना भी साहित्यकार की ही थाती है। हम इसे छोड़कर न साहित्य पढ सकते है न ही सृजनात्मक सोच प्रस्तुत कर सकते हैं।

जब तक हम सरकार की अपेक्षा पर टिके रहेंगे तब तक समाज को भला नहीं तक सकते। यदि हम अपने को साहित्यकार कहते और मानते हैं तो हमारे आदर्श सूर और तुलसी होने चाहिये जिन्होंने अपना इतना आत्मविस्तार कर लिया कि उनका पूरा का पूरा चिंतन ही जनकल्याणकारक और ईश्वरोन्मुख हो गया। *'जासु राजु प्रिय दुखारी, सो नृप अवस नरक अधिकारी'* कहकर तुलसी ने यह प्रमाण दे दिया है कि वे जनहित के सोच से विशुद्ध रूप से अनुप्रमाणित थे। तुलसी की भवगत भक्ति ने उनकी त्यागवृत्ति को इतना बढा दिया था कि राजमुकुट को उन्होंने पादुकाओं पर रखा और तभी वे घर–घर में स्वीकार हुए और पूजे गये। इसलिये यह कहना या सोचना कि सरकार की कृपा के बिना साहित्य मर जायेगा, गलत होगा क्योंकि साहित्य तो लोगों के दिलों में धड़कता है साँस बनकर बहता है।

सङ्गीत का चतुर्मुखी प्रभाव

✍ कुशल द्विवेदी

संगीत का बड़ा महत्व है। ब्रह्म जब विकारग्रस्त होता है तो सृष्टि की रचना करता है। संसृति का मूल स्वर ओंकार है, जिसमें अनुनाद है, जिसमें संगीत है। यदि धातु का कोई बहुत बड़ा टैंकर हो उसमें दबाव के साथ कोई गैस भर दें तो वह चतुर्दिक निकलने को व्यग्र होती है। यदि उस टैंकर में छेनी से कहीं छेद कर दें तो उस छिद्र से बड़े आवेग के साथ गैस बाहर निकलती है, और जो स्वर गूँजता है वह प्राण–प्रवण ओंकार का होता है। — *संपादक*

सङ्गीत केवल एक मनोरंजन का साधन ही नहीं अपितु सङ्गीत वह कला है जो जीवमात्र को सम्मोहित करने की क्षमता रखती है। सङ्गीत को केवल शास्त्रीय मान्यताओं के आधार पर ही श्रेष्ठ नहीं माना गया है अपितु वैज्ञानिक प्रयोगों से भी इसकी श्रेष्ठता सिद्ध हुई है। सङ्गीत से दिव्य अनुभव होते हैं जिसके द्वारा आन्तरिक गुप्त शक्तियों का विकास होता है।

विश्व रचना का मूल स्वर सङ्गीत ही है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "समष्टि जगत का यह छन्द और ताल, व्यष्टि जगत में जीवन के अनेक रूपों में प्रकट हो रहा है। सङ्गीत वस्तुतः एक जीवन धारा है। जहाँ कहीं जड़ता है, निराशा है, हताशा है, वह इस विराट जीवनधारा से विमुख होने का परिणाम है और इसीलिये मूल सृष्टि धारा से अनुकूल चलने वाली सङ्गीत धारा के विमुख है। व्यष्टि में प्रकट होने वाला मोहक सङ्गीत समष्टिगत जीवन प्रवाह के अनुकूल होने के कारण रमणीय है। इसी कारण यह समस्त मानवीय मनोविकारों को नष्ट करता है।"

सङ्गीत की आकर्षण शक्ति से प्रभावित गाँधी जी का कथन था "गायन द्वारा ही मुझे क्रोध पर नियन्त्रण करने की शक्ति तथा अपूर्व शान्ति प्राप्त हुई है। दिव्य सङ्गीत हृदय पर अमिट छाप छोड़ता है।" प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान अर्नेस्ट हंट ने अपनी पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ म्यूजिक' में लिखा हैं "सङ्गीत सूक्ष्म अन्तर्वृत्तियों के उद्‌घाटन का सबल माध्यम है।" सङ्गीत एक ऐसा सृजनात्मक साधन है जो जीवन को मंगलमय एवं स्वर्णिम बना देता है। सङ्गीत की इसी विशेषता के प्रभावित मार्टिन लूथर ने कहा "सङ्गीत मनुष्य को दयालु एवं बुद्धिमन बना देता है। यह ईश्वर की वह अनुकृति है जो मनुष्य के कष्टों को दूर कर उसे शान्ति पहुँचाती है।"

चिकित्साशास्त्रियों के अनुसार सङ्गीत के स्वर शारीरिक स्वास्थ्य के लिये भी लाभप्रद है। इसी कारण सङ्गीत आज एक उपचार पद्धति भी बन गई है जो पश्चिमी देशों में 'MUSIC THERAPY' के रूप में जानी जाती है। इस पद्धति में 'विशुद्ध भारतीय राग' के माध्यम से रोगों का उपचार किया जाता है। अनेक राग ऐसे हैं जिनसे मानसिक शान्ति एवं आरोग्य लाभ प्राप्त होता है। केवल आवश्यकता है ऐसे रागों की सही पहचान एवं उनके उचित प्रयोग की।

'म्यूजिक थेरेपी' के विशेषज्ञ डॉ० अनिल पाटिल के विचारों में "राग से मनुष्य सहज ही प्रभावित हो सकता हैं जब सपेरे की बीन की मोहक ध्वनि सुनकर सर्प तुल्य विषधारी झूमने पर विवश हो जाता है तो मानवीय भावनायें तो बहुत कोमल हैं।" इस थेरेपी में डॉक्टर रोगी की जाँच–पड़ताल करके रोग तथा रोगी की पसंद के अनुकूल उसे राग सुनाते हैं तथा सम्बन्धित सीडी एवं कैसेट भी उपलब्ध कराते हैं। शोधों के आधार पर वह कहते हैं कि विलम्बित ख्यालों/धुनों का प्रयोग प्रतिक्रियाशील रोगी पर एवं द्रुत ख्यालों/धुनों का प्रयोग उत्साहीन व्यक्तियों पर उपयुक्त होता है।

सङ्गीत के स्वरों का प्रभाव असाध्य रोगों पर भी होता है। फ्रांस के नैशविले अस्पताल में १३ वर्षीय बालिका केटी का गले का नीचे के पूरा भाग क्रियाशून्य हो गया। उसे विख्यात गायक जॉन रिची के संरक्षण में रखकर प्रारम्भ में राग 'आसावरी' एवं 'बिलावल' के विलम्बित ख्याल प्रातःकाल के समय सुनाये गये। धीरे–धीरे ख्याल गति बढ़ाई गई। इस प्रयोग के परिणाम काफ़ी आशानुकूल हैं। वर्तमान में वह बालिका कमर के ऊपर का शरीर काफी हद तक हिला सकती है।

सङ्गीत के स्वरों से केवल मनुष्य ही प्रभावित नहीं होता है अपितु पशु भी प्रभावित होते है। उन पर भी सङ्गीत का असर दिखाई देता है। पं० ओंकारनाथ ठाकुर की मान्यता है कि 'काफी' राग के कोमल स्वरों से जानवर भी मस्त हो जाते हैं। उस समय उनकी चंचलता एवं चपलता दर्शनीय होती है। ऑस्ट्रेलिया की श्रीमती दीवाना शोल्ड भी अपने प्रयोग के लिये विख्यात हैं। वे घने जंगलों में जाकर राग 'भीमपलासी' के गायन से जंगली एवं अड़ियल घोड़ों को वश में कर लेती हैं। इसी क्रम में यूरोप में गायों को राग 'नन्दिनी' का विलम्बित रूप सुनाया गया जिससे उनकी दूध देने की क्षमता में वृद्धि हुई।

इस प्रकार सङ्गीत एक उत्कृष्ट कला है। जिसने जीवनदायिनी सङ्गीत कला को सीख लिया, उसका सम्पूर्ण जीवन सफल एवं सार्थक हो जाता है और ऐसे ही सार्थक जीवन के प्रत्येक विचार व प्रत्येक कर्म में दिव्य सङ्गीत झरता है जिससे वह स्वयं आनन्दित होता है और दूसरों को भी प्रसन्न करता है।

सच्ची–वीरता

पंकज

षष्ठ 'ख'

बात उस समय की है जब रंगून में सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में भरती होने के लिए अपार भीड़ लगी थी नेताजी ने एक मंच से जनता को संबोधित करते हुए कहा। ''दोस्तों, आजादी बलिदान चाहती है। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

भीड़ चिल्ला उठी, ''नेताजी, आपके एक इशारे पर हम अपना तन, मन, धन भारत माँ के चरणों में निछावर कर देंगे।''

''ठीक है दोस्तों, आगे आइए और इस शपथ पत्र पर हस्ताक्षर कीजिए,'' भीड़ में आपाधापी मच गई। हर एक शपथपत्र पर पहले हस्ताक्षर कर नेताजी की नजरों में चढ़ना चाहता था।

इससे पहले कि भीड़ में से कोई आगे बढ़कर शपथपत्र पर अपने हस्ताक्षर करता, नेताजी की आवाज गूँजी, ''ठहरो, मुझे खून के हस्ताक्षर चाहिए। जो आजादी के लिए सर्वस्व अर्पित करने का दंभ भरता हो वह अपने खून से हस्ताक्षर करे।'' भीड़ की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और लोग धीरे–धीरे खिसकने लगे। अचानक सत्रह लड़कियाँ आगे बढ़ी और आनन फानन में अपनी कमर से छुरियाँ निकालीं और अपनी उंगली चीर कर शपथपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

प्रसंग

अच्छे लोग

शौर्यजीत सिंह

द्वादश 'क'

कानपुर में दशहरे मेले का उत्साह दर्शनीय होता है। नीर क्षीर चौराहा इसका साक्षात् उदाहरण है, जहाँ से मॉडल टाउन एवं सेन्ट्रल पार्क के मेले बहुत नजदीक है। अतः इन दिनों नीर क्षीर चौराहे पर काफी भीड़ रहती है। रात के नौ बजे के करीब मैं साइकिल के कैरियर पर बैग टाँगे घर आ रहा था। भीड़ में धक्के इत्यादि की वजह से बैग कुछ इधर उधर खिसका गया था। चौराहे तक पहुँचते–पहुँचते बैग गिर गया। पीछे से एक रिक्शे वाले ने आवाज दी कि बैग गिर गया है। मैं बैग उठाने के लिये बीच सड़क पर रुक नहीं सकता था क्योंकि अगर मैं रुकता तो पीछे लगा जाम और लम्बा हो जाता। मैंने आगे बढ़कर चौराहे के एक तरफ से फूलों की दुकान के पास साइकिल खड़ी कर दी और बैग की तरफ भागा। बैग में रसायन विज्ञान के बहत महत्वपूर्ण नोट्स थे, जो मेरी वर्ष भर की पूँजी थे।

मैं सड़क पर पहुँचा तो भीड़ छँट चुकी थी। परन्तु दूर दूर तक मेरा बैग नहीं दिखता था। मैं बहुत परेशान हो रहा था। मैंने आसपास की दुकानों पर जाकर पूछा कि शायद उन्होंने बैग उठाकर कहीं रख दिया हो, पर किसी ने कुछ नहीं बताया। अंततः निराश होकर मैं साइकिल की तरफ मुड़ा। अगला दृश्य मुझे अचम्भित करने वाला था। बैग कैरियर में लगा हुआ था। मैं दौड़कर वहाँ पहुँचा और फूल वाले से पूछा 'यह बैग किसने रखा' उसने जवाब दिया कि "बैग तो पहले से ही यहीं रखा था।" शायद फूल वाला भी उस व्यक्ति को देख नहीं पाया था। मैंने मन ही मन उस व्यक्ति को शत् बार धन्यवाद दिया। आज भी यह घटना याद करता हूँ तो सोचता हूँ कि बैग न मिलता तो मैं क्या करता है। वह अज्ञात परोपकारी सदैव मेरे हृदय में जीवित रहेगा।

ज्ञान

मनुष्य जीवन से श्रेष्ठ कुछ नहीं

आशीष वर्मा

षष्ठ 'ख'

इन्द्र एक दिन स्वर्ग से पृथ्वी पर पधारे, उन्होंने घोषणा करवाई कि जिसे जो वस्तु कुरूप लगे वो उसे वहाँ लाकर सुन्दर वस्तु से बदल ले जाये। असंख्य मनुष्यों की भीड़ लग गयी, वे अपनी वस्तुओं को सुन्दर करवा ले गये। कुछ ही दिनों में सभी पृथ्वीवासियों ने इस सुविधा का लाभ उठा लिया। तलाशा गया कि कोई ऐसा तो नहीं रह गया, जो इस अवसर का लाभ न उठा सका हो। खोजियों ने एक अवधूत को छोटी से छोटी सी कुटिया में बैठा पाया। अकेला वह ही परिवर्तन के लिए नहीं गया था। कारण पूँछने पर उसने बतलाया कि मनुष्य जीवन से सुन्दर और कुछ नहीं है और संतोष से बढ़कर कोई दूसरा आनन्द नहीं। मेरे पास ये दोनों ही वस्तुएँ है फिर मैं इनसे अच्छी वस्तुएँ कहाँ पाऊँ और किससे इन्हें बदलूँ ?

मंचासीन श्री शास्त्री, श्री वीरेन्द्र जी व अन्य पदाधिकारी

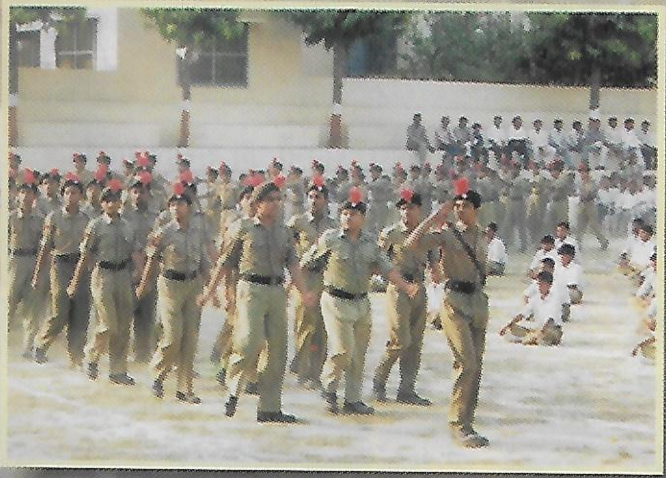

एन.सी.सी. के जवान : प्रवीर हो, जयी बनो बढ़े चलो, बढ़े चलो

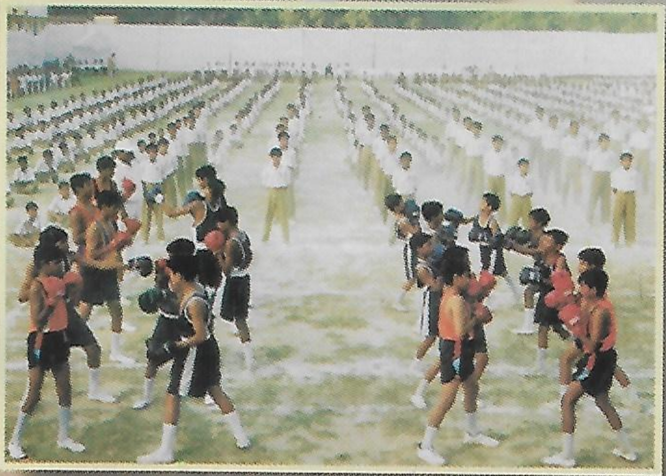

वार्षिकोत्सव में मुक्केबाजी का प्रर्दशन

हर बाधा हम पार करेंगे, सपनों का संसार गढ़ेंगे
(ऊँची कूद में छलांग लगाता छात्र)

हम सबके आगे जायेंगे, विजय गीत फिर दोहरायेंगे
(वार्षिक खेलकूद में सौ मीटर दौड़ में स्पर्धारत धावक)

वाद–विवाद

आतंकवाद का समूल विनाश दमन नीति से ही संभव है

✍ अभिषेक अग्निहोत्री

द्वादश 'क'

डॉ० संपूर्णानंद वाद–विवाद प्रतियोगिता प्रदेश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित वाद–विवाद प्रतियोगिता है जिसमें लंबे समय से दीनदयाल विद्यालय ने कीर्ति पताकाएँ फहराई हैं। वर्ष २००२ मे डॉ० सम्पूर्णानंद वाद–विवाद प्रतियोगिता में विद्यालय के द्वादश कक्षा के छात्र चि० अभिषेक अग्निहोत्री ने उपरोक्त विषय के पक्ष में उत्कृष्ट वक्तव्य देकर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने का गौरव प्राप्त कर विद्यालय के यशागार में एक और रत्न अर्पित किया। चि० अभिषेक एवं ऋषि तिवारी की जोड़ी ने विद्यालय को प्रदेश में प्रथम स्थान पर प्रतिस्थापित किया। —*सम्पादक*

राम के शर सोयेंगे तूणीर में जब,
या सुदर्शन शान्ति की माला जपेगा,
सिर धुनेगा बेबशी में गाधिनंदन,
हर कदम पर दुष्ट दुर्योधन तपेगा।।

अध्यक्ष महोदय, "आतंकवाद का समूल विनाश दमन नीति से ही सम्भव है।" हमारा दुर्भाग्य है कि हमारी पीढ़ी विचारकों के द्वारा यह सुनने के लिए मजबूर है कि आतंक एक वाद हो गया है। महोदय, वाद एक विचार, एक शैली, जीवन की एक परिणामकारी व्यवस्था है। क्या अब हम आतंक और विध्वंस को भी जीवन का सत्य मान लें ? कदापि नहीं।

महोदय, आतंक एक बारूदी सौगात है। जो अपने पराये का भेद तो कर ही नहीं पाती स्वयं अपना अस्तित्व भी दाँव पर लगा देती हैं। वाह ! रे आतंक के दर्शन वेत्ताओं तुमने परमात्मा की रचना को विनाश की ज्वाला में धू–धू कर स्वाहा करने में कोई संकोच नहीं किया।

महोदय, इस समय एक स्वर से कहा जा रहा हैं कि आतंक के शिंकजे में पूरा विश्व जकड़ गया है। यह कथन शायद ११ सितम्बर सन् २००१ ई. से पहले इतनी जोर–शोर से प्रचारित नहीं किया जा रहा था, जबकि इतिहास बनी हुई तारीखें हिन्दुस्तान की धरती से चिल्लाती रहीं। ध्यान दीजिए ! जनवरी ९७, बंधावा में २५ कश्मीरी पंडितों का सामूहिक नरसंहार। क्या यह आतंक नहीं था। १ अप्रैल ९८ से अगस्त ९८ तक ११५ हिन्दुओं की निर्मम हत्या। १ अगस्त सन् २००० ई. २६ अमरनाथ यात्रियों सहित ६० तीर्थयात्रियों की हत्या। क्या यह आतंक नहीं था ?

महोदय, यह विध्वंस व्यथा भारत की धरती ने वर्षो से झेली है और फिर अपनी भावुकता के चलते उन आतंकपरस्तों को गले लगाने के लिए मजबूर भी हुआ है। इसी आतंकवाद के आधार पर नागालैण्ड बटा, कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया, आतंकी हौसले से उत्साहित होकर असम की धरती आज भी विनाश की तस्वीरें देखने को मजबूर है। हमने उपवास किए, श्वेत कपोत उड़ाए, पद यात्रायें की, बस यात्रायें की, एकतरफा

संघर्ष विराम किए, देशभक्ति के मुँह पर ताले और अपनी ही सेना के हाथों में हथकड़ियाँ डालने में कोई संकोच नहीं किया। चादरें चढ़ायी, मन्नतें मानी, किन्तु मर्ज बढ़ता गया, ज्यों–ज्यों, दवा की ...।

शायद इसीलिए आज विचारशील मनीषा ने यह विषय प्रस्तुत करने का हौसला दिखाया कि "आतंकवाद का विनाश दमन नीति से ही सम्भव है।" महोदय, विष की औषधि विष ही हुआ करती है, भूत भय से भागते हैं, दूध पिलाने के बाद भी नाग निर्विष नहीं हुआ करता। इसलिए यथावश्यक नागदमन की प्रक्रिया समाज के सर्वथा हित में है। भारतवर्ष की इसी परम्परा की विस्मृति ही शायद आतंकवाद के पनपने का प्रमुख कारण है। महोदय, हम भूल गये कि जहाँ एक ओर त्रेता के राम अपने गुरु विश्वामित्र के आह्वान पर तत्कालीन आतंकियों के दमनार्थ अविश्रान्त योद्धा बनकर अयोध्या से लंका तक अपनी विजयी पताका फहराते हैं और द्वापर के श्रीकृष्ण दुष्टों के विनाश हेतु सुदर्शन चक्र धारण कर महाभारत के सूत्रधार बनते हैं। इतिहास साक्षी है कि पिछले हजारों वर्ष पहले हमने शक, हूणों जैसी अनेक बर्बर जातियों को अपने पराक्रम से नामशेष कर दिया, मुस्लिम आक्रान्ताओं को न जाने कितनी बार पराजित कर प्राणों की भीख दी है। ४८, ६५, ७१ और ९९ की विजय पताका आज भी लहरा रही है।

महोदय, इन आतंकवादियों से किसी कानून व्यवस्था के स्तर पर लड़ाई लड़ने की बात सोचना ही बेमानी है। जैसे अमेरिका में पेंटागन और विश्व व्यापार केन्द्र पर हुआ हमला अमेरिकी स्वाभिमान के प्रतीकों पर तमाचा जड़ना था, ठीक वैसे ही लाल किले और साउथ ब्लॉक के सामने हुई वारदातों के बाद संसद पर हुआ हमला भी क्या भारतीय अस्मिता पर चोट नहीं है ? लेह से पोर्ट ब्लेयर तक तथा ओखा से ईटानगर तक की जनता की भावना यही है कि इन आतंकियों का समूलोच्चाटन हो जाना चाहिए। विश्व के सभ्य समाज में ऐसे दरिन्दों की कोई जगह नहीं है। कायर जेहादियों को ऐसा सबक सिखाना होगा कि वे मानवता की ओर आँख उठाने का दुस्साहस न करें। सब्र और धैर्य को जो दब्बूपन मानने की गलती करते हैं उन मनोरोगियों को यह समझाना होगा कि हमारी शान्ति सोया हुआ ज्वालामुखी है महाविनाश को आमन्त्रण है। हमारा इतिहास गवाह है कि स्वतन्त्रता उन्हीं हाथों में सुरक्षित रही है, जिनके भुजदण्डों में शक्ति, हृदय में देश के लिए अथाह और अपरिमित भक्ति तथा मस्तिष्क में योजनाओं का भण्डार विद्यमान हो।

महोदय, केवल भावनाओं से देश की सीमायें सुरक्षित नहीं रहतीं, शायद इसीलिए स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू की पवित्र भावनाओं और उदात्त मानवीय कल्पनाओं पर आधारित पंचशील और शान्ति का मसौदा हमारे पड़ोसियों अमन के दुश्मनों द्वारा छिन्न–भिन्न कर दिया गया। इसीलिए इतिहास से सीख लेते हुए यदि हम इन सिद्धान्तों पर विचार करते रहे तो राष्ट्रीय अस्मिता के रक्षा एक दिवास्वप्न हो जायेगी।

महोदय, आज जब आतंक के क्रूर हाथों ने भारत की अखण्ड सम्प्रभुता को चुनौती दी हो उस समय भी अपने राजनैतिक लाभ के लिए किन्तु परन्तु लगाने वाले तथाकथित राजनेताओं की बुद्धि पर तरस आता है। इस सबकी तो आवश्यकता ही इसीलिए समाप्त हो जाती है, क्योंकि पिछले २० वर्षों से इस दंश से निपटने के लिए हमने इसका प्रायोगिक रूप देखा है। आतंक का घिनौना चेहरा जिस समय पंजाब के खेत–खलिहानों को रौंदता हुआ वहाँ के नौनिहालों को काल–कवलित कर रहा था, उस समय भी हमने विचारों और भावनाओं के माध्यम से उस पर अंकुश लगाने की कोशिश की। परिणाम, वह जेहादी जुनून इतिहास की सभी मर्यादाओं को रौंदकर अपने द्वारा संरक्षित देश की चौथी प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के वक्षस्थल को छेद गया। अरे, हमें कौन सिखाएगा कि हमें शान्ति और संयम से काम लेना चाहिए। हमने तो अपने देश की सरहद को लाँघकर भी पड़ोसी मुल्कों में जाकर अमन–चैन कायम करने का पुरजोर प्रयास किया। परिणाम, आतंक का बढ़ता हुआ भयानक स्वरूप राजीव गाँधी को निगल गया। कश्मीरी पण्डितों का विस्थापन, केसर की क्यारी का रक्तरंजित स्वरूप झेलते–झेलते तिरपन हजार आहुतियों के बाद भी हमने संयम बरता।

संयम, सद्भावना, शान्ति, समझौता और वार्ता जैसे लुभावने शब्दों पर अमल करने का दुष्परिणाम भारतीय

वर्द्धमान लोकतन्त्र की संसद यानि भारत के हृदय पर बारूदों की बौछार करके पूरे राष्ट्र में राजनैतिक शून्यता पैदा करने को जो अक्षम्य अपराध किया गया है, उसके बाद सारे रास्ते बंद हो जाते है, सिर्फ एक मार्ग बचता है और वह आतंकवाद, आतंकवादी और उनको प्रश्रय देने वाली किसी भी शक्ति का समूल विनाश। महोदय, यदि भारत वर्ष का कोई भी व्यक्ति इसके अतिरिक्त दूसरी भाषा बोल रहा है तो मैं क्षमासहित कहना चाहता हूँ कि वह राष्ट्र भक्त नहीं राष्ट्रद्रोही है।

महोदय, हमारे साथी क्यों भूल जाते हैं कि हमारी रगों में शिवा और राणा का रक्त दौड़ रहा है। क्या विधाता ने दो भुजायें हमारे सुपुर्द इसलिए की हैं कि हम उन्हें फैलाकर याचना के बोल प्रस्तुत करें। नहीं किसी भी परिस्थिति में नहीं ....।

अरे ! सबल भुजदण्डों का तो कार्य ही अरिमुण्डों को तरबूज समान मानकर दो फाँक कर देना है। महोदय, मेरी रुचि नहीं कि मैं चेतना – शून्य और संवेदना हीनों के मध्य अंगारे उछाल फेकूँ, क्योंकि यदि कोई अपनी माँ पर आ पड़े संकट को टालने के लिये गिड़गिड़ाना ही उचित समझता है तो समझता रहे, किन्तु मैं तो परिस्थिति देखकर यही आह्वान करूँगा कि –

"फिर सीमा पर प्रभंजन उठने वाला है,
आसमान वायव्य दिशा का काला है,
बारूदी दुर्गन्ध हवा में छायी है,
चाँदी के शिखरों पर फिर से काई है,
चलो मनाने फिर विजयी त्यौहार चलें,
चलो देश के प्रहरी सीमा पार चलें,"

मौत डराती भीरु पुरुष को जवाँ मर्द का खेल
देते हैं वीरों के सीने तोपों का मुँह फेर
आजादी उस घर की होती जहाँ कि सच्चा प्यार
जहाँ गरम रहता है हरदम प्राणों का बाजार
रक्तदान के बिना देश आजाद नहीं होता
बलिदानों से देश कभी बरबाद नहीं होता

● ● ●

तुम समर्थ निरपेक्ष विश्व हो मैं संसार असार विखंडित
तुम अथाह जल राशि महातम मैं विवर्त केवल प्रतिबिंबित
तुम अनत तो मैं बसन्त हूँ तुम चन्दन मैं सुरभि तुम्हारी
तुम कजरारे मेघ तुम्हारे आंचल में जलराशि हमारी
कोई तुम्हें शिखर में देखे कोई कहता तुम्हें मूल है।
मुझको जलना ही कबूल है।

प्रतिपक्ष

आतंकवाद का समूल विनाश दमन नीति से संभव नहीं है

ऋषि तिवारी

द्वादश 'क'

दस वर्ष की छोटी आयु में जब ऋषि इस विद्यालय में आए थे तभी से उसमें वक्तृत्व की प्रतिभा थी। यह प्रतिभा निरंतर निखरती ही गयी। संपूर्णानंद वाद–विवाद प्रतियोगिता में उसने अपनी भाषण कला का लोहा मनवा दिया। – *सम्पादक*

कब लपटें शान्त हुई हैं, बारूदी हवि से।
कब थमीं क्रोध की आग, भयद ललकारों से।
ज्वालायें चाहे जैसी हों, जब भी सुलगी,
जा सका दबाया उनको सलिल फुहारों ने।।

अध्यक्ष महोदय, हमारे साथी ने अपने भावातिरेक एवं बौद्धिक कलाबाजी में जो कुछ कहा है। वह भले ही कर्णप्रिय लगता हो परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में यह विश्व मानवता के साथ भारी छलावा है। सिद्धांतों की समीक्षा जागृत समाज की थाती होती है। 'विषस्य विषमौषधम' के सिद्धान्त को सर्वग्राही तो नहीं बनाया जा सकता, आग को पानी से ही बुझाने की परम्परा है और नाग का दलन नागों की उत्पत्ति से नहीं रोक सकता। संसार में अच्छाई और बुराई, युद्ध और शान्ति एक साथ जन्मते और जीते हैं। इतिहास साक्षी है, महाभारत में आतंकी दुर्योधन दल का दमन भी चिरशांति प्रस्थापित न कर सका और अन्ततः महाभारत के सूत्रधार भगवान श्रीकृष्ण भी शांति से अपनी जीवनयात्रा पूरी न कर सके। भारत ऋषियों की परम्परा का देश है। ऋषियों ने सिंह और मृगशावकों के एक साथ रहने की परिस्थिति भय और दवाब में नहीं उत्पन्न की। बौद्धकाल का अंगुलिमाल अपने भयानक कर्मों को यदि दमन नीति से छोड़ सका होता तो सर्वत्यागी बुद्ध से अधिक सम्मान मिला होता। अमेरिका ने ईराक के ऊपर बारूद बरसाकर अपने मंसूबे सफल नहीं कर पाये और आज बिन लादेन जैसे आतंक परस्त को जिंदा या मुर्दा पकड़ने की उनकी मुहिम भी दमन नीति के सहारे अब तक सफल नहीं हुई, और यदि उन्होंने नीति से काम न लिया होता तो शायद काबुल की दीवारों के भीतर अब भी अलकायदा और तालिबानों की बंदूकें गरज रहीं होतीं। लंका को लिट्टे और भारी भरकम चीन को छोटा सा मकाओ भी सदा चुनौती देता रहा।

महोदय, कहने का आशय यह कि जब तक आतंक के बीच समाप्त नहीं होंगे, उनकी पौध को फैलने से कोई नहीं रोक सकता और इस बीज की समाप्ति भावना, विश्वास और परस्पर के सहयोग पर ही सम्भव है। आंतकवादी की मुख्य शक्ति उसके बाहरी साधनों से कहीं अधिक उसकी अन्तः प्रेरणा होती है और यह अन्तः प्रेरणा ही उसे आत्मा का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर हो या पेंटागन, कश्मीर की विधान सभी हो भारतीय संसद कहीं भी अपनी विजय पताका हाथों में फहराने और उसे अपनी आँखों से देखने का सपना आतंकियों के मन में कतई न था, उनकी आँखों में था जुनून जेहादी जुनून । कोई जैसे बहुत पवित्र उद्देश्य के लिये आत्माहुति देता है वैसे ही वे मनोरोगी विध्वंस की लपटें उठाकर दूसरों के साथ स्वयं जल मरते हैं। यह एक ऐसा निरंकुश आन्दोलन है जिसकी व्याख्या ही संभव नहीं, और फिर आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई किसी एक देश और विचार के विरुद्ध नहीं वरन् उस सम्पूर्ण विचारधारा के विरुद्ध है जो आतंक को जन्म देती है, जो निर्दोषों की हत्या को पुण्य समझती है और नफरत बॉटना ही अपना धर्म मानती है।

अगर जंग लड़ना है तो जंग लड़े उस विकृत मानसिकता से जो आतंकी को स्वतंत्रता सेनानी और आतंकवाद को जेहाद कहती है। आतंकवाद पनपता है गरीबी में उसे पोषण मिलता है अशिक्षा से और यह विकराल रूप तब धारण करता है जब धार्मिक मदांधता उससे जुड़ जाती है।

महोदय आश्चर्य का विषय है कि मेरे प्रतिपक्षी साथी बारूद पर बैठकर शांति की कल्पना कर रहे हैं। प्रलय की राह में अमन और चैन खोज रहे हैं। सीने में बारूदी सौगात लिए विश्वप्रेम का प्रचार कर रहे हैं। क्या आप युद्ध की विभीषिका से अपरिचित हैं या उन्हें कल्पना नहीं है जापान के हिरोशिमा और नागासाकी की चट्टानो पर पड़ी उन स्याह रेखाओं की जो आज भी भावुक मानव हृदय को आंदोलित कर देती हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध की यादें अभी मिटी नहीं कि तृतीय विश्वयुद्ध की भूमिका का निर्माण कहाँ की समझदारी है। सन् सैंतालीस, बासठ, पैंसठ और इकहत्तर के युद्धों ने भारत को क्या दिया – वैमनस्यता की बढती हुई खाई। अपने घर की आग को बुझाने में असफल राजीव गांधी द्वारा लंका में सैन्य शक्ति के द्वारा आतंकवाद का दमन करने के लिए भेजी गयी शान्ति सेना का क्या निष्कर्ष निकला। आतंकवाद के नाम पर मजहबी जहर अपनी शिराओं में लिए मर मिटने वाला आतंकवादी कोई एक व्यक्ति नहीं एक वृत्ति होती है। यदि हमें इस जहर को ईमानदारी से नष्ट करना है तो वैचारिक स्तर पर लडाई लडनी होगी। क्या कारण है कि पेशे से इजीनियर ओसामा बिन लादेन सुख–सुविधा का जीवन छोडकर बारूदी खेल खेलने को आतुर हो उठा। पन्द्रह से तीस वर्ष तक के नौजवान जिनके सामने जीवन के सुनहरे सपने होते हैं जिनकी शक्ति किसी भी राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकती है, वे जवान स्वेच्छा से भावनाओं के ज्वार में बंदूकों के साये में जीने के आदी हो गये। यदि हमें यह सिलसिला रोकना है तो जहाँ एक ओर इनके अंतःकरण की शुद्धि के लिये कोई ठोस योजना बनानी होगी वहीं दूसरी ओर सारे राष्ट्र को वैचारिक सूत्र में पिराकर इस प्रकृति और प्रवृत्ति के भयावह स्वरूप को उजागर करना चाहिये। और यह काम दमन से नहीं विवेक से सम्भव है क्योंकि बिना विरोध के दण्ड या तो असहाय गुलाम झेलता है या किसी माँ का बिगडैल बेटा। लेकिन जिस समाज को विदेशी धन और साधन उपलब्ध हो रहे हों जिसके मंसूबे अपने को अलग राष्ट्र मान बैठने को हों जिसकी नजर अधिकार की माँग पर नहीं देश के बँटवारे पर टिकी हो उनके लिये इस प्रकार का चिन्तन मात्र आत्ममुग्धता किंवा प्रवंचना ही कही जायेगी।

मै नही मानता किसी पवित्र साध्य की प्राप्ति के लिये अपवित्र साधन उपयोगी है और यह युद्ध तो एक ऐसा भीषण झंझावात है जो अच्छे बुरे का भेद किये बगैर सम्पूर्ण को छिन्न भिन्न कर देता है। बारूद जब अपना धुँआ वायुमंडल में घोलती है तो वह अच्छे बुरे का भेद नहीं करती। तो क्या हम युद्ध के बहाने प्रलय को निमंत्रण नहीं दे रहे हैं। और निर्माण की चाह में विनाश की ओर नही जा रहे हैं ? महोदय जहाँ तक चर्चा आतंकवाद के विनाश के लिए युद्ध की अनिवार्यता की है तो ऐसा युद्ध अमेरिका और ब्रिटेन जैसे राष्ट्रों के लिए एक बार खेल हो सकता है परन्तु भारत जिसकी सीमायें ही आतंक से लहू–लुहान हो और जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ही आतंकियों की परिधि में हो वहाँ युद्ध बालक्रीडा नहीं हो सकती। आपसी वैमनस्य के अन्त और परस्पर के सहयोग से ही शान्ति संभव है।

अध्यक्ष महोदय आग को आग से बुझाना नासमझी भरा खतरनाक खेल है। इस मंच से इस खेल को आमंत्रण देने वाले मेरे मित्रों सिर काटने से रावण नहीं मरा करता है। बारूदी जंग की वकालत करने वालों हिरोशिमा और नागासाकी का करुण क्रंदन सुनने को क्यों आतुर हो। मनुष्य और मनुष्यता के नाश के द्वारा आतंक को समाप्त करने का कुतर्क प्रस्तुत करके इस किशोर पीढ़ी को जेहादी शिक्षा मत दो। विध्वंसक आयुधों के अंबार पर खडी विश्व मानवता को अपनी गर्हित सोच से त्रस्त करने का कुचक्र मत करो।

गीत जब मर जायेंगे तो क्या यहाँ रह जाएगा।
एक सिसकता आंसुओं का कारवाँ रह जाएगा।
आग लेकर हाथ में पगले जलाता है किसे।
जब न यह बस्ती रहेगी तू कहाँ रह जाएगा।

राष्ट्र सेवा के लिए स्वयं सेवक सजग रहें

✍ अनुपम द्विवेदी
छात्रावास सहव्यवस्थापक

आज हमारा देश चतुर्दिक संकटों से घिरा है विदेशी कम्पनियों का जाल बिछता जा रहा है। पड़ोसी राष्ट्र चीन और पाकिस्तान हमारी जमीन पर कब्जा किए हुए हैं। हमारी गलत नीतियों के कारण मित्र राष्ट्र नेपाल और श्रीलंका का दृष्टिकोण भारत के प्रति बहुत अच्छा नहीं है। ऐसी स्थिति में राष्ट्र की सुरक्षा के लिए संघ सेवकों को निरन्तर सजग रहने की आवश्यकता है।

स्वाभिमानी राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने के लिए स्वयंसेवक तन–मन–धन से जुटे रहें। धर्मान्तरण के लिए आ रहा अन्धाधुन्ध विदेशी धन चिंता का विषय है। मस्जिदों की मरम्मत के लिए लाखों रुपया विदेशों से आता है इस धन का क्या उपयोग होता है। भारतीय मुसलमानों को इण्डोनेशिया के मुसलमानों की तरह राम और कृष्ण को अपना पूर्वज मानना चाहिए।

संघ द्वारा किए जा रहे समाज सेवा के कार्यों के फलस्वरूप आम जनता में संघ के प्रति विश्वास की अटूट भावना निर्मित हुई है। राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ देश में सक्रिय हैं, जगह–जगह विस्फोट हो रहे हैं, पाकिस्तानी आतंकवादी एवं बंगलादेशी घुसपैठियों ने हर शहर में अपने अड्डे बना लिए हैं। राष्ट्र की सुरक्षा तथा राष्ट्र द्रोहियों की खोज के लिए भारत के सुरक्षा बलों को किसी भी स्थान पर बिना पूर्व अनुमति के छापा मारने का अधिकार होना ही चाहिए।

अयोध्या, काशी और मथुरा हिन्दू समाज के पूज्य स्थल हैं ये उसके लिए मोक्ष की नगरियाँ हैं। इन स्थानों को हिन्दुओं को मिलना ही चाहिए। बाबर से राम की तुलना नहीं की जा सकती। कहाँ एक लुटेरा और कहाँ एक मर्यादा पुरूषोत्तम राष्ट्र पुरुष ! अयोध्या में राम का मन्दिर नहीं बनेगा तो फिर क्या मक्का मदीना में बनेगा। सत्ता के प्रलोभन में अपने सिद्धांतों व नीतियों को छोड़ने वाले निर्लज्ज जन–प्रतिनिधियों से देश का कोई भला नहीं होने वाला है। देश की जर्जर अर्थव्यवस्था तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अवैध हस्ताक्षेप के प्रति सचेत होना होगा। संघ ने राष्ट्र की सुरक्षा की शपथ ली है। देश पर होने वाले किसी भी प्रकार के अपघात को संघ के स्वयंसेवक सहन नहीं करेंगे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निर्माण का एकमात्र उद्‌देश्य राष्ट्ररक्षा जिसके लिए आवश्यकता पड़ने पर स्वयं सेवकों ने तन मन और धन से भारत माँ की सेवा की है। चाहे वह १९६२ और ७१ के युद्ध हो या प्राकृतिक कोप जैसे गुजरात त्रासदी, उड़ीसा का तूफान यही कारण है कि इस समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयं सेवी संगठन है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि स्वयं सेवक को कर्तव्यनिष्ठ, सेवापरायण और दिये गये दायित्वों के प्रति पूरी ईमानदारी से समर्पित रहना चाहिये जिससे भारत माँ को उज्जवल भविष्य की आश्वस्ति मिलती है। स्वयं सेवक अतीत से प्रेरण लेकर वर्तमान को ध्यान में रखते हुए आशानुरूप भविष्य का निर्माण करेंगे और अपने. द्वारा लिए गये संकल्प 'परेवैभवन्ने त्वमेतत्वराष्ट्रं' को पूरा करेंगे और देश को परम वैभव पर पहुँचायेंगे।

कठिनाइयाँ सक्रियता और कुशलता बढ़ाती हैं

✍ *सन्दीप कुमार शिवहरे*

सप्तम 'ख'

सफलता का मार्ग सुगम नहीं है। उसमें पग–पग पर काँटे बिछे हैं। शहद मधुमक्खियों के जहरीले डंकों की बाड़ के भीतर रहता है, जो उन पैने डंकों का सामना कर सकता है, वही शहद को पा सकता है। ऐसी एक भी सफलता नहीं जो कठिनाइयों से संघर्ष किए बिना ही प्राप्त हो जाती है। यदि परमात्मा ने सफलता का कठिनाई के साथ गठबन्धन न किया होता, उसे सर्वसुलभ बना दिया होता तो वह मनुष्य जाति का वह सबसे बड़ा दुर्भाग्य होता। जब सरलता से मिली हुई सफलता बिल्कुल नीरस हो जाती। जो वस्तु जितनी कठिनता से मिलती है वह उतनी ही आनन्ददायक होती है।

कठिनाइयों के न रहने पर एक और हानि होती है कि मनुष्य की क्रियाशीलता, कुशलता एवं चैतन्य नष्ट हो जाता है। ठोकर खा–खाकर वह अनुभवी, कष्टों की चोट सहकर मनुष्य दृढ़, बलवान और साहसी बनता है। मुसीबत की अग्नि में तपाये जाने पर बहुत सी कमजोरियाँ जल जाती हैं और मनुष्य खरे सोने की तरह चमकने लगता है। बिना चोट लगे गेंद नहीं उछलती, बिना थपकी लगे मृदंग नहीं बजता, बिना एड़ लगाये घोड़े की चाल में तीव्रता नहीं आती, मनुष्य भी ऐसे तत्वों से बना हुआ है कि यदि कठिनाई न हो तो उसकी सुप्त शक्तियाँ जागृत न हो सकेंगी। वह कभी उन्नति का शिखर चूम न पायेगा इतिहास में जिन महापुरुषों का वर्णन है उनमें से हर एक के पीछे कष्टों का, कठिनाइयों में पड़ने का विस्तृत वृत्तांत है।

'उद्धरेत आत्मनात्मानम्' की शिक्षा देते हुए गीता ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि उत्थान चाहते हो तो उसका प्रयत्न स्वयं करो। स्वयं को सशक्त समर्थ बनाकर प्रतिकूलताओं से जूझकर ही हम जीवन में उन्नति कर सकते हैं।

सुस्त है भारतीय खुफ़िया तंत्र

✍ *अक्षय यादव*

सप्तम 'ख'

२७ फरवरी २००२ शाम के करीब ६ बजे २००० लोगों ने मिलकर जेहादी नारेबाजी की और गोधरा स्टेशन पर करीब ६० निर्दोष हिन्दुओं को ट्रेन की बोगी में बन्द करके फूंक दिया। यह एक सोची–समझी साजिश थी और हमारे खुफिया तंत्र को इसकी भनक तक न लगी। संसद भवन पर हमला, कश्मीर विधान सभा पर हमला, इण्डियन एयर लाइन्स के विमान का अपहरण आदि, सभी घटनाएँ देश की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

कहानी बहुत लम्बी है और हर दुर्घटना चीख–चीख कर हमारे खुफिया तन्त्र की विफलता की दास्तान सुना रही है। इतनी बड़ी योजनाएँ लम्बे समय तक बनती रहती हैं। किन्तु हमारे खुफिया तन्त्र को कुछ भी पता नहीं चलता है। आई.एस.आई., लश्करए तोएबा जैसे संगठन हिन्दुस्तान को बरबाद करने की सोच रहे हैं। अमेरिका ने लादेन को पकड़ने के लिए जबरदस्त मुहिम चलाई। हमने उसका समर्थन किया और कहा कि हम भी ऐसा ही करेंगे। परन्त जब हमारी बारी आई तो हम अमेरिका का समर्थन पाने की आस में बैठे रहे, आज के नेता तो दूसरों की चिता पर रोटियाँ सेंकना खूब जानते हैं। उन्हें सिर्फ अपने से मतलब है। अक्सर ही दंगे भड़क जाते हैं। लाखों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। हमारा प्रशासन उन्हें रोक नहीं सकता।

आज पूरा देश बारुद के ढेर पर खड़ा है। ऐसे में हम सभी का अपने कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रधर्म का निर्वाह करना चाहिए।

अनुशासन

✍ कुलदीप यादव

षष्ठ 'ख'

अनुशासन से किसी भी चीज में नियमन आता है और नियमन में असीम शक्ति निहित है। प्रकृति हो या पुरुष सर्वत्र अनुशासन की महत्ता और भूमिका है। अनुशासन के महत्त्व पर पष्ठ कक्षा के बालक के विचार श्लाध्य हैं।
—संपादक

अनुशासन का अर्थ है नियंत्रण में रहना। बिना अनुशासन के हम किसी भी कार्य में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अनुशासन हमारे समाज को, हमारे देश को महान बनाता है। जितने महापुरुष हुए हैं वे सभी जीवन में अनुशासित रहे हैं। महात्मा गाँधी के जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व था। गाँधी जी के आश्रम में नियमों का पालन न करने पर दण्ड दिया जाता था। एक बार गाँधी जी किसी कार्य पर समय से आश्रम में उपस्थित न हो सके, अतः भोजन से वंचित रह गये। छत्रपति शिवाजी गुरु की आज्ञा से सिंहिनी का दूध लेने चले गये। केसवियान्का ने जहाज में जान दे दी परन्तु अपने पिता के आदेश की उपेक्षा नहीं की। पृथ्वी सिंह पिता के आदेश से सिंह से लड़ गया। शिवाजी के सेनापति ने पुत्र के विवाह को छोड़कर सिंहगढ़ पर झण्डा फहरा दिया और प्राण दे दिये। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे जीवन में अनुशासन का महत्व बहुत है। बिना अनुशासित हुए हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकते। हमें सदैव आगे बढ़ना चाहिये। अनुशासन हमें मार्ग दिखाता है। अनुशासन हमें महान बनाता है। बड़ों की आज्ञा मानना, नियमों व अधिकारियों के आदेश का पालन करना अनुशासन कहलाता है। विद्यार्थी में अनुशासन की भावना उत्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक है। अनुशासन के अभाव में विद्याभ्यास, मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का विकास नहीं होता है। अनुशासन आन्तरिक प्रेरणा की उपज है। सच्चा अनुशासन वही होता है। जब विद्यार्थी अपनी इच्छा से आदेशानुसार कार्यो को करता है। अनुशासन विद्यालय की चहारदीवारी तक सीमित नहीं रहता घर में खेल के मैदान में बाजार आदि सभी स्थानों पर उसकी आवश्यकता होती है। प्रकृति अपने नियमों का अतिक्रमण करती है तो संसार को भूकम्प, बाढ़ और भुखमरी के भयंकर परिणाम देखने पड़ते हैं। अनुशासन में रहने से नियमितता आ जाती है। जीवन सुव्यवस्थित हो जाता है। इसके अभाव में विद्यार्थी न तो देश का सभ्य नागरिक बन सकता है, न ही अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल हो पाता है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन से अभिप्राय है कि विद्यालय एवं अध्यापकों के शासन के अनुसार विद्यार्थी का आचरण। अनुशासन के अभाव में कोई भी व्यक्ति शिष्ट एवं सुशील नहीं बन सकता है। हमें अपने कार्य को ईश्वरीय कार्य समझकर करना चाहिये। अनुशासन का जन्म श्रद्धा से होता है। श्रद्धा से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

लंका में समृद्धि की सीता बन्दी है, भ्रष्टाचार समुद्र बीच में भरे हुए
लिये अहिंसा की माला कर में अपने, राह माँगते राम किनारे खड़े हुए
त्रिजटा के सपनों जैसा राष्ट्रीयकरण, सीता को कोरे आश्वासन पिला रहा
समाजवादी सेतु आज तक बंधा नहीं, भ्रष्ट समुद्र नींव के पत्थर हिला रहा
नल नीलों से क्या उम्मीद करें जिनकी निष्ठायें बदनाम कमीशन खाने में
बहुत देर है रामराज्य के आने में।

'प्रयास' का प्रारंभ

✍ शौर्यजीत सिंह
द्वादश 'क'

प्रयास विद्यालय की भित्ति पत्रिका है। प्रयास के संचालन में शौर्यजीत सिंह का श्रम, समर्पण और मेधा सब कुछ है। प्रयास के इतिवृत्त पर वह खुद ही कुछ कह रहे हैं। *– संपादक*

दिनांक १२ जनवरी २००१ को प्रयास का पहला अंक लगाया गया। मैं भी जिज्ञासावश देखने पहुँचा और मुझे लगा कि मैं भी इस भित्तिपत्र में कुछ योगदान कर सकता हूँ। १० जनवरी को मैं इस बारे में ही सोचता रहा। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं प्रभारी आचार्य जी से बात करुँगा कि प्रयास में कविताओं के एक अंश का प्रभार मुझे सौंप दिया जाये। १६ जनवरी को मैं उनके पास पहुँचा। अभी मैंने उनसे पूरी बात कही ही नहीं थी कि उन्होंने स्वयं प्रश्न किया।

'क्या तुम प्रयास के संचालन का भार सम्हालना चाहोगो' ?

उन्होंने ने मेरे मुँह की बात छीन ली थी। मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। उन्होंने मुझे भित्ति पत्रिका के बारे में सामान्य बातें समझायी हम लोगो ने विचार किया कि एक कार्यकारिणी समिति जो प्रयास का कार्य देखे अति आवश्यक है। अगले ही दिन विशाल कक्ष से यह सूचना प्रसारित कर दी गयी। शाम के समय एकत्र हुए छात्रों की संख्या हम लोगो की उम्मीद से बहुत ज्यादा थी। विशेषकर षष्ठ से अष्टम तक के क्षेत्रों का उत्साह दर्शनीय एवं प्रशंसनीय था। अन्ततः १०–१२ विद्यार्थियों की एक टीम तैयार की गई। इसमें से हिमांशु, उज्जवल सिंह, ईशान अग्रवाल, जीत सिंह आर्य, विपिन वर्मा और अभिजीत गुप्त के रुप में मुझे बहुत मेहनती और साहसी अनुज एवं सहयोगी प्राप्त हुए समीर सिंह और सौरभ सिंह ने भी प्रारम्भ से ही मेरा साथ दिया। इस टीम को सर्वप्रथम प्रयास टीम नाम दिया गया। पर मुझे लगा कि टीम शब्द में आत्मीयता का अभाव हैं। अतः प्रयास बोर्ड पर हम सबने 'प्रयास परिवार' लिखने की परम्परा शुरू की। अब हम विद्यालय में 'प्रयास परिवार' के नाम से ही चर्चित हैं।

प्रयास परिवार के गठन के तुरन्त पश्चात ही वार्षिक खेलकूद एवं सुभाष जयन्ती के दो महत्वपूर्ण कार्य थे। मुझे सुभाष चन्द्र बोस के चित्र की आवश्यकता थी। मुझे पता चला कि एकादश ख कक्षा में पवन कुमार सिंह नाम का नये विद्यार्थी का प्रवेश हुआ है। जिसकी चित्रकला बहुत अच्छी है उसे ढूँढकर उससे सुभाष चन्द्र बोस का चित्र बनाने का आग्रह किया। अगले दिन चित्र मेरे सामने था। मैं पवन की कला प्रतिभा से हतप्रत रह गया। मैंने प्रतीक सिंह से कहकर सुभाष चन्द्र बोस का जीवन परिचय सुलेख में लिखवा लिया और भौतिकी प्रयोगशाला के बाहर लगे बोर्ड पर लगा दिया। अगले ही दिन वार्षिकोत्सव विशेषांक की तैयारी प्रारम्भ हो गयी। एक बड़े ब्लैक बोर्ड पर विशेषांक लगाया गया। प्रथम चरण में क्रीड़ाचार्य श्री सुभाष जी का साक्षात्कार, वार्षिक खेलकूद का इतिहास और अन्य चीजें लगायी गयी। इस वर्ष वार्षिक खेलकूद दो दिन में ही आयोजित किये गये थे। अतः हमने मत कराया कि 'क्या वार्षिक खेलकूद का आयोजन तीन की बजाय दो दिन में करना उचित हैं। लगभग १५० छात्रों ने अपने मत व्यक्त किये। ६१ प्रतिशत छात्रों ने कहा कि दो दिन का आयोजन उचित नहीं हैं। उस दिन हमने बहुत मेहनत करके सभी खेलों के परिणाम इकट्ठे किये।

२६ जनवरी के दिन प्रयास परिवार की बैठक बुलायी गयी जिसमें प्रयास परिवार के सभी सदस्यों सहित श्रीमती शारदा राव जी ने भी भाग लिया। बैठक में कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। मुझे संयोजक नवम कक्षा के छात्र प्रतीक सिंह को सह–संयोजक, एकादश के छात्र अनुराग चतुर्वेदी को मुख्य संपादक, स्रोत गुप्त को

सह–संपादक और अन्य छात्रों को विभिन्न विभाग सौंपे गये। भित्ति पत्र के लिये आवश्यक सामग्री की सूची बनायी गयी और अनुमति लेकर कुछ ही दिनो में हमारा सामान हमें सौंप दिया गया। कुछ दिनों बाद हमने विचार किया कि हमें प्रदत्त बोर्ड आकार में छोटा है और कुछ जिस स्थान पर लगाया गया है वहाँ सभी छात्र विशेषकर छोटे–छात्र आसानी से नहीं पहुँच सकते। जुलाई से विद्यालय आते ही हमने प्रयास का संपादन पुनः प्रारम्भ कर दिया। हमने प्रयास में नयी योजनाएँ प्रारम्भ कीं। प्रारम्भ में प्रतियोगिता का आयोजन भी किया परन्तु मिलने वाली प्रविष्टियों की संख्या उत्साहजनक नहीं थी। कुछ दिनों बाद ही हम लोगों ने प्रधानाचार्य जी से अनुमति लेकर कला प्रतियोगिता करायी और पुरस्कार देने की भी योजना बनाई सूचना देने के लिये हम लोगों ने सूचना का पत्रक प्रधानाचार्य जी को दिया। कला प्रतियोगिता की घोषणा के साथ–साथ उन्होंने हस्तलेख–प्रतियोगिता की घोषणा भी कर दी। प्रतियोगिता सुचारु रूप से सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् प्रयास के माध्यम से ही हमने चित्रकूट शिविर के चित्र भी छात्रों को उपलब्ध कराये। हमारा प्रयास पुनः सफल रहा।

प्रयास को सर्वाधिक उत्साहित आदरणीय प्रधानाचार्य जी ने किया। किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि होने पर वे अविलम्ब हम लोगों को बुलाते हैं और समझाते हैं। यह भी निश्चित है कि अंक लगने के पश्चात् हमारे सर्वप्रथम पाठक वे ही होते हैं। सम्पूर्ण अंक का कोई भी अक्षर उनकी नजरों से बचता नहीं है। श्री राजेश जी एवम् श्री कैलाश जी की हम लोगो को हमेशा उत्साहित करते रहे हैं। श्री रामतीर्थ जी से हम लोगों ने कला एवं हस्तलेख प्रतियोगिता का निर्णय करने का अनुग्रह किया और उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। हम उनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करते हैं। प्रयास मात्र एक व्यक्ति का नहीं अपितु पूरे प्रयास परिवार एवं पूरे विद्यालय का सम्मिलित प्रयास है। प्रयास करने वाले ही निरन्तर सफलता के सोपान चढ़ते हैं। हमारा प्रयास भी सफलता के आकाश पर विराजमान होगा। हम प्रयास करते रहेंगे ....।

गंभीर समस्या है प्लास्टिक प्रदूषण

शिवनाथ सिंह

अष्टम 'ख'

आज के प्लास्टिक का पुरखा सेलुलाइड करीब सौ साल पहले खोजा गया था। बाद में नए–नए प्लास्टिक बाजार में आए। अब करीब सभी उद्योगों में प्लास्टिक का प्रयोग होता है। लेकिन प्लास्टिक की जल्दी न सड़ने वाली खूबी के कारण प्लास्टिक प्रदूषण की गंभीर समस्या पैदा हो गयी है। लकड़ी, कागज आदि मिट्‌टी में जल्दी सड़–गल जाते हैं किन्तु प्लास्टिक कई सालों तक नहीं सड़ती–गलती है और प्रदूषण बढ़ता है।

प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए कई लोग जमीन खोदकर इसे दबा देते है। किन्तु अगर यह तरीका सब जगह अपनाया गया तो मिट्‌टी की परतो में प्लास्टिक की परत भी बन जायेगी और ये हमारे लिए हानिकारक होगा। कभी–कभी लोग इससे निपटने के लिए इसे जला देते हैं किन्तु इससे भी समस्या का समाधान नहीं होता। इससे जहरीली गैंसे बनती हैं। इससे अनेक लोगों को बीमारियाँ हो जाती है। प्लास्टिक की समस्या से निपटने के लिए इसे पुनः चक्रण के लिये भेजा जाता है। पुनः चक्रण द्वारा बेकार प्लास्टिक को पिघलाकर पुनः नई शक्ल देकर इस्तेमाल किया जाता था। किन्तु पुनः चक्रित प्लास्टिक घटिया किस्म के होने के कारण बेकार होती है। बेकार तथा दूषित प्लास्टिक से पैदा होने वाली समस्या के निदान के लिए अनेक उपाय खोजे जा रहे हैं।

सरकार ने इस दिशा में प्रयास किये हैं। और "प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेन्ट टास्क फोर्स" का गठन किया है। परन्तु केवल सरकारी प्रयासों से प्लास्टिक प्रदूषण की समस्या समाप्त नहीं हो सकेगी। इस दिशा में हमें भी जागरूक होना चाहिये। इससे निपटने के लिए एक आसान तरीका यह है कि हम प्लास्टिक से बनी चीजों का बहुत कम से कम इस्तेमाल करें। हम सब यह प्रण लें कि प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का प्रयोग कम करें तथा अपने देश को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त कराने में सहयोगी बनें।

बहुतेरे रोगों की दवा तुलसी

✍ मुनीश शर्मा

अष्टम 'क'

तुलसी किडनी की कार्यशक्ति बढ़ाती है। तुलसी के रस में शहद मिलाकर रोगी को देने से किडनी की पथरी निरन्तर सेवन करने से निकल जाती है। तुलसी के सेवन से हृदय रोग से पीड़ित कई रोगियों के हाई ब्लड प्रेशर सामान्य हो जाते हैं, हृदय की दुर्बलता कम होती है और रक्त में चर्बी की वृद्धि रुकती है जिन्हें पहाड़ी स्थानों पर जाने की मनाही थी, ऐसे अनेक रोगी तुलसी के नियमित सेवन के बाद आनंद से ऊँचाई वाले स्थानो पर हवाखोरी के लिये जाने में समर्थ हुए।

कलकत्ता की 'माडर्न–रिव्यू' नामक पत्रिका में सर्प के दंश पर तुलसी के अद्भुत प्रभाव की एक घटना प्रकाशित हुई थी – एक व्यक्ति को साँप ने काट लिया था। वह गाँव में रहता था। अतः आठ घण्टे तक कोई वैद्य वहाँ पहुँच नहीं सका। जब एक वैद्य वहाँ पहुँचा तब वह व्यक्ति बेहोश पड़ा हुआ था। वैद्य ने तुलसी की पत्तियों को पीसकर उसका रस निकाला। फिर उसको रोगी के सीने, चेहरे और कपाल पर खूब घिसा। केले के तने का रस और तुलसी की पत्तियों का रस दस–दस ग्राम की मात्रा में थोड़े–थोड़े समय के अन्तर से उसे पिलाया। इस चिकित्सा के परिणाम स्वरूप रोगी सम्पूर्ण स्वस्थ हो गया। यही प्रयोग राम कृष्ण मिशन के एक आश्रम में भी सफल हुआ था।

जहाँ भी तुलसी की पत्ती होगी उसके आस–पास छः सौ फुट के क्षेत्र की हवा उससे प्रभावित होती है। परिणामस्वरूप मलेरिया, प्लेग तथा टी०वी० कीटाणु नष्ट हो जाते है। जीवन सखा नामक पत्र के नवम्बर १६४० के अंक में श्री विश्वनाथ प्रसाद द्वारा प्रकाशित हुआ था। उनके ३५ वर्षीय एक मित्र बीमार पड़ गये। दिन प्रतिदिन उनका शरीर क्षीण होने लगा। अनेक वैद्य–डॉक्टरों का इलाज किया गया किन्तु रोग मिटा नहीं। अन्त में उन्हें पटना के सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया। वहाँ डॉक्टरों ने बताया कि उनका कलेजा दुर्बल है। उन्होंने मछली का तेल तथा अन्य मूल्यवान, औषधियों का सेवन करने की सलाह दी। उनका भी प्रयोग किया गया, किन्तु परिणाम शून्य रहा। चिकित्सकों ने उनक रोग को असाध्य घोषित कर दिया। इससे घर के लोग निराश हो गये। सभी ने मान लिया कि अब उनका अन्त समय आ पहुँचा है। हिन्दू मान्यता के अनुसार उन्होंने अपने अंत समय में गंगा मैया की गोद में ही शेष दिन बिताकर शरीर त्याग करने का निश्चय कर दिया। सौभाग्य से एक महात्मा घूमते फिरते वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने रोग का कारण पूछकर रोग के लक्षण तथा अन्य विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली। फिर बोले प्रातःकाल कुछ भी खाये बिना तुलसी और गंगाजल का सेवन कीजिये। उनकी सूचना के अनुसार कार्य किया गया। वैद्यों तथा डॉक्टरों ने जिस रोग को असाध्य घोषित कर दिया था। वह रोग एक माह के भीतर ही निर्मूल हो गया। फिर वह कभी न हुआ।

एक युवक को वर्षो से हर माह छः सात दिनों के लिये ज्वर आ जाता था। उसने तीन माह तक लगातार तुलसी के काढ़े का प्रयोग किया। ज्वर आना बिल्कुल बन्द हो गया। एक सज्जन को पन्द्रह वर्षों से सिरदर्द रहता था। तुलसी के नियमित उपचार के बाद उनका दर्द दूर हो गया। एक बच्चा बचपन से मंद बुद्धि का था। सोलह वर्षो तक उसके अनेकों उपचार हुए। किन्तु उसकी बौद्धिक मंदता दूर नहीं हुई। तुलसी के नियमित सेवन से दो महीने के भीतर बुद्धिमत्ता के लक्षण दिखाई पड़े। समय बीतने पर वह और भी अधिक बुद्धिशाली हो गया।

साइनस की तकलीफ वाले एक युवक को डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी। वह तैयार हो गया था। किन्तु एक वैद्य जी सलाह की से उसने दो सप्ताह तक तुलसी का सेवन किया। बस उसका सर्दी, जुकाम दूर

हो गया और वह ऑपरेशन से बच गया। तुलसी ब्लड–कॉलेस्ट्रोल को बहुत तेजी के साथ सामान्य बना देती है। तुलसी के नित्य सेवन से एसिडिटी दूर होती है। पेचिश, कोलाइटिश आदि मिट जाते हैं। स्नायु का दर्द, जुकाम, सर्दी, सफेद दाग, सिरदर्द आदि में यह गुणकारी है। बच्चों के कुछ रोगों में विशेषकर सर्दी, दस्त, उल्टी और कफ में तुलसी अकसीर है। ह्रदय रोग, अनुवांशिक निर्बलता और बीमारी में तुलसी के उपयोग से आश्चर्यजनक सुधार होता है।

तुलसी स्त्री, पुरुष तथा बच्चे तीनों के रोगों में समान रूप से लाभप्रद है। इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि इसके सेवन से लाभ होता है, हानि जरा भी नहीं होती।

"प्रतिदिन तुलसी–बीज, जो पान संग नित खाय।
रक्त धातु दोनों बढ़े, नामर्दी मिट जाए।
ग्यारह तुलसी पत्र जो, स्याह मिर्च संग चार
तो मलेरिया इकतरा, मिटे सभी विकार।
ब्राह्मण तुलसी, पीपला, गाय और फिर गंग।
इनसे बढ़कर कुछ नहीं, सदा कीजिये संग।।
जिनके घर तुलसी और गाय।
रोग न उसके घर पर जाये।।
यह स्वास्थ्य का है सार।
गाय और तुलसी हो द्वार।।"

आहार विहार का विशेष ध्यान न रखने से अनेक प्रकार की वातव्याधियाँ हो जाती हैं जिनमें ग्रधसीवात भी एक है। इस रोग में एक नाड़ी विशेष में पीड़ा होती है। कूल्हे की संधियाँ, कमर, पीठ, पेट, जाँघ तथा पैर में शूल चुभने की सी वेदना होती हैं। कूल्हे की शिरायें संधियाँ बार–बार काँपती है। यह रोग कमर से पैर के घुटने तक होता है। तुलसी की पत्तियों को पानी में उबालकर दर्द वाले भाग पर उसकी भाप देने से इस रोग से लाभ होता है।

जो लोग चाय और तम्बाकू के व्यसनों से मुक्त होना चाहते हैं, उन्हें चाय और तम्बाकू के बदले तुलसी के काढ़े का उपयोग करना चाहिये। तुलसी के साथ काली मिर्च भी चबायें। इस प्रकार के सेवन से शराब की लत से भी मुक्ति प्राप्त होगी।

तुलसी की पत्तियाँ, बीज तथा टहनियाँ औषधि का काम करती है। इसकी जड़ से ज्वर का प्रकोप शांत हो जाता है इसके बीज वीर्य को गाढ़ा करते हैं। उसमें पाचन शक्ति बढ़ाने का अद्भुत गुण है।

किसी भी प्रकार के विष विकार में तुलसा का स्वरस यथेष्ट मात्रा में पीना चाहिये। इससे विष निवृत्ति में राहत मिलती है। धतूरा, कुचला तथा अफीम जैसा कोई विष खाने में आ गया हो तो तुलसी की पत्तियाँ को पीसकर गाय के घी में मिलाइये उसे रोगी को खिलाइये। घी की मात्रा रोग की तत्कालीन अवस्था के अनुसार १०० ग्राम से ५०० ग्राम तक रखें। एक बार के सेवन से आराम मालूम न हो तो बार–बार तुलसी घृत का सेवन कराइये।

आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में भी तुलसी की विषनाशक शक्ति का उल्लेख मिलता है चरक संहिता में कहा गया है– "सर्प के विष पर कुचला, तुलसी, इन्द्रायण, साठी पीलू और काली सरसों के बीज को एक साथ पीसकर दंश पर लगाइये, नाक में टपकाइये और कुछ हिस्सा पिला दीजिये।"

ऐसे करें परीक्षा की तैयारी

मनीष कुमार तिवारी

षष्ठ 'क'

अक्सर हम लोग परीक्षा को बहुत कठिन कार्य समझ लेते हैं। ऐसा मान लिया जाता हैं कि उससे पार पाना हमारे या आम विद्यार्थी के वश की बात नहीं है। कइयों को परीक्षा–ज्वर से ग्रस्त हो इधर–उधर नाहक अथवा रोना रोते हुए देखा–सुना जा सकता है कि अपनी तरफ से तो रात–दिन पढ़ने में एक किए रहता हूँ, परिणाम पता नहीं क्या होगा ? या फिर सिर उठाकर इधर–उधर तक नही देख पाता। अक्सर ऐसे मुहावरे भी सुनने–पढ़ने को मिल जाया करते हैं कि उसके सिर पर तो परीक्षा का भूत सवार है। बेचारा हर समय किताब लेकर बैठा रहता है या फिर पता नहीं क्या होगा ? अपनी ओर से तो बहुत परिश्रम कर रहा हूँ। परीक्षा की तैयारी को लेकर और भी इस तरह की कई बातें कहीं–सुनी जाती हैं।

हमारा विचार है कि इस तरह की बातें कहने–करने वाले यदि सचमुच मन लगाकर पढ़ रहे होते हैं, तो निश्चित ही उन्हें परीक्षा से घबराने या डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। हाँ, यदि किताब सामने खोलकर केवल पढ़ने का बहाना कर रहे होते हैं, मन–मस्तिष्क कहीं अन्यत भटकने के लिए खुले छोड़ रखे होते हैं, तो ऐसे व्यक्ति को असफल होने से स्वयं भगवान भी आकर नहीं बचा सकते। केवल विद्यालय आदि की परीक्षाओं में ही नहीं, बल्कि जीवन की कदम–कदम पर सामने आने वाले किसी भी परीक्षा में ऐसा आदमी कभी सफल नहीं हो पाया करता।

वास्तव में विद्यार्थी की परीक्षा की तैयारी कक्षा–भवन से ही आरम्भ हो जाया करती है। शिक्षक महोदय जो कोई विषय भी कक्षा मे पढ़ा या समझा रहे हैं, उसे एकाग्र मन–मस्तिष्क से पढ़–सुनकर समझना, समझ लो कि परीक्षा की आधी तैयारी वहीं हो गई उसके बाद तो उस पढ़े–समझे को मात्र दोहराते रहने की ही जरुरत रह जाया करती है। हाँ, दोहराने का एक खास तरीका होना चाहिए। वह यही हो सकता है कि छुट्टी के बाद घर पहुँच कर नाश्ता या खाने और कुछ विश्राम करने के बाद स्वस्थ और एकाग्र मन से बैठकर कुछ देर सोचें कि शिक्षक महोदय ने आज कक्षा में क्या पढ़ाया था ? सोचने–विचारने के बाद सम्बन्धित विषय की ही पुस्तक निकाल कर, यदि नोट्स लिए हों, तो उन्हें निकालकर एक बाद ध्यान से पढ़ा जाए। इस एक बार पढ़ने से ही पता चल जाएगा कि कितना समझाया और कितना याद है या हो चुका है। इसके बाद एक–दो या आवश्यकतानुसार अधिक बार उस सब को पढ़कर उसी दिन या अगले दिन या फिर कभी भी किन्तु जल्दी उसे पढ़ें और याद किये को केवल स्मृति के आधार पर लिखने का प्रयत्न करें। लिखते समय आवश्यकता पड़ने पर पुस्तक या कक्षा में लिए गए नोट्स से भी सहायता लें। ऐसा करने से एक तो लिखने का अभ्यास हो जाएगा, दूसरे पढ़ा हुआ अच्छी तरह याद भी हो जाएगा। तीसरे यह भी पता चल जाएगा कि एक प्रश्न कम से कम कितने समय में लिखा या एक प्रश्न का कितने समय में उत्तर दिया जा सकता है। बस हो गई परीक्षा की तैयारी।

ऐसा नित्य प्रति करते रहने वाले के लिए परीक्षा भूत या कठिन नहीं रह जाती। ऐसा सब करने के बाद फिर तो बस उस लिखे प्रश्न को कभी–कभी दोहरा लेने की आवश्यकता ही रह जाती है, ताकि भूले नहीं। एक बार ऐसा करके देखिए और फिर देखिए अपना परीक्षा–परिणाम, निश्चय ही वह आशा से कहीं अच्छा होगा विश्वासपूर्वक, मन लगाकर ऐसा करने वाला कभी असफल नहीं हो सकता, हमारा दृढ़ विश्वास है।

जातिविहीन समाज की जरुरत

रोहित कटियार

अष्टम 'क'

हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा होता है कि जाति व्यवस्था का भविष्य क्या है ? वास्तविकता यह है कि भारत में जाति–व्यवस्था को देखते हुए अनेक समाज सुधारक और विद्वान इस पक्ष में हैं कि जाति व्यवस्था को पूर्णतया समाप्त करके एक जातिविहीन समाज की स्थापना की जाए। परन्तु क्या यह सम्भव है? इस समस्या का समाधान करने के लिए हम उन परिस्थितियों का ध्यान रखें, जो भारत में इतने लम्बे समय से जाति व्यवस्था की स्थिर बनाए हुए हैं। इस आधार पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि भारत में एक जाति–विहीन समाज की स्थापना यदि संभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

आज हमारे समाज में जातियों की उत्पत्ति और जाति से संबंधित व्यवहारों को धर्म की पृष्ठभूमि से स्पष्ट किया जा रहा है। आज भी लोग जाति के नियमों को पवित्र और ईश्वरीय नियमों के रूप में देखते हैं। इस प्रकार भारतीय समाज में जब तक परम्परागत रुढ़िवादिता और ऊँच–नीच पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाता है, तब तक यहाँ एक जाति–विहीन समाज की स्थापना नहीं की जा सकती है।

भारत में कर्मफल की धारणा में सभी हिन्दू विश्वास करते है। चाहें सनातनी हो या शाक्य। जातिव्यवस्था व्यक्ति को यह विश्वास दिलाती है कि उसने पूर्वजन्म में जिस प्रकार के कर्म किए हैं। उसी के अनुसार उसे एक विशेष जाति की सदस्यता मिली है। इस प्रकार आज भी लोग जाति–व्यवस्था के नियमों का उल्लंघन करके अपना आगामी जीवन बिगाड़ना नहीं चाहते हैं। यह स्थिति भी भारत में जाति–विहीन समाज की स्थापना में बड़ी बाधा है।

आजकल तो राजनीति में भी जाति व्यवस्था का प्रभाव पड़ रहा है। राजनीतिक पार्टियाँ भी जाति आधारित वोट बैंक पर ही चुनाव लड़ती हैं। और जाति के आधार पर ही उम्मीदवार को खड़ा करती हैं। कई पार्टियाँ तो जाति के आधार पर ही बनी हैं। जब हमारे देश में इस प्रकार की जाति आधारित राजनीति हो, तो जाति–विहीन समाज की स्थापना कैसे संभव है ?

संसार का कोई भी ऐसा समाज नहीं है, जहाँ सभी सदस्यों की सामाजिक स्थिति पूरी तरह से समान हो। सामाजिक असमानता कहीं प्रजाति के आधार पर, कहीं जाति के आधार पर है। सभी व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति समान नहीं रह सकती।

कुछ लोगों का विचार है कि यदि कानून के द्वारा जाति–व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाए तो भारत मे जाति विहीन समाज की स्थापना संभव है। यह विचार भी व्यवहारिक नहीं है। भारत में कानूनी रूप से सभी जातियों को समान अधिकार दिए हैं। इसके बाद भी भारत में जाति व्यवस्था का प्रभाव बना हुआ है। इस प्रकार भारत जैसे देश में जातिविहीन समाज की स्थापना करना सम्भव तो है लेकिन बहुत कठिन है।

क्रूर मिले मगरूर मिलै रसनूर मिलै धरे सूर प्रभा को।
ज्ञानी मिलै औ गुमानी मिलै सनमानी मिलै छबिदार पताको।
राजा मिलै अरु रंक मिलै कवि बोधा मिलै निरसंक महा को।
और अनेक मिलै तौ कहा नर सो न मिल्यौ मन चाहत जाको।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन जरुरी

✍ प्रकाश चंद्र त्रिवेदी

एकादश 'क'

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भमिका होती है। इसी के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सामाजिक रूप से योग्य नागरिकों का निर्माण होता है और यही नागरिक किसी राष्ट्र की पहचान होते हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश आधुनिक शिक्षा व्यवस्था इस कसौटी पर खरी नहीं उतरी। बहुत से लोग यह अनुभव करते हैं कि यह हमारी आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। अनेक शिक्षाविद् यह माँग करते हैं कि इसे आवश्कतानुरूप एवं मूल्यों पर आधारित बनाया जाये। कुछ विद्वानों की राय है कि इसे मानव निर्माण एवं सदाचरणों से जोड़ा जाये।

आइये, हम इस बात पर विचार करें कि क्या कभी हमारे देश में उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था थी ? यदि हम अतीत की ओर दृष्टिपात करें तो यह पाते हैं कि प्राचीनकाल में सर्वोत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था, ज्ञान एवं कौशल पर आधारित थी जिससे समाज में शिक्षित तथा शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व का विकास होता था। गणित, भूगोल शास्त्र, ज्योतिष विज्ञान, औषधि टेक्नोलॉजी, न्याय, अर्थशास्त्र आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नति हुई।

किन्तु आज उस महान शिक्षा व्यवस्था की कैसी दुर्दशा है उसके विचार मंथन हेतु हम उस समय का अवलोकन करते हैं जब भारतवर्ष में अंग्रेजों का आगमन हुआ। इग्लैण्ड में बड़े लम्बे विचार मंथन के पश्चात भारत में लागू होने वाली ब्रिटिश शिक्षा नीति से सम्बन्धित सूत्र निश्चित किये गये। ऐसा करते समय उनके सामने शिक्षा नीति से सम्बन्धित कई मूलभूत प्रश्न थे जैसे शिक्षानीति का उद्देश्य क्या हो ? कैसी शिक्षा दी जाये पाश्चात्य एवं यूरोपीय शिक्षा, किस माध्यम से शिक्षा दी जाए। ३१ जुलाई सन् १८२३ को गवर्नर जनरल लार्ड अहमर्स्टन ने १० सदस्यीय एक सार्वजनिक शिक्षा समिति की नियुक्ति की जिसका उद्देश्य भारत में ऐसी शिक्षा का प्रचार करना था जिससे वे केवल प्रशासन का कुशल कार्मिक बनें। यहीं से भारत की शिक्षा सत्र पराभव प्रारम्भ हुआ।

सन् १८३४ में लार्ड मैकाले भारत पहुँचे जिसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली लागू की। उस व्यक्ति ने वास्तव में भारतीय ज्ञान सम्पदा का सर्वाधिक उपहास उड़ाया। उन्हीं की टिप्पणी के आधार पर बेटिक ने १८३५ में शिक्षा के लिए निर्धारित धनराशि केवल यूरोपीय साहित्य एवं विज्ञान की उन्नति के लिए खर्च करने की घोषणा की। जिसका उद्देश्य यूरोपीय देशों की उन्नति करना था। वस्तुतः उस शिक्षानीति का उद्देश्य पुरानी शिक्षानीति से उत्पन्न होने वाली भारतीय संस्कृति जो इस देश की संस्कृति से जुड़ी हुई थी और उसकी निष्ठा की जड़ें देश की मिट्टी में गहराई तक थी उन्हें खोदकर नयी नीति से भारतीय नागरिकों का निर्माण करना था।

मैकाले का उद्देश्य ऐसे शिक्षित भारतीयों का निर्माण करना था जो कि रक्त एवं रंग से भारतीय हों परन्तु वे विचार आचार एवं ज्ञान की दृष्टि से अंग्रेज हों, और तभी से आज तक हमारे राष्ट्र में वही स्वार्थपूर्ण शिक्षा विद्यमान है जो निरन्तर राष्ट्र को गड्ढे में गिराती जा रही है। चिन्ता का विषय यह है कि स्वाधीनता के ५४ वर्षों के पश्चात भी इस शिक्षा प्रणाली को लगातार निन्दा करने एवं उसे आमूल चूल परिवर्तन करने की उच्चस्तरीय घोषणाओं के बावजूद इस स्वतंत्र भारत की निन्दित शिक्षा प्रणाली का दिन दूनी चौगुनी रात की गति से विस्तार होता जा रहा है। वास्तव में एक संस्था से भेंट में उनके अध्यक्ष ने कहा कि हमें तो खिले–मुस्कराते चेहरे चाहिए परन्तु हमें कुण्ठित चेहरे प्राप्त होते हैं वास्तव में आज अनेक छात्रों पर पढ़ाई का ऐसा बोझ सा हो गया है जिससे उन्हें देश एवं आचार–विचारों को सोचने का समय ही प्राप्त नही होता।

वास्तव में शिक्षा व्यवस्था का भारतीय करण होना अत्यन्त आवश्यक है। युवा पीढ़ी को देश के गौरवपूर्ण संस्कृति तथा जन समुदाय के साथ आत्मसात करना आवश्यक है जिससे राष्ट्र के विकास में वह सहायक बनें।

आइये हम अपने देश को ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली से मुक्त कराने में प्रयासरत हों। ●

हिन्दुओं के राष्ट्र में हिन्दुत्व की उपेक्षा

✍ कुमार सौरभ

एकादश 'क'

कैसा विचित्र समय आया है कि हिन्दुस्तान में ही हिन्दू और हिन्दुत्व की बात करने वाला कठघरे में खड़ा किया जाता है। राम के देश में राम बंदी हैं, सरकारें अंधी हैं। राम का जन्म स्थान विवादित कर दिया गया है। देश में सांप्रदायिक उत्तेजना और मजहबी उन्माद भड़काने वाले देश की पराजय के जितने भी प्रतीक हैं जब तक वे बने रहेंगे तब तक आक्रमणकारियों को अपना मानने वाले लोग भारत के साथ भावात्मक रुप से कभी समरस और एकात्म हो ही नहीं सकते। अविश्वास और अलगाव का संकट तब तक ही रहेगा। भारतवर्ष का प्रबल झुकाव यद्यपि शाश्वत की ओर है फिर भी उसकी संस्कृति और दर्शन में सनातन और सांसारिकता का प्रबल समन्वय है। उसे इस समन्वय को कहीं बाहर से प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग श्री राम का निषेध करते हैं वो एकता में नहीं एकरुपता में विश्वास करते हैं। विविधता नहीं, एकात्मता नहीं अलग–अलग और टुकड़ों में बँटे रहकर अपने अपने मजहबी बटखरे से मानवता और मानव धर्म को तोड़ना और बाँटना ही उनका उद्‌देश्य है।

–संपादक

एक हिन्दू राष्ट्र होने के पश्चात् यहाँ पर हिन्दुत्व के बारे में लिखना या बोलना साम्प्रदायिकता को हवा देना समझा जाता है। लेकिन फिर भी आज की आवश्यकता बन पड़ी है कि हम किशोर वर्ग ही सोए हुए हिन्दुस्तान को जगाएँ क्योंकि इस राष्ट्र के तथाकथित भाग्य–विधाता अपनी वोट–बैंक की राजनीति तथा कुर्सी के फेर में इस देश को बेच देने पर तुले हुए हैं। अब मूलतः अपने विषय पर आते हुए मैं कहना चाहूँगा कि हिन्दुस्तान की आजादी के बाद यह सोचा गया चलो बारह शताब्दियों की परतन्त्रता की बेड़ियों से आजाद होकर अब हम उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान होंगे। मगर परिणाम–वही ढाक के तीन पात। पचास वर्षों के पश्चात् किसी देश की शासन व्यवस्था इतनी जड़, संवेदन शून्य तथा अकुशल होगी जो अपने नागरिकों को जलाए जाने से भी न चेतै, यह सोचने वाली बात है।

गोधरा हत्याकाण्ड केवल कारसेवकों की निर्मम हत्या नहीं है वरन् थोड़े से मुस्लिमों द्वारा इस देश की संस्कृति, प्रथाओं तथा मान्यताओं के मुख पर करारा तमाचा है। अगर अब भी हम चुप बैठे रहे तो कहीं ऐसा न हो कि ये वर्ग हमारे देश के सारे मन्दिरों को ही जला दें। विश्व हिन्दू परिषद द्वारा के अयोध्या में बहुप्रतीक्षित राम मन्दिर बनवाने का ऐलान कर हमारे अन्दर का हिन्दुत्व जगा दिया गया है। अब तो वह जन सैलाब उमड़ना चाहिए जो हमारे सारे रुके कार्यो को पूरा कर सके। कुछ सालों पहले उड़ीसा में ईसाइयों द्वारा जबरन धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। जिस पर एक हिन्दू ने उनके प्रमुख पादरी को ही नेस्तनाबूत कर दिया था। तब इस देश के सारे राजनेताओं ने तथा सारी सामाजिक समितियों ने इस घटना का विरोध ही नहीं किया, साथ ही इसे भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर थोपकर एक बार फिर राष्ट्रभक्ति को कलंकित किया। राजनेताओं ने तो यहाँ तक कह दिया कि इस देश में ईसाई सुरक्षित नहीं हैं। पर आज जब कारसेवकों की निर्ममता से हत्या हुई तो समूचा राजनीतिक गलियारा मौन क्यों है ? किसी के पास उन कारसेवकों के लिए दो श्रद्धांजलि के बोल भी नहीं है। क्या यह सोचना उनकी गलती है कि हमें राम की पूजा करनी चाहिए ? जिस राजनीतिक दल को जनता ने राष्ट्रभक्त तथा हिन्दुत्व का रक्षक मानकर देश की सत्ता उनके हाथ में सौपी, क्या उस दल द्वारा अपने सिद्धांतों को भूल जाने पर भारत माता आहत न होगी ? अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है, अभी सन् ८४ के

सिख–हिन्दू दंगे में मौत का नंगा नाच इस देश को दहला कर चुका है। एक बार फिर वही स्थिति पुनः आ सकती है क्योंकि इस देश के मुसलमान खाते हिन्दुस्तान का हैं और बजाते पाकिस्तान का हैं। उनके ही गुण गाते हैं, उन्हीं के प्रति अपनी भक्ति दिखाते हैं। यह सब सरासर देशद्रोह है फिर भी हमारी सरकार खामोश है। मैं यहाँ पर कोई सियासी भाषण नहीं लिख रहा हूँ, इसलिए मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि यहाँ पर लिखा एक–एक शब्द आम नागरिक की दिली इच्छा है जो उनके मन में हैं। उन्हें कोई प्रस्तावित, मंच नहीं मिल रहा है जिससे वे इन्हें प्रकट कर सकें।

मै यह स्पष्ट कर दूँ कि यहाँ पर हिन्दू तथा मुस्लिमों की धार्मिक विचारधारा पर बात करना व्यर्थ है। भारत हिन्दुओं का है और मुसलमान यहाँ रहते हैं, जो हम हिन्दुओं की धार्मिक उदारता का ही परिणाम है। हमारा धर्म सौहार्द का धर्म है, यहाँ धार्मिक उन्माद नहीं है, सहिष्णुता है। इस देश में सबकी अपनी–अपनी पूजा–पद्धतियाँ तथा मान्यताएँ है तो भी सिर्फ हिन्दुओं को उनके पूजा–स्थल पर मन्दिर के निर्माण पर रोक क्यों है ? यह कहना कि मन्दिर विवादित स्थल पर बन रहा है, बेमानी है। क्योंकि हमने तो यह कभी नहीं कहा कि ताजमहल विवादित भूमि पर है, लालकिला विवादित भूमि पर है, जामा मस्जिद विवादित भूमि पर है। यह देश हमारा है, यह जमीन हमारी है, तो फिर हमारे ही ऊपर मन्दिर बनवाने पर रोक क्यों ? क्या यह अधिकारों का हनन नहीं है ? कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि इससे हिन्दु तथा मुसलमानों के बीच की खाई और बढ़ेगी लेकिन जब मुसलमानों ने जामा मस्जिद, ताजमहल लाल किला, मकबरे बनवाये तब तो न कोई दंगा हुआ और न हीं दूरियाँ बढ़ी तो फि यह तर्क तो बेमानी हुई।

वैसे इस बात तथा बहस का कहीं अन्त नहीं है फिर भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर अब भी हिन्दुस्तान के नागरिकों में देशभक्ति नहीं जन्म लेती तो वह दिन दूर नहीं जब इस देश की सत्ता पाकिस्तान के हाथों में चली जाएगी। कहने वाले कह सकते है कि यह सब बेकार की तथा उत्तेजक बाते हैं। पर मैं एक बात का स्पष्ट कर दूँ कि मुसलमान भारतीय संविधान के प्रत्येक नियम–कानून का खुलेआम उल्लंघन करते हैं और उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है लेकिन इस कार्य में उनकी मदद करने वाले कई नेतागण हैं। यदि कोई हिन्दू इस प्रकार का कार्य करता हैं तो इन सांसदों द्वारा संसद नहीं चलने दी जाती है।

मेरे कहने का यह तात्पर्य यह नहीं है कि हिन्दू–मुस्लिम बिलकुल तलवार लिए आमने–सामने खड़े हो जायें तथा लड़ने लगे। वरन् मेरी तो यही इच्छा है कि आपसी भाईचारे सौहार्द तथा सुख शान्ति से इस देश को आगे बढ़ायें। मजहब क्या होता है यह सब कुछ तो हमारा बनाया गया है। कोई बच्चा जन्म लेते ही मुसलमान या हिन्दू नहीं होता है। भगवान थोड़े ही उस पर यह ठप्पा लगाकर भेजते हैं कि तू मुस्लिम, तू हिन्दू, तू सिख, तू ईसाई है। सबकी रगो में बहने वाला खून लाल ही है, हरा या पीला नहीं, सबके मुँह में दांत हैं, सबके दो हाथ हैं तो फिर भेद कैसा। आखिर वह कौन सा जुनून है जो कोई अन्तर न होने पर भी अन्तर उत्पन्न कराकर वहशियाना हरकत करवाता है। ये सवाल आपके लिए हैं जिस का जवाब ही इस जुनून का निदान है।

इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअम्भ पर,
रावण–सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाहु पर,
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।
दावा द्रुम–दंड पर चीता मृग–झुंड पर,
'भूषन' वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंश पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों म्लेच्छ वंश पर शेर शिवराज हैं।

प्रसंग

भूल जाता हूँ

शौर्यजीत सिंह

द्वादश 'क'

भूलना मनुष्य का स्वभाव है। कुछ लोग बहुत कम भूलते हैं तो कुछ लोग यह भी भूल जाते हैं कि उन्होंने खाना खाया है या नहीं। व्यर्थ विषाक्त और असार बातों को हमे भूल जाना चाहिये और श्रेष्ठ चीजें स्मरणागार में रखनी चाहिये। भुलक्कड़ी पर शौर्य जीत का एक प्रसंग। – *संपादक*

मैं पुराना 'भुलक्कड़ हूँ, इसीलिए रसायन विज्ञान मेरा प्रिय विषय नहीं है। कक्षा में आते ही जब आचार्य जी धडल्ले से १५–२० अभिक्रियाएँ लिख देते हैं तो मुझे उनमें आइंस्टीन के दर्शन होते हैं। मैं राबर्ट लिन्ड के इस विचार से भी पूर्णतया असहमत हूँ कि व्यक्ति, जिस बात को भूलना चाहता है, उसे ही भूलता है। भला मैं कब चाहूँगा कि मैं अपने किसी मित्र का अथवा आचार्य जी का नाम भूल जाऊँ, फिर भी कभी कभी कई सेकेण्ड तक उनके नाम मेरे मस्तिष्क से पूर्णतया उड़े हुए होते है। अपने कापी, किताब व पेन किसी को देकर भूल जाना और बाद में उसे खोजते हुए परेशान होना मेरे लिए बहुत ही सामान्य बात है। अपनी भुलक्कड़ी की अब तक की श्रेष्ठतम घटना मुझे अब तक भूली नहीं है।

पिछले ही वर्ष की गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने माता पिता जी के पास आजमगढ़ गया था। वहाँ मेरा चचेरा भाई शशांक भी रहता था। घर के पास मैं ही एक जनरल स्टोर था दैनिक उपयोग की चीजों को लेने के लिए मैं वहाँ पैदल ही चला जाया करता था। एक दिन मुझे कुछ विद्युत उपकरण लेने के लिए मुख्य बाजार तक जाना था। मुख्य बाजार घर से थोड़ी दूरी पर था, इसलिए वहाँ जाने के लिए मैंने शशांक की साइकिल ले ली। लौटते समय विद्युत उपकरण लेने के बाद मैं जनरल स्टोर पर पहुँचा। साइकिल बिना ताला लगाए ही खड़ी कर दी और सामान लेने लगा। चूँकि वहाँ तक मुझे पैदल आने जाने की आदत थी अतः सामान लेकर, साइकिल की तरफ बिना कोई ध्यान दिये मैं घर लौट आया। उस समय तकरीबन दोपहर के साढ़े ग्यारह बज रहे थे। घर पर आकर भी मुझे साइकिल का ध्यान नहीं था। मैंने नहा धोकर भोजन किया और सो गया। शाम को उठा और कॉपी किताब लेकर बैठ गया। उस समय शाम के पाँच बज रहे होंगे। मैंने कुछ ही सवाल लगाये थे कि शशांक आया और पूछा, "भैया, मेरी साइकिल ?" मैंने कहा – "नीचे खड़ी होगी।" उसने कहा – "नहीं हैं।" मैने कहा – "वहीं होगी देखो।" "मैंने हर जगह देख लिया है कहीं नहीं हैं।" शशांक के ये कहने पर मुझे याद आना शुरू हुआ – "मैं साइकिल लेकर तो गया था, पर वापस ...... शायद आया था या शायद नही।" काफी देर तक सोचने पर याद आया कि साइकिल तो जनरल स्टोर पर ही है। साइकिल को वहाँ बिना ताले के छोड़े छह घण्टे हो गये थे। साइकिल मिलने की उम्मीदें धूमिल थीं, फिर भी आशावादी होनें के कारण मैं शशांक को लेकर वहाँ गया। दुकान के समीप बैठे मोची ने साइकिल अपने पास खडी कर ली थी। माँगने पर मोची ने कहा – "साइकिल मेरे पास पाँच घण्टे से हैं', मैंने जवाब दिया, "पर मेरे पास तो पाँच महीने से थी"।

काफी हुज्जत के बाद उसने साइकिल दी और हम लोग साइकिल लेकर घर वापस आए। आज भी यदि कोई सहपाठी किसी विषय की कापी भूलने की बात करता है, तो मुझे यह घटना याद आ जाती हैं। मेरे विचार से यह बहुत बड़ी घटना नहीं थी, क्योंकि भूलना मनुष्य का सहज स्वभाव है। यदि बहुत से लोग अपनी साइकिल न खोएं तो साइकिल कम्पनियाँ बन्द हो जायेंगी कई चीजें भूलना भी जरुरी होता है।

गोधरा हत्याकांड पर प्रतिक्रियाएँ

✍ मदन मोहन मालवीय

ताकि सनद रहे.....

⊙ गोधरा से लेकर अहमदाबाद और फिर अन्य स्थानों पर जो हिंसक घटनायें हुई हैं वह सारे देश के माथे पर कलंक है। विश्व हिन्दू परिषद को चाहिए कि वह गुजरात में साबरमती एक्सप्रेस पर हुए हमले से उत्पन्न तनाव को देखते हुए अयोध्या में मंदिर निर्माण का आन्दोलन तुरन्त समाप्त कर दें।

— अटल बिहारी वाजपेई, प्रधानमंत्री

⊙ जो लोग अशान्ति फैलाते हैं सरकार उन पर हाथ डालने की हिम्मत नहीं करती। अब हम मंदिर निर्माण से पीछे नहीं हटेंगे। हम कानून तोड़ने नहीं जा रहे हैं। सरकार को चाहिए कि वह ६७ एकड़ गैर विवादित भूमि हमें सौंप दे। उसे किसी तरह की अपील करनी है तो वह धर्माचार्यों से बात करे।

— आचार्य गिरिराज किशोर, उपाध्यक्ष विहिप

⊙ विहिप ने अयोध्या में हजारों कारसेवकों को एकत्र करके मंदिर निर्माण कार्यक्रम की जो घोषणा की है, उसके खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। जो कोई भी न्यायालय के आदेश के उल्लंघन की कोशिश करेगा तो, सरकार उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही करने में बिल्कुल नहीं हिचकिचायेगी।

— लालकृष्ण आडवाणी, गृहमंत्री

⊙ आडवानी बातें अधिक करते हैं और काम कम करते हैं। पिछले १८ साल से यह आन्दोलन चल रहा है लेकिन आज तक उन्होंने इस मुद्दे के हल के बारे में कोई भी फार्मूला नहीं सुझाया और आज फिर चढ़ कर बोल रहे हैं, क्यों नहीं कोई फार्मूला बताते हैं ?

— ओंकार भावे, संयुक्त महामंत्री (विहिप)

⊙ जब से अटल जी ने आँखे बंद करके बोलना शुरु किया है वे जनभावनाओं को नहीं देख पाते।

— संजय निरुपम, सांसद (शिवसेना)

⊙ वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला करके मुसलमानों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम करने की साजिश करने वालों ने ही गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगाकर भारतीय मुसलमानों को मुसीबत में डालने की कोशिश की है। विश्व हिन्दू परिषद पर सरकार ने अगर अब भी पाबंदी नहीं लगाई तो इस बात पर यकीन हो जाना चाहिए कि हिंसक घटनाओं में सरकार का हाथ है।

— शिया धर्मगुरु मौलाना कल्बे जव्वाद

(बड़े इमामबाड़े लखनऊ की आसिफी मस्जिद में जुमे की नमाज के बाद खुतबा करते हुए)

⊙ गोधरा की घटना मध्ययुगीन जेहादी मानसिकता में जी रहे मुसलमानों की पूर्व नियोजित साजिश है। यह राजग सरकार की नीतियों का नतीजा है जिसकी जिम्मेदारी से केन्द्र सरकार नहीं बच सकती।

— महंत अवैद्यनाथ, अध्यक्ष (श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति)

⊙ वाजपेई की अपील के बाद हिन्दुओं को यह मान लेना चाहिए कि वे पाकिस्तान में रह रहें हैं। उनसे

(वाजपेई) और क्या अपेक्षा की जा सकती है ?

– बाल ठाकरे, अध्यक्ष (शिवसेना)

⊙ केन्द्र सरकार संघ परिवार के संगठन विश्व हिन्दू परिषद को राममंदिर प्रकरण पर कोई रियायत न दे। सरकार को विहिप के किसी भी प्रकार के मोल–तोल को तवज्जो नहीं देनी चाहिए। हम सरकार द्वारा राम मन्दिर मामले पर विहिप के साथ किसी भी प्रकार के समझौते के पक्षधर नहीं हैं।

सोनिया गांधी, अध्यक्ष (कांग्रेस)

⊙ सोनिया घोर हिन्दू द्रोही हैं। साबरमती एक्सप्रेस में आग लगाने वालों को पेट्रोल व मिट्टी का तेल कांग्रेस पार्षदों के डिपो से ही मिला था। उनकी योजना तो ट्रेन में सफर कर रहे दो हजार रामसेवकों को मौत के घाट उतारने की थी। हत्याकांड की योजना कांग्रेस के चार पार्षदों ने ही बनायी थी और आस–पास से गिरफ्तार किये गये मुस्लिम आक्रमणकारियों का जुड़ाव कांग्रेस ही रहा है। हमलावरों को गंभीर–परिणाम भुगतने होंगे। हुक्मरान भी तय कर लें कि वे राम के साथ हैं या बाबर के।

– प्रवीण भाई तोगड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री (विश्व हिन्दू परिषद)

⊙ अल्पसंख्यकों का जरुर ध्यान रखा जाना चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों का ख्याल न रखें।

– जयललिता, मुख्यमंत्री (तमिलाडु)

⊙ अयोध्या का आक्रोश एक बार फिर फूटता दिखाई दे रहा है। यदि हिंसा को शीघ्र काबू में नहीं किया गया तो १९९२ की आग ज्वालामुखी के रुप में फट सकती है। यदि केवल पुलिस ही साबरमती एक्सप्रेस को हिंसा पर उतारु लोगों से बचाने के लिए एहतियाती कदम उठा लेती तो इतने लोगों की जानें नहीं जाती।

– एम. करुणानिधि, अध्यक्ष (डी.एम.के.)

⊙ गुजरात के विभिन्न इलाकों में साम्प्रदायिक तत्वों द्वार मुसलमानों को जिंदा जलाया जा रहा है। पूरे राज्य में कयामत का मंजर है और राज्य सरकार इस पर नियंत्रण करने में पूरी तरह से असफल रही है। प्रधानमंत्री से मिले आश्वासन से मैं संतुष्ट नहीं हूँ। दंगे की चपेट में आये गुजरात में अमन कायम होने पर ही हमें संतुष्टि मिलेगी गुजरात के हालात राज्य सरकार के हाथ से खिसक चुके है। वहाँ तुरन्त सेना तैनात की जाए।

– सैयाद अहमद बुखारी, शाही इमाम, जामा मस्जिद (दिल्ली)

⊙ गोधरा की घटना के बाद गुजरात में अल्पसंख्यक असुरक्षित महसूस कर रहे हैं लिहाजा उनके जान–माल की पूरी सुरक्षा दी जाय। गुजरात को तुरंत सेना के हवाले किया जाय।

– ई. अहमद, महासचिव (इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग)

⊙ गोधरा की घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। हाल के चुनावों में भाजपा की हार के कारण देश में सद्भावना तोड़ने तथा साम्प्रदायिकता फैलाने की कोशिश की जा रही है। भाजपा के सहयोगी दलों को चाहिए कि वे इस सरकार में रहकर देश की एकता और सद्भावना खत्म करने में भागीदार बनें।

– मुलायम सिंह यादव, अध्यक्ष (समाजवादी पार्टी)

⊙ गोधरा हत्याकांड के पीछे अलगाववादी तत्वों की उच्चस्तरीय साजिश से इंकार नहीं किया जा सकता। इसे अंजाम देने वाले कांग्रेस से जुड़े हैं और कांग्रेस को चाहिए कि वह स्वयं ऐसे तत्वों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्यवाई की पहल करे।

– कलराज मिश्र, अध्यक्ष (भाजपा, उ०प्र०)

⊙ विहिप, बजरंगदल, शिवसेना पर प्रतिबन्ध लगाकर उनके बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया जाए।

— रेवती रमण सिंह, वरिष्ठ सपा नेता उ०प्र०

⊙ विपक्ष समुदाय विशेष की लाशों पर राजनीति कर रहा है यह लोग कल तक चुप क्यों बैठे थे ? गोधरा में ५८ हिन्दू जला दिये गये तब तो एक शब्द नहीं बोले। जुबान पर ताले लग गये थे। अब शोर मचा रहे हैं। क्या वे ५८ लोग इन्सान नहीं थे ? कांग्रेस अध्यक्ष गोधरा हत्याकांड के तुरंत बाद प्रधानमंत्री से क्यों नहीं मिलीं ? बाद मे ही क्यों याद आयी ? अगर विपक्षी दल कल गोधरा हत्याकांड मे मारे गये कारसेवकों की हत्या की भी तीव्र निन्दा करते तो हालात शायद इतने न बिगड़ते।

— विजय कुमार मल्होत्रा, प्रवक्ता (भाजपा संसदीय दल)

⊙ इस जघन्य हत्याकांड से राष्ट्र को गहरा धक्का लगा है। अभी तक जो जानकारी मिली है। उससे संकेत मिलता है कि यह पूर्व नियोजित हमला था। विहिप ने अपने कार्यक्रमों से कोई तनाव पैदा नहीं किया है। राज्य सरकार आवश्यक उपाय कर शीध्र अभियुक्तों को गिरफ्तार करेगी।

— जन कृष्णमूर्ति, अध्यक्ष (भाजपा)

⊙ तथाकथित सेकुलर नेताओं को विहिप की निन्दा के बजाय साम्प्रदायिक तत्वों के खिलाफ खुलकर बोलना चाहिए।

— जे०पी० माथुर, वरिष्ठ नेता (भाजपा)

⊙ गोधरा की घटना से राष्ट्रीय मानस विशेषकर हिन्दू मानस का स्तब्ध, क्षुब्ध और मर्माहत होना अत्यन्त स्वाभाविक है और यह रोष देश भर में अनेक स्थानों पर स्वतः स्फूर्त बंद के द्वारा अभिव्यक्त भी हुआ है पर कुछ स्थानों पर इस जनरोष ने हिंसा का मार्ग अपना लिया है। यह अविलंब बंद होना चाहिए। गुजरात की घटनाएँ राष्ट्रीय एकता में सेंध लगाने का प्रयत्न है।

— श्री कु०सी० सुदर्शन (प०पू० सरसंघचालक)

⊙ गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस पर हमला एक पूर्व नियोजित साजिश का अंग एवं आतंकवादी हिंसा की घटना है। हमारी सरकार ने इसे गम्भीरता से लिया है और हमले के लिए जिम्मेदार तत्वों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी।

— नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री (गुजरात)

⊙ गोधरा की घटना केन्द्र सरकार की 'अपराधिक लापरवाही' का परिणाम है।

— ओंकार भावे, संयुक्त महामंत्री (विहिप)

अनुनय के आगे अन्याय नहीं झुकते
पौरुष के चरणों में नाक रगड़ते हैं
विनय भीरुता का पर्याय न बन जाए
वीर शस्त्र इसलिए उठाया करते हैं।

साम व्यर्थ है, दाम तुम्हारे पास नहीं
हे राम ! शेष रह गया दंड अपनाने को
प्रलयंकर बनकर तीसरा नयन खोलो
शोषण के दानव का ध्वंस रचाने को।

अनियंत्रित खान पान : मौत को दावत

✍ हेमन्त कश्यत

एकादश 'क

फास्ट फूड संस्कृति ने नयी पीढ़ी के स्वास्थ्य और मन की हत्या कर दी है। घर का शुद्ध प्रोटीन और विटामिन से युक्त भोजन छोड़कर लड़के पिजा, बर्गर और नूडल्स के दीवाने हैं।

कल्पना कीजिये एक चार वर्षीय बच्चे को अपने सड़ चुके दाँतों के लिये'रूट कैनले ट्रीटमेंट' लेना पड़े। यह सुनने या पढ़ने में कठोर जरूर लगता है लेकिन यह सच है। वास्तव में यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे आज लग भग हर अभिभावक डर रहा है। कारण आज कल बच्चों का चॉकलेट, कैण्डी, केक, सॉफ्ट ड्रिंक्स, वर्गर, वैफर्स समेतत जंक फूड के प्रति प्रेम नित नये परवान चढ़ रहा है। इसे और परवान चढ़ाने का काम कर रहे हैं हैं, टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे इन उत्पादों का रंगारंग विज्ञापन। चिप्स, नूडल्स, बर्गर, जैम, कोल्डड्रिक्स के मामलो में आज लगभग हर बच्चे का एक अलग पसंदीदा ब्राण्ड है। इसे भॉपकर अब कंपनियों ने अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिए बच्चों पर निशाना साधना शुरू कर दिया है। खासकर खाद्य पदार्थों से जुड़े उत्पादों में।

एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि जिन उत्पादों के रंगीन विज्ञापन टेलीविजन के माध्यम से ड्राइंग रूम में पहुँच बच्चों को लुभा रहे हैं वे चीनी और वसा से भरपूर होते हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक प्रसारित हो रहे ६२ फीसदी विज्ञापन वसा से भरपूर उत्पादों के होते हैं तो पचास फीसदी उत्पादों में चीनी व ६१ फीसदी मे अत्यधिक नमक होता है। समानुपातिक दर से देखें तो कुल ६५ फीसदी विज्ञापन वसा, चीनी व नमक की नियन्त्रित मात्रा से कहीं अधिक रहते हैं। और तो और भारत ही नहीं यूरोप के देशों में भी टी०वी० पर ऐसे विज्ञापनों की भरमार है, जबकि सब्जियों और फलों के विज्ञापन न के बराबर हैं।

इसकी वजह साफ है खाद्य है खाद्य पदार्थों से जुडे विज्ञापनों का बच्चों के मन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। यकीन न आये तो किसी भी बच्चे से उसके पसंदीदा रेस्त्रां का नाम पूछ लीजिये। आपको तुरंत उत्तर मिल जायेगा। "मैक्डोनल्ड्स"। उसका पसंदीदा पेय होगा को कोक पेप्सी। यहीं नहीं उन्हें यहाँ तक मालूम होता है कि फलाँ वैफर्स के साथ टैजू या अमैजू गिफ्ट के तौर पर मिल रहे हैं। वे अपनी माँ से सुबह के नाश्ते में मैगी नूडल्स की ही माँग करते हैं।

बच्चों की प्रमुख बाजारू व घरेलू पसन्दों में प्रमुख रूप से यही चीजे अधिकतर आगे रहती हैं – मैगी, चाउमीन, कोल्ड ड्रिंक्स, चॉकलेट, आइसक्रीम तथा मुख्य रूप से जवानी की ओर बढ़ रहें बच्चों में सबसे ज्यादा शौक रहता है फास्ट फ्रूड का। इस तरह से खाद्य पदार्थों को जल्दी बेकार होने से बचाने के लिए इनमें प्रिजर्वेटिव भी डाल दिया जाता है। अधिक मात्रा में प्रयोग करने से 'डायबिटीज' तथा 'अपेण्डिसाइटिस' जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं।

एक प्रसिद्ध डॉक्टर के मुताबिक 'इस खान–पान शैली की ही देन है जो अब बच्चों में मोटापा एक गंभीर समस्या लेकर उभरा है। यहीं नहीं जंक फूड का सेवन करने वाले बच्चे न सिर्फ अधिक खाते हैं, बल्कि वे कुपोषण का शिकार भी हो जाते हैं। जिस कारण वश उन्हें शारीरिक विकास के लिए आवश्यक खनिज लवण व विटामिन्स इनसे प्राप्त ही नहीं हो पाती। इस स्थिति को देखते हुए सरकार को तुरंत हस्तक्षेप करना चाहिये। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले समस्त खाद्य पदार्थों के विज्ञापन पर स्पष्ट तौर पर बच्चों के लिये चेतावनी अंकित होनी चाहिए। जिससे अभिभावक एवं बच्चे सचेत हो सकें।

हिन्दू राष्ट्र नेपाल की काली रात

✍ रोहित ओमर

सप्तम 'ख

कहते हैं कि शाह राजवंश १७६८ में राजा पृथ्वीनारायण शाह के द्वारा स्थापित किया गया था। जिन्हें बिखरे पड़े साम्राज्य को एक करने का श्रेय जाता है। पृथ्वीनारायण शाह ने ५२ वर्ष की उम्र तक शासन किया फिर इनके तीन उत्तराधिकारी हुए। प्रतापसिंह शाह २६ वर्ष की उम्र तक, राणा बहादुर शाह ३१ वर्ष की उम्र तक, गिरेन्द्र युद्ध विक्रम शाह १६ वर्ष की उम्र में दिवंगत हो गये। राजेन्द्र ६८ वर्ष तक, सुरेन्द्र विक्रम शाह ५२ वर्ष तक, त्रैलोक्य विक्रम शाह ३० वर्ष और पृथ्वी वीर विक्रम शाह ३६ वर्ष तक जीवित रहे। महाराजा वीरेन्द्र के दादा त्रिभुवन सिंह ४८ वर्ष और पिता महेन्द्र वीर ५२ वर्ष तक जीवित रहे। नेपाल नरेश महाराजा वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव व उनके परिवार के सदस्यों की असामायिक तथा दर्दनाक मृत्यु की खबर सुनते ही भारत में शोक की लहर दौड़ गयी। नेपाल के राजमहल नारायणहिति महल में एक सनसनी घटना में महाराजा वीरेन्द्र विक्रम शाह और उनकी पत्नी महारानी ऐश्वर्या के उनके ही पुत्र युवराज दीपेन्द्र विक्रम शाह ने शादी के विवाद को लेकर गोली मारकर हत्या कर दी। यह घटना १–६–२००१ दिन शुक्रवार को नेपाल के समय अनुसार रात्रि १० बजे तथ भारत के समय अनुसार (रात्रि ११ बजे) यह घटना घटित हुई। १–६–२००१ को स्थानीय समय ११ बजे जब शाही परिवार खाना खाने की मेज पर बैठा था। इसी समय युवराज की शादी के मामले में शाही परिवार से बहस हुयी। तभी क्रोध में आकर २० वर्षीय युवराज दीपेन्द्र ने अंधाधुंध गोलियां चलाना शुरू कर दी। युवराज की गोलीबारी में उनके पिता ५५ वर्षीय महाराजा वीरेन्द्र व ५१ वर्षीय उनकी माता महारानी ऐश्वर्या तथा इसके अलावा २२ वर्षीय छोटा भाई राजकुमार निरंजन तथा उसकी बहन २५ वर्षीय राजकुमारी श्रुति एवं महाराजा वीरेन्द्र की बहन राजकुमारी शान्ति सिंह व राजकुमारी शारदा शाह व शारदा के पति खड्ग विक्रम शाह व महाराजा की चचेरी बहन जयन्ती शाह शामिल हैं। एक पुरानी भविष्यवाणी से यह घटना जुड़ी हुयी हैं यह निम्नवत् है – कहा भी गया है नेपाली राज परिवार के साथ घटी त्रासदी घटना २३० वर्ष पहले शाह राजवंश के बारे में की गयी एक भविष्यवाणी से भी जुड़ी है। जिसमें कहा गया था कि शाह राज वंश का दसवीं पीढ़ी के बाद अन्त हो जायेगा। एक बार राजा को काठमांडू घाटी जाना था। रास्ते में उनका सामना सन्त गोरखनाथ से हो गया। राजा ने सन्त गोरखनाथ को दही प्रस्तुत किया। सन्त ने दही खा लिया। फिर उसे उगलकर वापस राजा को देकर खाने के लिये कहा। राजा ने क्रोधित होकर दही को जमीन पर फेंक दिया। जिससे दही राजा पृथ्वीनारायण शाह के पैरों की अंगुलियों मे फैल गया। सन्त गोरखनाथ को राजा के इस घमण्ड पर क्रोध आया और कहा–यदि वह इस दही को खा लेता तो वह राजा पृथ्वीनारायण की सारी इच्छायें पूरी कर देते। यदि ऐसा नहीं हुआ तो राजा के पैरों की दस अंगुलियों से लगे दही का मतलब होगा कि उसका राजवंश दस पीढ़ियों के बाद समाप्त हो जायेगा। राजा वीरेन्द्र और उसके परिवार की शुक्रवार की रात उनके ही पुत्र द्वारा सामूहिक हत्या कर दी गयी। हत्या करने वाला राजकुमार दीपेन्द्र शाह राज वंश की ग्यारहवीं पीढ़ी का सदस्य था। काठमांडू के त्रिभुवन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं ज्योतिषी मिलनशाक्य ने कहा कि यह मान्यता नेपाल के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भले ही यह घटना महज एक संयोग हो। बहरहाल नेपाल की जनता शोक में डूबी हुई थी। परन्तु नेपाल की जनता इस घटना को पचा नहीं पा रही थी। उनका कहना है कि इस घटना में और किसी का भी हाथ है। जबकि नेपाल के वर्तमान प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला के बयान का खण्डन करते हुए कहा कि इस काण्ड में और किसी का हाथ नहीं है। युवराज दीपेन्द्र ने ही यह कार्य किया है। पूरे देश में १३ दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा कर दी गयी थी।

आतंकवाद और 'पोटो'

अभिनव चतुर्वेदी

द्वादश 'ख'

"आजकल कोई किसी को टोकता नहीं।
चाहे कुछ भी कीजिए कोई रोकता नहीं।
छूट रहीं हैं गोलियां, फूट रहे हैं बम।
आसमां पर खुदा और जमीं पर हम।"

इनके लिखने और गाने वाले देश में फैल रही अराजकता से अवश्य ही व्यथित रहे होंगे। शायद परिस्थितियाँ असह्य हो गयीं होगी। पर आज तो समाज, समाज की सभ्यता नष्ट होती देखकर भी आह नहीं भरता। अपने ही लोग राष्ट्र को बरबाद कर देने की साजिशों में लगे हुए हैं। कोई सीधा वार कर रहा है तो कोई उन शत्रुओं की सहायता परोक्ष रूप से कर रहा है। लगता है जैसे सारा राष्ट्र ही छिन्न–भिन्न होता जा रहा है। ऐसी दशा में भी देश के प्रति भक्ति रखने वाले लोग अनमने नहीं होते। भारत राष्ट्र के लिए इससे ज्यादा खतनाक स्थिति और क्या हो सकती है कि हमारे देश की सरहदों के पार हिन्दुस्तान की तबाही की तैयारियाँ चल रही हैं। सीमा पार से पाकिस्तान अप्रत्यक्ष युद्ध लड़ रहा है। उसकी फौज सीमा पार आग बरसा रहीं है, उसकी कोख से जन्मे खूंखार आतंकवादी कश्मीर में नित नयी आतंकी गतिविधियों को अंजाम दे रहे है। हमारी भूमि हड़पने के बाद चीन उसे वापस करने से साफ इंकार कर रहा है। जबकि बंग्लादेश अपने यहाँ रह रहे हिन्दुओ पर अमानवीय अत्याचार कर रहा है। चारो तरफ आतंकवाद का खतरा, सिर्फ बंदूकों व गोलियों का नहीं, बमों व जैविक हथियारों का भी है।

क्या अब भी हम नहीं चेतेंगे ? आखिर कब तक हम इन खतरों को नकार सकते हैं ? कोई भी भारतीय अपने राष्ट्र का दुश्मनों के हाथ में तो नहीं जाने देगा परंतु अपने स्वार्थ, जड़ता और आलस्य की प्रवृत्ति से राष्ट्र की सुरक्षा को इतना कमजोर तो कर ही देगा कि दुश्मन उसे आसानी से तोड़कर राष्ट्र में प्रविष्ट हो जायेंगे।

गत ग्यारह वर्षो में जम्मू–काश्मीर में लगभग चौवन हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। सैकड़ों जवान अपनी जान कुर्बान कर चुके हैं। उनकी कुर्बानी की कीमत सिर्फ आतंकवाद और आतंकवादियों का खात्मा है। मौत के ये सौदागर फूँक मारने से नहीं उड़ेंगे। सत्याग्रह करके इनका ह्रदय परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। यह प्रमाणित हो चुका है कि बातचीत और समझाने–बुझाने से इनकी आंखें नहीं खुलने वाली है। इनकी आंखों में मानवता की चमक नहीं है। उनके लिये किसी के खून की कोई कीमत नहीं है। वे जवान, बूढ़ों व बच्चों में कोई अंतर नहीं करते, वे तो केवल मारना जानते हैं। ११ सितम्बर २००१ की जब आतंकवादियों ने अपने नापाक इरादों को दुनिया के सामने रखा तो सारा विश्व आतंकवाद को खत्म करने के तरीके तलाशने लगा। यदि पूरी दुनिया आतंकवाद के खिलाफ चौकन्नी हो गयी है तो उससे अधिक चौकन्ने दुनिया के आतंकवादी हो गये है।

आज आतंकवाद को सबसे बड़ा कारखाना पाकिस्तान भी कह रहा है कि आतंकवादी घटनाओं मानवता के लिये कलंक हैं, इन्हें खत्म करना चाहिए। जबकि वह आतंकवाद को शह ही नहीं, सहायता भी दे रहा है। उसके कहने और करने में दोगलापन है। आतंकवाद का शिकार देश का आम आदमी ही नहीं हुआ है, महत्वपूर्ण लोग भी हुए है। आतंकवाद ने ही इंदिरा गाँधी और राजीव गाँधी को अपनों से विदा कर दिया था। सिवाय वोट स्वार्थ के क्या विरोध की और कोई वजह हो सकती है ? विरोधी दलों को देश की भलाई नहीं अपितु वोट चाहिए। 'पोटो' का समर्थन करने से कुछ विशेष लोग नाराज हो जायेंगे किंतु उन्हें यह समझना चाहिए कि देशहित की बात करके भी वोट प्राप्त किया जा सकते हैं। नहीं तो कर्नाटक व महाराष्ट्र में आतंकवाद के लिये कानून बनाने वाली कांग्रेस सरकार 'पोटो' का विरोध न करती।

यह ठीक है कि कांग्रेस के समय में 'टाडा' का दुरुपयोग किया गया था किंतु इसका मतलब यह तो नहीं है कि राजग सरकार भी आतंकवाद निरोधक अध्यादेश का गलत इस्तेमाल करेगी। यद्यपि कुछ नेता यह कह सकते हैं कि उनके समय टाडा का दुरुपयोग नहीं किया गया लेकिन यह दावा कैसे कर सकते है कि राजग सरकार इस पोटो का दुरुपयोग करेगी ही। अमेरिका जैसे ताकतवर देश की जड़े हिला देने वाले आतंकवादी यदि अपने देश में सहानुभूति प्राप्त कर लेते हैं तो देश के अंदर आश्रय प्राप्त करने के लिये उन्हें अन्य किसी साधन की आवश्यकता नहीं होगी। अब तो यह तथ्य भी सामने आ चुका है कि अल कायदा ने काश्मीरी आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया है।

प्रारम्भ में पोटो का समर्थन करने वाली अनेक पार्टियां अब अपनी–अपनी राजनीतिक मजबूरियों के कारण अब इसका विरोध कर रहीं हैं। सरकार ने अध्यादेश जारी करने से पहले केरल के मुख्यमंत्री को छोड़कर किसी ने भी इसका खुला विरोध नही किया।

हम एक ओर यह उम्मीद करते हैं कि अमेरिका कश्मीर में सक्रिय आतंकवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगाये और दूसरी तरफ यह दलील भी देते हैं कि आतंकवादियों पर प्रतिबंध लगाने के लिये देश में कोई बड़ा कानून न बनाया जाये। वामपंथियों से तो देशहितम में किसी बात की उम्मीद ही नहीं की जा सकती। वे कभी तो आतंकवाद से निपटने के लिये संसद में लम्बे–चौड़े भाषण देते हैं तो कभी विभिन्न बहाने के अंदर लोगों की गर्दन उड़ाने वाले नक्सली भी पूज्य हैं और कश्मीर में हिन्दुओं का कत्लेआम मुस्लिम उग्रवादी भी।

आतंकवाद और भारत

सौरभ त्रिपाठी

नवम् 'ख'

आज विश्व के समक्ष अनेक समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हैं। आतंकवाद ऐसी ही एक समस्या है। आज सम्पूर्ण विश्व इस समस्या से ग्रस्त है। आज आतंकवाद का जहर सारे संसार में फैल चुका है। कोई भी देश सैन्य या आर्थिक दृष्टि से कितना ही मजबूत क्यों न हो आतंकवाद से अछूता नहीं रहा। भारत और श्रीलंका जैसे विकासशील देश तो इससे बुरी तरह त्रस्त हैं। भारत सन् १६४७ में आजाद हुआ था। तब जिन्ना की कुत्सित इच्छाओं ने पाक के रुप में जन्म लिया। किन्तु ये नासूर हमें आज भी दर्द दे रहा है। जब पाकिस्तान १६४८, १६६५, १६७१ व १६६६ के युद्धों में हार गया तो सीमा–पार से चुपके–चुपके आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ कराने लगा। उन आतंकियों के विचार जेहाद में पगे हुए व उनके सिर पर भारत को बरबाद करने का जुनून था। हमारे जवानों ने सदैव उनके प्रयासों को विफल किया। लेकिन हमने आज तक किसी पर हमला नहीं किया। किन्तु देश के शासक ये भूल गये कि आज–कल ज्पज वित ज्ज और 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' जैसी की नीतियाँ ही सार्थक होती हैं। नेहरु के पंचशील सिद्धान्तों के कारण उपजा सन् १६६२ का भारत–चीन युद्ध भूल भी न पाए थे, कि वही गलती अटल जी ने लाहौर बस यात्रा करके की। और परिणाम– सन् १६६६ का कारगिल युद्ध जिसका फल वही शहीदों की लम्बी सूची, घायलों का करुण–क्रदन, मृतकों के परिवारों का विलाप। आतंकवाद सीमा पर ही नहीं देश के अन्दर भी है। आतंकवादी समय–समय पर हमले करते रहते हैं। किन्तु अति किसी भी अच्छी नही होती है। भारत अधिक समय तक शान्त नहीं रहेगा। एक दिन पूरा आतंकवाद के खिलाफ उठ खड़ा होगा और सारा विश्व उसके साथ होगा। तब यही कहना उचित होगा :–

चाहे जितनी कोशिश कर लो, वीरत्व रंग दिखलाएगा।
नापाक इरादों का परचम, लहरा न कभी फिर पाएगा।।
हमसे टकराने का हौसला, अगर किसी ने बाँधा तो।
इतिहास गवाही देता है, वह मिट्टी में मिल जाएगा।।

अनुभाग – तीन

रोचक एवं जानकारीपरक लेख

चीटियों का विचित्र संसार

प्रस्तुतिः – नितिन शंकर सिंह

अष्टम 'क'

कद छोटा होने पर भी हम अनेक कार्य कर सकते हैं, किसी को नगण्य मान बैठना भारी भूल के सिवा कुछ भी नहीं उदाहरण के लिए चीटीं को ही ले लें, देखने में धरती का छोटा सा जीव विलक्षण है। विचित्रताओं से भरी इसकी दुनिया को देखकर चकित होना पड़ता है। चलिए प्रवेश करते हैं चीटियों के इस अनोखे जगत में –

विश्व में चीटियों की साढ़े तीन हजार जातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से अकेले भारत में ही ५०० प्रजातियाँ है। चीटियाँ अपने शरीर के भार की अपेक्षा पचास गुना अधिक भार उठा सकने में सक्षम होती हैं। आइये देखें चीटियाँ कितने प्रकार की होती हैं– अफ्रीका में पाई जाने वाली दरजी चींटी भारतीय लाल चीटीं का एक वर्ग है, किन्तु उनके द्वारा बनाए गए घर वृक्षों की शाखाओं को जोड़ते हैं। वृक्षों पर रहने वाली काली चीटीं का एक वर्ग ऑस्ट्रेलिया का घोसला चींटी वर्ग कहलाता है, ये चीटीं टहनियों पर पगड़ीनुमा दस मीटर तक ऊँचे घोंसले बनाती हैं। ये वास्तव में पत्तों के बने होते हैं, किन्तु दूर से देखने पर रेत के लगते हैं। ये चीटियाँ अपने शरीर से रसायन छोड़कर इन्हें जलरोधक बना देती हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि कठफोड़वे की एक जाति इसी घोसलें में अपने अण्डे–बच्चे देती है।

वैज्ञानिकों के अनुसार चीटियाँ दस करोड़ से अधिक समय से धरती पर हैं। यूरोप को आक्रमणकारी लाल चीटियाँ आसपास की काली चीटियों के बिलों पर धावा बोलकर उन्हें अपना गुलाम बना लेती हैं, यह उन्हें मजबूरी में करना पड़ता है, क्योंकि इनके श्रमिक वर्ग में अधिकांश सैनिक होते हैं, जो पोषण करने में सक्षम होते हैं।

ऑस्ट्रेलिया की 'मेलोशोकस' नामक चीटियाँ फूलों के रस की शौकीन होती है। इसकी बुद्धिमत्ता देखने लायक होती है, यह भूख के समय तो तुरंत रस का सेवन करती है और विपरीत समय के लिए फ्रिज अथवा कोल्ड स्टोरेज का भी आविष्कार कर लेती हैं। इस रस को ये एक कटोरे नुमा आकृति के रूप में एक दूसरे से गुँथकर उसमें भर देती है तथा उस रस में एक विशेष प्रकार के कीड़े को डाल देती हैं जो रस पी–पीकर मटर के दाने जैसा गोल हो जाता है। पारदर्शी रस से भरे इस कीडे़ को ये उल्टा लटका देती हैं एव भविष्य में उसका उपयोग क्षुधा पूर्ति हेतु करती है।

चीटियाँ गाय पालती हैं यह बात सुनने में अटपटी जरूर लगती है परंतु सत्य है। चीटियों की एक प्रजाति का नाम 'हनी आंट्स' इसीलिए पड़ा क्योकि ये 'एपिड्स' नामक मक्खियों को गाय की तरह ही दुहती हैं। इसके शरीर से निकलने वाले 'हनी ड्रयू' को बड़े चाव से खाती हैं।

बाग लगाकर भोजन प्राप्त करने वाली चीटीं के बारे में सुनाए बिना बात अधूरी रह जाएगी। अनिट्स दशईब अट्टीसीं नामक चीटियाँ फफूँद के बाग लगाकर भोजन की व्यवस्था करती हैं। ये पश्चिमी गोलर्द्ध के गरम देशों में पाई जाती हैं। चीटियों की इस रोचक दुनियाँ में रोमांच लाना कोई दुर्लभ कार्य नहीं है। विश्व की खतरनाक चीटियों का उल्लेख किये बिना ये लेख अधूरा ही रहेगा। एसिटान व डारिलस प्रजाति की ये चीटियाँ आजीवन भोजन की तलाश में घूमती रहती है। अमेरिका, आस्ट्रेलिया के कुछ दक्षिण–पूर्वी क्षेत्रों एवं अफ्रीका मे मिलने वाली इन चीटियों को क्रमशः सोल्जर आंट्स, डेन्जर आंट्स तथा ड्राइवर आंट्स के नाम से जाना जाता है। लाल एवं काले रंग की इन चीटियों की सामने पड़ने वाली हर वस्तु को ये चट कर जाती हैं। इनका मुख थोड़ा बड़ा एवं चौड़ा होता है। शिकार मिलते ही पूरा का पूरा काफिला उसके ऊपर टूट पड़ता है। ये चीटियाँ मच्छर से लेकर, मगरमच्छ तथा घायल हाथी से लेकर घायल सिंह तक कोई भी क्यों न हो सफाचट कर जाती हैं। अफ्रीका के

ग्रामीण इनकों दूर से देखकर ही घर छोड़कर भाग जाते हैं। दुर्भाग्यवश कोई जवजात शिशु अथवा कोई असहाय व्यक्ति छूट गया तो वह भी सफाचट हो जाता है। जब गाँव के लोग वापस आते है तो देखते है कि खाने की चीजों के साथ–साथ तिलचट्टे मकड़ी एवं छिपकली भी लापता है। कुछ कबीलेवासी हर समय बस्तियों के चारों ओर आग लगा रहते हैं। अमेरिकी उपमहाद्वीप की कुछ चीटियाँ मात्र छोटी चीजें अथवा प्राणियों का भोजन करती हैं। इनका नाम लीजनरी आंट्स भी है परंतु दक्षिणी अमेरिका एवं दक्षिणी सयुक्त राज्य अमेरिका में इन्हें 'स्मॉल सोल्जर आंट्स' कहते हैं।

यहाँ लेख रूपी जानकारी को समाप्त करता हूँ परंतु यह जरूर कहूँगा कि "सबसे अधिक महत्वपूर्ण है चीटि्यों की कार्यक्षमता, उनकी लगन एवं उनकी बुद्धिमत्ता आदि। इस तरह नगण्य समझा जाने वाले प्राणी मनुष्य को सभ्य एवं सामाजिक एकता के कितने पाठ बिना बोले ही पढ़ा देता है। एक भूखी चींटी दूसरी चींटी से जब खाना माँगती है तो वह एक तरल बूँद देकर उसे तृप्त कर देती है। ऐसी सहयोग भावना मनुष्य के अंदर होती तो हम भी एक महापुरुष बन गए होते। सच तो यह है कि सीखने की पहली शर्त विनम्रता को अपनाने से ही हम चीटियों से बहुत कुछ सीख सकते है।"

क्या आप जानते हैं ?

प्रस्तुति :– अम्बर अग्रवाल

सप्तम 'ख

१. सबसे भारी ओलावृष्टि १४ अप्रैल १९८६ को बंगला देश के गोपालगंज जिले में हुई थी। इसमें १०२ किग्रा. भार के ओले गिरे थे तथा ९२ व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी।

२. विश्व का सबसे बड़ा कब्रिस्तान लेनिनग्राद (रूस) में है। यहाँ पर द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ५ लाख लोगों को दफनाया गया।

३. विश्व का सबसे बड़ा कर्मचारियों का नियोजक भारतीय रेलवे है। इसमे सन् १९९८–९९ में बीस लाख कर्मचारी थे।

४. विश्व में प्राचीनतम् राष्ट्रीय गान जापान का 'किमी' गयो है। इसको शब्द ९वीं सदी के है।

५. जापान का राष्ट्रीयगान विश्व में सबसे छोटा है। स्पेन का राष्ट्रीयगान प्राचीनतम् 'शब्दहीन' राष्ट्रगान है।

६. साऊदी अरब में कोई भी सिनेमा घर नहीं है वहाँ कोई नदी भी नहीं है।

७. सर्वाधिक सीमाएँ चीन देश की हैं इसकी सीमाएँ १३ देशों को छूती है।

८. विश्व में सर्वाधिक विवाह रूस में तथा तलाक अमेरिका में होता है।

९. सबसे छोटी सीमा जिब्राल्टर एवं स्पेन के बीच है जिसकी लम्बाई मात्र डेढ़ किमी. है।

१०. विश्व का सबसे कड़वा पदार्थ बीट्रेक्स है।

११. खूनी लाल रंग की नदी स्पेन की टियोटिन्टा है।

१२. विश्व की सबसे लम्बी औरत 'सान चुंगलिंग' है। इसकी लम्बाई आठ फिट ६ इंच की है। यह मध्यचीन के रहने वाली है।

१३. विश्व मे २७९२ भाषाएँ बोली जाती हैं।

'एज्बेस्टसः जिसे आग जला नहीं सकती'

— सौरभ कटियार 'प्रथम'

अष्टम 'क'

जब भी कोई पदार्थ आग में रखा जाता है, वह जलकर राख हो जाता है। पर 'एज्बेस्टस' ऐसा पदार्थ है, जिसे तो आग भी नहीं जला सकती। यही कारण है कि जलते घर में धुसने वाले दमकल कर्मचारियों के वस्त्र 'एज्बेस्टस' के बने होते हैं। यहाँ तक कि उनके जूते, दस्ताने और हैल्मेट तक भी इसके रेशों से बने होते हैं।

'एज्बेस्टस' एक ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'न बुझने योग्य' या 'जिसे बुझाया न जा सकें, रोम ने सबसे पहले इसका उपयोग किया था। तकरीबन २००० वर्ष पहले वे इसे शवों को खराब होने से बचाने के लिए ढकने का काम करते थे।

यह धातु खानों से प्राप्त की जाती है। यह ओलिवाइन के विलयन से बनाई जाती है। ओलिवाइन, कैल्शियम व मैग्नीशियम के सिलिकेट होते हैं। खानों में कुछ रासायनिक परिवर्तनों के कारण ये ओलीवाइन, एज्बेस्टस के रेशों में परिवर्तित हो जाते हैं। एज्बेस्टस, सूखी अवस्था में प्राप्त होते हैं, बाद में इन्हें (रेशों को) मशीन से अभीष्ट अवस्था में प्राप्त करते हैं।

यह एक अत्यधिक उपयोगी पदार्थ है। यह अग्निरोधी वस्तुएँ जैसे कपड़े, जूते, रस्सी, कागज आदि बनाने में प्रयुक्त होता है। ठंडे प्रदेशों में जल–पाइपों पर इसका आवरण चढ़ाया जाता है। ताकि पाइपों में पानी न जमे।

विश्व में कनाडा सम्पूर्ण विश्व के उत्पादन का ७५ प्रतिशत एज्बेस्टस उत्पादित करता है। जबकि अमरीका को ५ प्रतिशत प्राप्ति के बावजूद भी वह विश्व में सर्वाधिक एज्बेस्टस निर्मित वस्तुएं उत्पादित करता है। ●

ऐसा क्यों होता है ?

— अंकित गुप्त

सप्तम 'ख

☞ सूर्य की गर्मी में पत्तियाँ गर्म क्यों नहीं होती हैं ?

कितनी भी तेज गर्मी क्यों न पेड़–पौधों की पत्तियाँ गर्म नही होतीं। दरसल ये पत्तियाँ सूक्ष्म कोशिकाओं की अनेक परतों से मिलकर बनी होती है। प्रत्येक पत्ती की कोशिकाएँ ऊपर तथा नीचे वाह्य त्वचा से ढकी रहती हैं। इनमे छोटे–छोटे छिद्र होते है जिन्हें रध्र कहते हैं ये रंध्र वाल्व का कार्य करते हैं। साथ ही साथ पत्ती और वायुमण्डल के बीच गैसों के आदान प्रदान पर नियंत्रण करते हैं। इन्हीं रंध्रो से पत्ती के भीतर की ऑक्सीजन और जलवाष्प बाहर आती है जब रंध्र बन्द हो जाते हैं तो गैसों का आदान–प्रदान रूक जाता है यही रंध्र पत्तियों के तापमान को सामान्य बनाए रखते हैं।

☞ रोते समय आँसू क्यो आते है ?

जब हम रोते है या ज्यादा खुश होते है तो उसी खुशी के कारण हमारी आँखो से आँसू निकल आते हैं। हमारी आँखों के बाहरी कोण के करीब तीन (लैक्राइमल) अश्रु ग्रंथियाँ पायी जाती हैं इनके स्रावित जल, पलकों, कार्निया और कन्जंक्टिवा को नम बनाए रखते है और इनकी सफाई कर इन्हें हानिकारक जीवाणुओ से रक्षा करता है। चोट लगने या किसी बाहरी वस्तु के आँख में गिर जाने या दुख, सुख की भावनाओ में आँसू अधिक मात्रा में स्रावित होकर बहने लगते हैं। ●

अन्तरिक्ष ज्ञान

✍ सत्यम् गुप्त

सप्तम् 'ख'

१. भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम सन् १९६२ में शुरू हुआ उसके लिये भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग में 'भारतीय राष्ट्रीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान समिति' बनायी।

२. १९६९ में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन का गठन किया गया। इसका मुख्यालय बंगलौर में है।

३. चन्द्रमा पर चरण रखने वाला प्रथम व्यक्ति नील. ए. आर्मस्ट्रॉग व रुडविन ई. रुलड्रिन थे। चन्द्रमा पर प्रथम चरण रखने का गौरव नील. ए. आर्मस्ट्रॉग को प्राप्त है।

४. अन्तरिक्ष में जाने वाला प्रथम व्यक्ति यूरी गगासि (रूस १९६१) थे।

५. प्रथम मानव रहित बग्गी लूनाखोद–१ (रूस) जिसे चन्द्रतल पर चलने का गौरव प्राप्त है।

६. लूना–१६ (रूस, २६ सितम्बर १९७०) वह प्रथम मानवरहित अन्तरिक्ष यान है।

७. अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम महिला वेलेन्टीना तेरेश्कोवा है।

८. चन्द्रतल पर मनुष्य को उतारने वाला प्रथम देश अमेरिका है।

९. अन्तरिक्ष में तैरने वाला प्रथम व्यक्ति अलेक्सीलियानोव (सोवितयत संघ, १९६५) थे।

१०. अन्तरिक्ष में जाने वाला प्रथम भारतीय स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा (१९८४) थे।

११. अन्तरिक्ष में जाने वाला प्रथम भारतीय मूल की महिला कल्पना चावला (१९९५) थी।

१२. पहली बार अन्तरिक्ष में जाने वाला जानवर लाइका नाम की कुतिया थी।

१३. राकेट से अन्तरिक्ष में गया पहला जानवर अलबर्ट नाम का बन्दर था।

१४. अन्तरिक्ष हमारे सर से करीब १६० किमी. की ऊँचाई से प्रारम्भ होता है।

१५. भारत की प्रथम महिला अन्तरिक्ष वैज्ञानिक सवितारानी है।

१६. विश्व के प्रथम अन्तरिक्ष पर्यटक डेनिस टीटो (कैलीफोर्निया, अमेरिका) है।

१७. भारत के प्रथम स्वदेशी अन्तरिक्ष यान का नाम एस.एल.वी. III है।

१८. अन्तरिक्ष यान 'पाथ फांइडर' जो मंगल ग्रह पर गया था।

१९. प्रथम भारतीय उपग्रह 'आर्यभट्ट' १९ अप्रैल १९७५ को अन्तरिक्ष में स्थापित किया गया।

२०. उपग्रह प्रक्षेपण के लिये क्रायोजेनिक इंजन की आवश्यकता होती है।

२१. अन्तरिक्ष में तैरने वाली प्रथम महिला स्वेतलाना सवित्यकाया थी।

सेकरीन का आविष्कार

✍ कुशाग्र द्विवेदी

एकादश 'ख

अमरीका की **जॉन हॉफकिन यूनिवर्सिटी प्रयोगशाला में वैज्ञानिक फ्रां रेमन्स** के साथ एक युवक कोलतार सम्बन्धी कुछ प्रयोग कर रहा था। एक दिन वह प्रयोग को बीच में ही अधूरा छोड़कर खाना-खाने घर चला गया। लेकिन यह क्या ? खाने में हर चीज मीठी। खाद्य-पदार्थों की मिठास को लेकर घर में झगड़ा हो गया। भोजन में ऐसी मिठास केवल उसे ही लग रही थी। तब उसने अपनी अँगुली चाटी। वह भी उसे मीठी लगी। तभी उसे अपनी प्रयोगशाला में किए गए प्रयोग का ध्यान आया, जिसे वह बीच में ही छोड़कर चला गया था।

तुरन्त वह प्रयोगशाला वापस आया। उसने हर बर्तन का परीक्षण किया तो उसे एक बर्तन में वही मीठा पदार्थ प्राप्त हुआ जो उसकी अँगुली में लग गया था।

वास्तव में वह कोलतार में भंजक आसवन में प्राप्त टालुईन से आर्थो टालुईन सल्फोनिक अम्ल बनाकर उसके ऑक्सीकृत उत्पादों का अध्ययन कर रहा था। इसी दौरान उसे एक अज्ञात पदार्थ प्राप्त हुआ, जो अत्याधिक मीठा था। वह अत्यन्त मीठा पदार्थ **आर्थो सल्फो बेन्जोइक एमाइड (सकरीन)** था।

यह मात्र एक संयोग ही था कि वह युवा वैज्ञानिक कुछ और प्रयोग कर रहा था और बन कुछ दूसरा ही पदार्थ गया और यूँ ही अनजाने में सकरीन का आविष्कार हो गया। ●

क्या आप जानते हैं ?

– विकल यादव, अंकुर रस्तोगी

अष्टम 'क

१. पहले ओलम्पिक की पहली रेस किसने जीती ? – कोरोइबोसने
२. पद्म श्री सम्मानित प्रथम अभिनेता कौन था ? – बलराज साहनी
३. बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट पर चढ़ने वाल प्रथम भारतीय कौन था ? – फू दोरजी
४. प्लाज्मा किस रंग का होता है ? – रंगहीन
५. भारतीय टीम के प्रथम कप्तान कौन थे ? – सी.के. नायडू
६. कोपाकोप किस खेल से सम्बन्धित है ? – फुटबाल
७. अबतक एशियाई खेलों में सर्वोच्च स्थान किसका है ? – जापान
८. यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया की स्थापना कब हुई ? – १९६४ ई०
९. प्लेग नामक रोग किस जीवाणु से होता है ? – वैसिलस पेस्टिस
१०. १९०१ में भारत में महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत कितना था ? – 0.6%
११. 'लकी' शब्द किस खेल से सम्बन्धित है ? – टेबिल टेनिस
१२. भारत की सर्वाधिक पुरानी फुटबाल प्रतिस्पर्धा कौन थी ? – डूरण्ड कप
१३. चार्ल्स डार्विन किस विषय से सम्बन्धित थे ? – फिजीशियन और प्रकृतिवादी
१४. बक्सर का प्राचीन नाम क्या था ? – त्याग्रसर
१५. अपने तप के बल से किसने सूर्योदय को रोक दिया था ? – शांडिली ●

अनोखा जीवन सम्राट पेंग्विन का

– अंकित गुप्त

सप्तम 'ख

पेंग्विन प्रजाति के पक्षियो में सम्राट पेंग्विन सबसे बड़ी और भारी भरकम शारीरिक संरचना वाली होती है। भोजन की तलाश में समुद्र में रहने के दौरान तो सम्राट पेंग्विन के हस्ट पुष्ट शरीर पर चर्बी की एक मोटी परत चढ़ जाती है फिलपर की मदद से समुद्र में आगे बढ़ते हुए सम्राट पेंग्विन २०० मीटर गहराई में जाकर मछलियाँ समुद्र फेन वाला अपना भोजन जुटाती हैं। बर्फ पर पेंग्विन बिल्कुल सीधे होकर चलती है। कभी–कभी यह पेट के बल लेट कर फिसलते हुए मनचाहा सफर तय करती है। अंटार्कटिक की बर्फ में सम्राट पेंग्विन बिलो में प्रजनन करती हैं। पेंग्विन अपनी नाक से नगाड़े जैसी आवाज करके अपने जोड़ीदार तथा अभिभावकों की पहचान करती है। जाड़ों के शुरूआती मौसम में जोड़ियाँ बनाकर मादा पेंग्विन अण्डे देने के लिए तटीय किनारों में निकल जाती है। नर पेंग्विन अण्डों की दो माह तक सेता है। अण्डे सेने के लिए वह उन्हें अपने पैरों के नीचे रखकर सीधा खड़ा हो जाता है वह तब तक सीधा खड़ा रखता है जब तक बच्चा नहीं निकल आता। जाड़े की ठण्डी हवाओं से अण्डे को बचाने के लिए नर तथा मादा पेंग्विन एक दूसरे से सट कर खड़े हो जाते हैं। बच्चों के अण्डे से बाहर निकलने के बाद ही मादा पेंग्विन वापस लौटती है और वहाँ से मुख में लाए गए भोजन को उगल कर उसकी भूख शांत करती है। इस समय तक पेंग्विन अपना आधा वजन खो चुकी होती है। बच्चे की देखभाल करने के पूर्व वह समुद्र की ओर कुछ हफ्तों के लिए भोजन के लिए निकल जाता है। पेंग्विन अपने अण्डे घोसलें में नहीं देती है। इसके लिए वह पैरों तक आते अपने पंखदार पेट के एक भाग को प्रयोग में लाता है।

पेंग्विन का परिचय

परिवार	स्फेनिसाइडे
वैज्ञानिक नाम	एप्टेनोडाइटस फॉर्स्टेरी
लम्बाई	११५ सेमी. लगभग
निवास	खुले मैदानी इलाकों समेत हरे भरे चरगाहों, टुंड्रा, सावना, बंजर व झाबर भूमि पर समुद्र और चट्टानी बालु तटो पर
प्रजनन	आंशिक
भोजन	समुद्री फेन व मछलियाँ
निवास स्थान	अंटार्कटिका के तटीय क्षेत्रों में
शारीरिक संरचना	नर–मादा में कोई अन्तर नहीं

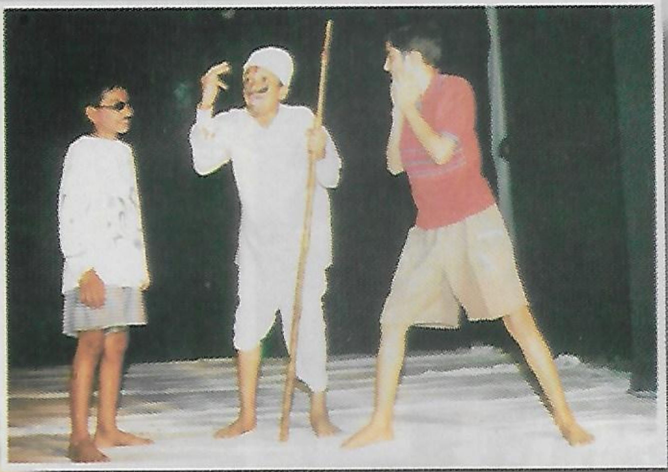

हास्य नाटक ने सभी को
दिल खोलकर हँसाया

नाटक युग पुरुष में सिकन्दर
और चंद्रगुप्त का द्वन्द्वयुद्ध

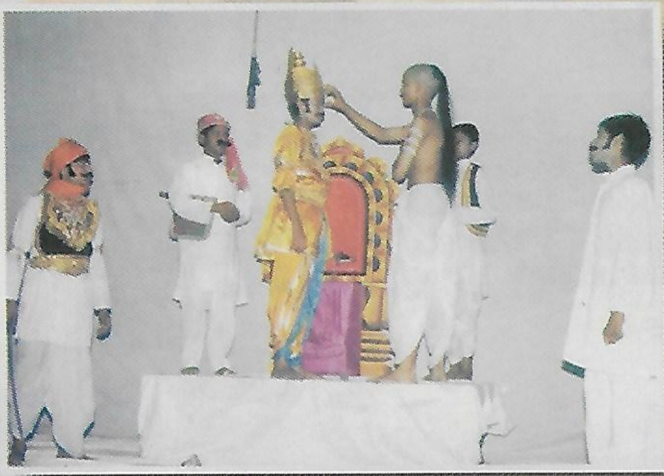

चंद्रगुप्त का राज्याभिषेक
करते हुए चाणक्य

खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में विजयी छात्र
अपने कुंज -ध्वज लिये प्रधानाचार्य जी के साथ

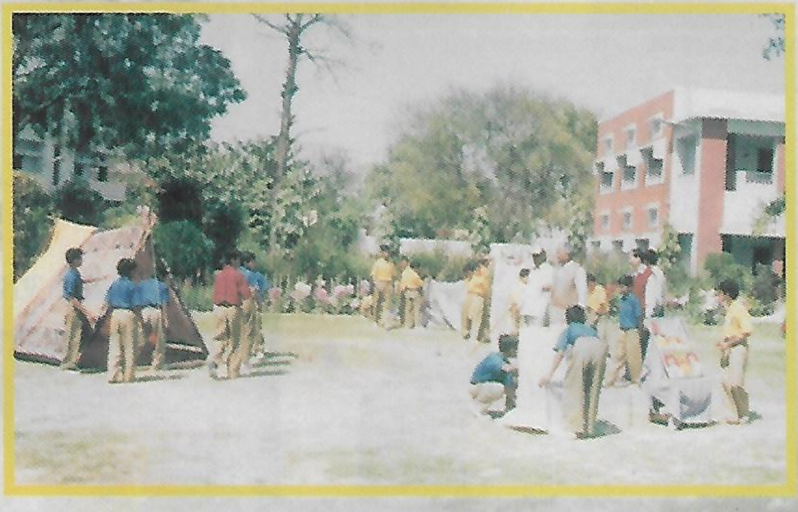

विद्यालय प्रांगण में पटकुटी शिविर लगाते छात्र

रोचक जानकारियाँ

संकलन :– अभिनन्दन तिवारी
नवम 'ख

१. सबसे कम शिक्षित लोग बदायूँ जिले में है यहाँ केवल ६.६% लोग पढ़े लिखे है।
२. सेलेनिक अम्ल एक मात्र ऐसा अम्ल है जिसमें सोना भी घुल जाता है।
३. शक सम्वत का प्रारम्भ कनिष्क ने किया था।
४. हमारे फेंफड़ों में ३० करोड़ कूपिकायें होती हैं।
५. चूहे एक मिनट में २०० बार साँस लेते हैं।
६. विश्व का सबसे मीठा पदार्थ तालीम प्रोटीन है। यह चीनी से पाँच हजार गुना अधिक मीठा है।
७. विश्व प्रसिद्ध सितारवादक पण्डित रविशंकर एक सेकेण्ड में चौबीस सरगम बजाते हैं।
८. मच्छरों के ४८ दाँत होते हैं।
९. विश्व का सबसे बड़ा बन्दरगाह अमेरिका के न्यूयार्क शहर में है।
१०. संसार का सबसे बड़ा जहाज नार्वे में है इसकी लम्बाई १०३५ फुट व साढ़े सता इंच है। इसका खाली वजन ७०२०० टन है।
११. संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय मास्को में है।
१२. विश्व का सबसे बड़ा अजायब घर लन्दन में है।
१३. सूर्य की किरणें पृथ्वी पर ५००० सेकेण्ड में पहुँचती हैं।
१४. एक मिनट में मनुष्य के मस्तिष्क में १०० शब्द ग्रहण होते है।
१५. पाकिस्तान के राष्ट्रीय झण्डे का नाम 'कौमी परचम' है।
१६. विश्व में सोने का सबसे लम्बी खान ३.३ किमी. लंबी है।
१७. भूकम्प ५० किमी. से १०० किमी. की गहराई में उत्पन्न होते हैं।
१८. कार्बेट राष्ट्रीय पार्क को पहले हैले पार्क कहा जाता था।
१९. बीट्रेक्स विश्व का सबसे कड़वा पदार्थ है।
२०. तिमि मछली अण्डे नही देती है।
२१. नील नदी का पानी गर्म होता है।
२२. मनुष्य के वजन का १०००० गुना कम वजन चीटी का होता है।
२३. विश्व में २७९२ भाषा बोली जाती है।
२४. राको फोरस नामक मेढ़क उड़ता है।
२५. मनुष्य के मस्तिष्क का वजन २ पौण्ड है।
२६. सबसे जहरीला पदार्थ रेडियम होता है।
२७. माचिस की डिबिया व तीली पर लाल फास्फोरस लगाते हैं।

तरह–तरह के वृक्ष

संकलन :– उत्कर्ष पाण्डेय

नवम

१. ड्रेगन वृक्ष :– हनरीफ पहाड़ी पर एक ऐसा बहुत चौड़ा वृक्ष है जिसके तने को खोखला कर सैकड़ों लोगों के बैठने का स्थान बनाया जा सकता है।

२. गौ वृक्ष :– इसके तने से गाय के दूध की तरह स्वादिष्ट एवं शक्ति दायक दूध निकलता है यह उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है।

३. सुई वृक्ष :– इस वृक्ष की पत्तियों पर सुई की तरह के काँटे होते हैं। उसे खींचने पर तार निकलता है जिससे कपड़े सिले जा सकते हैं। यह वृक्ष मैक्सिको में होता है।

४. गैस वृक्ष :– यह पौधा रात्रि में प्रकाश देता है यह हिमालय पर्वत पर पाया जाता है।

५. सबसे लम्बा वृक्ष :– इसे जनरल शरमन कहते हैं यह ३८० फुट तक लम्बा होता है। यह सिकुला नेशनल पार्क में है।

६. जापान के कुछ वृक्ष सूर्यास्त के बाद धुँआ देते हैं।

७. क्यूबा नामक वृक्ष भूकम्प आने से पहले आना रंग बदल देता है।

८. वर्मा में एक पार्दो नामक पौधा है जिसमें फूल खिलने पर वर्षा होती है।

९. अफ्रीका में ऐसा भी वृक्ष पाया जाता है जिसके फलों पर पिसी हुई कोई चीज या आटा डालने पर बच्चे के समान खिलखिलाकर हँसता है।

दुनिया की अनोखी झीलें

संकलन : अभिनन्दन तिवारी

नवम

१. स्याही वाली झील :– यह झील अल्जीरिया में है। इसका पानी हमेश घने नीले रंग का रहता है। परीक्षण करेन पर पाया गया कि इसमें लौह लवण व लेड ऑक्साइड मिले हैं।

२. सोने की झील :– यह झील कैलीफोर्निया में है। इस झील का नाम मोनोलेक है। इसमें स्वर्ण रेणु प्रति १०० टन ४० भाग हैं।

३. पत्थर की झील :– यह झील आयरलैण्ड में है व इसकी विशेषता है कि इसमें जो चीजे डाली जाती है पत्थर बन जाती है।

४. गायब होने वाली झील :– यह विचित्र झील आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ में है। इस झील का नाम जार्ज लेक है। इसका हैरत गुण यह है कि इसका पानी स्वयं ही सूख जाता है तब लोग इसमें खेती करने आते है तत्पश्चात स्वयं ही पानी आ जाता है।

५. तारकोल वाली झील :– त्रिनिडाड नामक द्वीप में एक विशाल झील है जिममें तारकोल भरा रहता है।

६. आग की झील :– ये हवाई द्वीप है। इसमें चौबीस घण्टे लपटें उठती रहती हैं व धुआँ निकलता रहता है। इसमें मोनालेवा नामक ज्वालामुखी के भीतर की चट्टानों से पिघला घाव भरा रहता है जो हर समय उबलता रहता है।

७. नीबू के स्वाद वाली झील :– यह झील चिली व अर्जेन्टीना देशों के बीच सीमा रेखा के रूप में बहती है। जिसका नाम रायओद विनारो हैं। इस झील के पानी का स्वाद नीबू के पानी के स्वाद जैसा है।

अनुभाग – चार

चित्रकूट–यात्रावृत्त

चित्रकूट : समाज–सेवा का प्रेरणा–केन्द्र

✍ कैलाश चन्द्र जोशी
(आचार्य)

चित्रकूट का नाम आते ही ध्यान आता है कि वह पवित्र स्थल जहाँ मर्यादा–पुरुषोत्तम श्री राम ने अपने वनवास काल के १२ वर्ष का समय व्यतीत किया था। श्रीराम की लीला को देख चुका चित्रकूट आज एक नयी लीला का अनुभव कर रहा था। यह सृजन की लीला है। सामाजिक न्याय की लफ्फाजी से दूर सामाजिक विकास का यथार्थ प्रवाह यहाँ मन्दाकिनी के कल–कल प्रवाह को द्विगुणित कर रहा है।

चित्रकूट के इस सृजन–लीला के नायक हैं श्रद्धेय 'नानीजी' देशमुख दीनदयाल–शोध संस्थान के रुप में जिस 'बीज' की कल्पना उन्होंने की थी। एक उत्कृष्ट माली की तरह उन्होंने उसे 'बोया' 'सींचा' और आज एक विशाल वट–वृक्ष की भाँति यह संस्थान अपनी नित नवीन 'शाखाओं' से सामाजिक–आर्थिक व विकास में पिछड़े लोगो को 'शीतलता' प्रदान कर रहा है।

प्रधानाचार्य जी के विशेष प्रयास व हम आचार्यो व बच्चों के उत्साह से चित्रकूट में 'शिक्षा–साधना शिविर' का आयोजन ३१ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक किया गया। इस शिविर के लिये चित्रकूट के विकास स्तम्भ बन चुके श्रद्धेय नानाजी ने 'आरोग्य – धाम' उपलब्ध कराया। हरियाली की चादर ओढ़े ऊँची–नीची पहाड़ियों पर बसा आरोग्य–धाम' स्वर्गिक सुन्दरता का आभास दे रहा था। झील, जलक्रीड़ा करती बतखे और मन्दाकिनी का प्रवाह सभी कुछ तो था वहाँ।

लगभग ६ धण्टे की लम्बी बस की यात्रा वह भी गड्ढा युक्त सड़कों पर थकान ना होना तो अस्वाभाविक ही होगा। लेकिन आरोग्य धाम का मनोरम वातावरण था या चित्रकूट की महिमा कि थकान कुछ ही देर में मिट गयी थी। यही कारण था कि 'शिक्षा–साधना–शिविर के उद्‌घाटन के कुछ ही देर बाद हम शरद पूर्णिमा के उस पावन दिन मन्दाकिनी के पावन तट (राम घाट) पर नौका विहार के लिये पूरे उत्साह व स्फूर्ति के साथ पहुँचे साथ ही नाना जी जन्मदिन के कार्यक्रम में भी शामिल हुए।

इस शिविर में जहाँ एक ओर 'हनुमान–धारा', 'गुप्त गोदावरी', सती अनुसूइया आश्रम व कादमगिरी–परिक्रमा' का आयोजन अपने पारम्परिक रूप में था वहीं दूसरी ओर एक ऐसी दुनिया के भी दर्शन हुये जो वर्तमान की इस गलाकाट 'भाई भतीजावाद' व 'भष्टाचार' के चरण को छूते समाज मे निस्वार्थ–सेवा व परोपकार की अलग ही बस्ती बनाये हुई थी। सही अर्थो में ये आधुनिक तीर्थ स्थल थे।

इन प्रेरणदायी स्थलों के निर्माण में नानाजी की सद्प्रेरणा से दीनदयाल शोध–संस्थान ने अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से अवर्णनीय योगदान दिया है। 'दीनदयाल शोध संस्थान के निर्देशन में चल रहे जिन सेवा प्रकल्पों को देखने का मौका मिला उन्हें निम्नांकित प्रकार से वर्णित किया जा रहा है –

१. **कृषि विज्ञान केन्द्र** :– भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि क्षेत्र के विकास से ही बहुसंख्य भारतीय जनसंख्या (जो गाँवो में रहती है) का विकास सम्भव है।

गरीब किसान, परम्परा के अनुसार केवल अनाज उत्पादन करने की ही कला से अवगत है। जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में आवश्यक वैज्ञानिक जानकारियाँ (जैविक खाद का अनुपात, उच्च उत्पादन क्षमता के बीजो के प्रयोग, कृषि प्रबन्धन आदि) का उसके पास सदा ही अभाव रहता है।

दीनदयाल शोध संस्थान ने इस क्षेत्र में कार्य करने के लिये मध्य प्रदेश में सतना जिले के मझगवाँ को कृषि विज्ञान केन्द्र का मुख्यालय बनाया है तथा उत्तर प्रदेश में बांदा जिले के गनीवाँ ग्राम को इस केन्द्र

का मुख्यालय बनाया है।

जिले के गरीब। अशिक्षित किसानों को वैज्ञानिक उपायों से उन्नत कृषि का प्रशिक्षण देने का दायित्व निभाना इन कृषि–विज्ञान केन्द्रों का मुख्य कार्य है।

यहाँ पर मझगवाँ के केन्द्र की एक उपलब्धि का वर्णन इस बात को और स्पष्ट कर सकता है। छोटे किसानों की समस्या समझकर नानाजी के आग्रह पर दीनदयाल शोध संस्थान ने कृषि वैज्ञानिको द्वारा ढाई एकड़ जमीन पर इस बात को सफल प्रयोग किया गया कि किस प्रकार लगभग ढाई एकड़ जमीन का मालिक सम्पन्न हो सकता है।

उन्होंने ढाई एकड़ में साल भर में एक परिवार के लिये पर्याप्त अनाज अनाज प्राप्त करने के बाद। बच्चों की पढ़ाई सामान्य खर्चो व बीमारियों को इलाज आदि करने के बाद भी लगभग छः हजार रूपये बचाने का कार्य कर दिखाया।

इस विज्ञान केन्द्र मे होने वाले इस प्रकार के अनुसन्धान व प्रयोगो का संस्थान के वैज्ञानिको व कार्यकर्ताओ द्वरा ग्रामीणों के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में सफलतापूर्वक प्रचार किया जा रहा है। इससे इन क्षेत्र के किसान लाभावित हो अपना कृषि उत्पादन सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

२. जल प्रबन्धन :– जल जीवन का आधार तत्व है। जल के अन्धाधुन्ध प्रयोग के भूगर्भ–जल का स्तर कम होता जा रहा है। हम जमीन से जल निकाल तो रहे है लेकिन उस जलकोष में उस मात्रा में योगदान नहीं कर रहे है। यह मानव जीवन के लिये घातक संकेत है। देश के जिन क्षेत्रों मे जल का स्तर पहले से ही नीचा है। वहाँ आज जल के प्रभावी व दूरदर्शी प्रयोग की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

जल प्रबन्धन इसी प्रकार की एक व्यवस्था है। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू वर्षा से प्राप्त जल को भूगभीय जल से मिलाने का प्रबन्धन करना है। इससे भूगभीय जल को स्थायित्व मिलता है साथ ही उसमें वृद्धि भी होती है। इस कारण जल प्रबंधन की दृष्टि से जल की पुनः पूर्ति के लिये तालाबो, पोखरो व कुँओं को माध्यम बनाने की अपने देश प्राचीन परम्परा रही है। इससे वर्षा का सम्पूर्ण जल समुद्र मे जाने से बच जाता था।

इस प्राचीन पद्धति की उपेक्षा कर बिजली अथवा डीजल चलित नलकूपों को अतिशय प्रयोग किया जा रहा है। परिणाम स्वरूप भूगर्भीय जलस्तर में तेजी से कमी आ रही है। मध्यप्रदेश के विध्याचल परिसर के पहाड़ी क्षेत्र में पेयजल का अत्यधिक अभाव रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान ने सतना जिले में मझगवाँ क्षेत्र के पहाड़ी अंचल में वर्षा के जल का लाभ उठाने का आदर्श प्रस्तुत किया है। तालाब आदि खुदवाकर बरसाती नदियों–नालो में बाँध बनाकर इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

वहाँ प्राप्त जनकोणी के अनुसार इस कारण इस क्षेत्र का जलस्तर बढ़ा है। फलस्वरूप केवल पेय जल की ही विपुलता नहीं हुई अपितु खेतो की सिंचाई का भी प्रबंध हुआ है।

वृक्षारोपण के कारण बंजर भूमि तथा नंगी पहाडियाँ हरी भरी होने लगी है। इसमें फलों के पेड़ों की भी पर्याप्त सख्या है। इस कार्य में स्थानीय आधार पर जनसहभागिता का भी उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिला।

३. उद्योग :– उद्योगो के विकास में तीन परस्पर पूरक व अभिन्न अंग हैं – 'पूँजी', 'व्यवस्था' तथा 'कुशल परिश्रम', उद्योगों की सफलता तथा समाज की समृद्धि इन तीन अंगों की पारस्परिक सहयोग पर निर्भर रही है। एक परिवारिक भाव ही वह कारक जो इन्हें जोड़े रख सकता है।

वर्तमान में उद्योगों में इस स्थिति का अभाव सा दिखायी पड़ता है। उद्योगपति, ट्रेडयूनियन (राजनीति) एवं श्रामिक वर्ग के त्रिकोण में फँसकर उद्योग धन्धों का विकास रुक सा गया है। अपना कानपुर नगर जो कभी 'पूर्व का मैनचेस्टर' कहलाता था आज अपनी औद्योगिक दुर्दशा पर आँसू बहा रहा है।

ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध कच्चे माल की सहायता सें सम्बन्धित उद्योगों का विकास करके पिछड़े क्षेत्रों को विकसति किया जा सकता है। इससे सस्ता माल तो उपलब्ध होगा ही साथ ही रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होगें।

स्वरोजगार के इसी मन्त्र को साकार करने के

लिये 'दीनदयाल शोध संस्थान' ने चित्रकूट को केन्द्र बनाया है। इसके लिये पचास किमी. की परिधि में आने वाले क्षेत्र को औद्योगिक विकास की प्रयोगशाला के रुप में अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण के अवसर उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाने को अभियान आरम्भ किया गया है।

इस हेतु चित्रकूट में 'उद्यमिता विद्यापीठ स्थापित किया गया है। इसमें चार माह, छः माह तथा एक साल तक के पाठ्यक्रम ही प्रशिक्षार्थियों के लिये शैक्षणिक प्रमाण पत्रों की अनिवार्यता नहीं है। प्रशिक्षार्थियों के लिये शैक्षणिक प्रमाणपत्रों की अनिवार्यता नहीं है। उद्योग प्रारम्भ करने के लिये प्रशिक्षित युवक-युवतियों के लिये पूँजी की व्यवस्था विभिन्न बैंकों द्वारा सम्भव है।

सरकार की ओर से सब्सिडी की सुविधाएँ भी उपलब्ध करायी जाती है। इसके अतिरिक्त उत्पादित माल के विपणन की व्यवस्था भी उद्यमिता विधापीठ कर रहा है।

जिन उद्योगों को लेकर दीदयाल शोध संस्थान ने कार्य किया है उनमें शामिल है बेकरी उद्योग, लोहे के सामान का निर्माण, मसाले, अचार, मुरब्बा आदि।

इसके अतिरिक्त पशुधन की महत्ता को समझ कर उस क्षेत्र में भी ग्रामीण को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

शिक्षा :- देश की स्वतन्त्रता के बाद भी शिक्षा को अनउत्पादीय; मान उस पर ध्यान ना देने का ही परिणाम ही कि आज हम शिक्षा के वास्तविक अर्थो से भटकर किताबी ज्ञान तक ही सीमित रह गये है।

विद्यालयों की चारदीवारो से बाहर निकलकर कक्षाओं में जो पढ़ाया जाता है। उसका तालमेल व्यवहारिक जीवन से होना बहुत आवश्यक है। दीनदयाल शोध संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रयोग कर रहा है।

ऐसे ही कुछ प्रयोगों को देखने का अवसर हमें प्राप्त हुआ सर्वप्रथम हमने मझगवाँ में श्रीमती कृष्णा देवी वनवासी बालिका विधालय को देखा। यह विद्यालय पूर्णतया आवासीय है। वहाँ की एक शिक्षिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी विधालय में कक्षा १ से ८ तक हैं जो इण्टर की कक्षाओ तक जायेगा। सभी बालिकाएँ परस्पर सहयोग से रहती है। रविवार के दिन बड़ी लड़कियाँ ही भोजन बनाती है। वैसे अन्य दिनों के लिये वहाँ दो कार्यकर्त्ता भोजन बनाने की व्यवस्था करते हैं।

इन लड़कियों को बागवानी का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। वहाँ हमने उन लड़कियों द्वारा लगाये गये अमरुद से के एक बाग को देखा जिसे बड़ी लगन से उन्होंने तैयार किया है।

स्थान की कमी की समस्या को जिस प्रकार मझगवाँ के इस विद्यालय में हल किया गया है उससे हम सभी प्रभावित हुए बिना ना रह सके। वही कमरा दिन में कक्षा-कक्ष व रात में छात्रावास-कक्ष बन जाता था।

इसी प्रकार चित्रकूट से उ०प्र० की दिशा में लगभग ३५ किमी० दूरी पर गनीवाँ ग्राम में हरिजन बालक-बालिकाओं के लिए भी आवासीय विद्यालय आरम्भ किया है। यहाँ भी रहने व पड़ने की व्यस्था मझगँवा की तरह की थी। जिस विशेष बात ने हम सभी को प्रभावित किया वह था 'बाल - चिकित्सक' विद्यालय के प्रबन्धक जी के अनुसार बड़ी कक्षा (विशेष कर अष्टम) के कुछ छात्र-छात्राओं को सामान्य बीमारियो से बचाव की होम्योपैथिक दवाओं का प्रशिक्षण दिया गया है। ये बच्चे अब इतने अनुभवी हो गये है कि अपने विद्यालय के छात्रों के अलावा अपने गाँवो में जाकर (सप्ताह में एक निश्चित दिन) ग्रामीणो का इलाज करते है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार के अनुसार पिछले दो वर्षो में विद्यालय में किसी चिकित्सक को नहीं बुलाया गया।

तीसरे विद्यालय जिसे हम देखने गये व 'रामनाथ आश्रमशाला' के नाम से आश्रमपद्धति से संचालित विद्यालय था। इस विद्यालय में प्राचीन आश्रम-परम्परा (वृक्षों के नीचे) को पुनः प्रचारित करने को सफल प्रयास हो रहा है। यह विद्यालय भी पूर्णतया आवासीय है।

स्वास्थ्य :- दीनदयाल शोध संस्थान ने अपने चित्रकूट प्रकल्प में आजीवन स्वास्थ्य-लाभ की दिशा में कार्य आरम्भ किया है। इस दिशा में प्राचीन भारतीय परम्परा आयुर्वेद को आधार बनाया गया है।

सामान्य से ग्रामीणों में रहन-सहन की आदतें स्वास्थ्यवर्द्धक नहीं होती। इन क्षेत्रों में रोगग्रस्त महिला-

पुरुषों के लिये भी उचित उपचार का सर्वथा अभाव होता है। चित्रकूट में 'आरोग्यधाम' के द्वारा आयुर्वेदिक योगिक एवं प्राकृतिक पद्धतियों द्वारा आजीवन स्वास्थ्य लाभ के लिये अनुसन्धान कार्य किया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र के लिये साधारण रोगो के उपचार हेतु आरोग्य धाम द्वारा 'दादी माँ का बटुआ' बनाया गया है। इस बटुए में आरोग्यधाम में ही निर्मित औषधियौ रहती है।

ग्राम के हीं समाज सेवा की भावना वालें समझदार व्यक्ति को इस काम में प्रशिक्षित कर यह 'बटुआ' दिया जाता है। इससे ग्रामवासियो सामान्य बीमारियों का डर खत्म होता जा रहा है।

आरोग्य धाम में स्वास्थ्य क्षेत्र में शोध जारी है। अब वहाँ बनी औषधियौ के विपणन की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है।

चित्रकूट धाम में चल रहे इन विभिन्न सेवा प्रकल्पों को देखने के बाद ऐसा लगा जैसे इस देश में अभी भी सेवा व समर्पण की भावना जिन्दा है।

ईसाई मिशिनिरियों द्वारा संचालित तथाकथित सेवा प्रबन्धों के माध्यम से विदेश से प्राप्त धन का लालच देकर जिस प्रकार गरीब आदिवासियों का धर्मान्तरण किया जा रहा है। इस देश के लिये किसी धीमे जहर से कम नही है। 'वोट की राजनीति' से तथाकथित 'आदर्शवादियों' की कार्य प्रणालियाँ भी सन्तोषजनक ना रह गयी हो तो ध्यान 'दीनदयाल शोध केन्द्र के समर्पित सेवा प्रकल्पो की ही ओर खिंच जाता है। और हमारे डगमगाते विश्वास को एक सम्बल मिलता है। और प्रेरणा मिलती है। खुद भी कुछ ऐसा ही करने की।

चित्रकूट के प्रमुख दर्शनीय स्थल

पुलकित अग्रवाल

एकादश – क

हम जहाँ भी जाते हैं, वहाँ के प्रमुख स्थानों का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं धार्मिक महत्व जानने का भरसक प्रयास करते हैं। विभिन्न साधनों से प्राप्त जानकारी के आधार पर विद्यार्थियों ने चित्रकूट के "शैक्षिक–शिविर" में जिन स्थालों के दर्शन किये उनका संक्षिप्त विवरण दे रहे है पुलकित अग्रवाल।

रामघाट :–

रामघाट मंदाकिनी नदी पर स्थित घाट है। राम जी ने अपने वनवास का अधिकांश समय चित्रकूट में व्यतीत किया था। उन्हीं के नाम पर इसका नाम रामघाट पड़ा। यहाँ मंदाकिनी नदी २५ फुट तक गहरी है। यहाँ शरद पूर्णिमा की रात्रि में नौका विहार किया। रामघाट से हमें प्रेरणा प्राप्त हुई कि **ध्यान रूपी स्वच्छ जल से अवगुण रूपी मैल को धोकर अपने हृदय रूपी मंदाकिनी में सद्गुणों की नौका बहानी चाहिए।**

सती अनुसूया आश्रम :–

चित्रकूट स्थित सती अनुसूया मंदिर में दर्शन हमारे लिए विशेष महत्व रखता है। इस मंदिर से हमने सीखा कि माता अनुसूया ने अपने पति के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया उसी प्रकार हमें भी **देश तथा कर्मो की सिद्धि के लिए अपने प्राणों तथा कामनाओं को न्योछावर कर देना चाहिए।**

हनुमान धारा :–

जानकी कुंड क्षेत्र में स्थित एक पहाड़ पर से प्राकृतिक रूप से एक बहुत संकरी जल धारा निकलती है।

इस धारा का नाम हनुमान जी की कई प्राण प्रतिष्ठित प्राकृतिक चित्र भी उपलब्ध हैं। इस पहाड़ में ३५० सीढ़ियाँ ऊपर चढ़कर यह धारा देखने को मिलती है। यहाँ हम सभी छात्रों ने अत्यधिक उत्साह के साथ भाग लिया व इससे ऊपर स्थित सीता रसोई के भी दर्शन किए।

सीता रसोई :–

हनुमान धारा से ४०० सीढ़ी ऊपर स्थित सीता रसोई में सीता जी भोजन बनाया करती थी। हनुमान धारा तथा सीता रसोई से हमें प्रेरणा मिलती है कि निरंतर अपने पथ पर अग्रसर रहना चाहिए ऐसा करने से साक्षात् भगवान हमें जल रूपी प्रोत्साहन देते है तथा वाद कार्य सिद्धि से मिलने वाला आनंद रूपी भोजन कराते हैं।

गुप्त गोदावरी :–

गुप्त गोदावरी पहाड़ों में स्थित गुफाओं में वह स्थान है जहाँ से गोदावरी नदी अन्दर प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है। प्राकृतिक गुफाएँ पानी के कटाव के कारण अत्यंत रमणीय प्रतीत होती है। इन गुफाओं के अन्दर का मार्ग अत्यंत दुर्गम है। इससे हमें प्रेरणा मिलती है कि कार्य सिद्धि का मार्ग चाहें जितना दुर्गम उस पर अग्रसर रहने से सिद्धि अवश्य होती है।

तुलसीदास जी का आश्रम :–

तुलसी दास जी के आश्रम में तुलसी की हस्तलिखित रामचरित मानस की प्रतियाँ रखी है। यहाँ रामचरित मानस का अयोध्या कांड भी उपलब्ध है। शेष एक पुरानी कथा के अनुसार चोरी हो गया।

कामदगिरि परिक्रमा :–

कामदगिरि पर्वत चित्रकूट में स्थित श्रद्धास्थल है। इस पर्वत पर भगवान राम ने अपने वनवास का अधिकांश समय व्यतीत किया था। इस पर्वत की यह विशेषता है कि यह कहीं से भी देखने पर धनुषाकार प्रतीत होता है। यह मान्यता है कि इसकी परिक्रमा करने से कार्यसिद्धि अवश्य होती है। अतः हम सभी छात्रों ने कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा प्रारंभ की। इसकी परिक्रमा के मार्ग के मध्य में कई धार्मिक स्थल पड़ते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख स्थलों का विवरण निम्नांकित है :–

क) कामता नाथ मंदिर :–

इस मंदिर से कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा प्रारंभ होती है। यहाँ भगवान कामता नाथ की प्राकृतिक मूर्ति प्रतिष्ठित है।

ख) राम–भरत मिलाप स्थल :–

यहाँ राम भरत, लक्ष्मण"शत्रुध्न तथा कौशल्या–सीता का मिलाप स्थल है। यहाँ कुछ चरणों के निशान बने ऐसा माना जाता है कि ये चरण राम–भरत, सीता–कौशल्या व लक्ष्मण–शत्रुध्न के हैं।

ग) लक्ष्मण टीला :–

कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा के मध्य से एक टीला पड़ता है जिसे लक्ष्मण टीला कहते है। यहाँ उन्होंने पर्णकुटी भी बनायी थी तथा यह मार्ग से १५० सीढी ऊपर चढ़कर है।

इसके अतिरिक्त हमने सोते हुए हनुमान जी की मूर्ति, बाल्यावस्था के हनुमान जी की मूर्ति, शीश मंदिर तथा अन्य बहुत से स्थान देखे। कामदगिरि परिक्रमा का कुल मार्ग साढे पांच किलोमीटर का है। परन्तु ये साढे पांच किलोमीटर ऐसे प्रतीत हुए कि अभी चार कदम ही चले हों।

प्रेरणा :–

कामदगिरि पर्वत पर भगवान राम ने लगभग ११ वर्ष का समय धैर्य पूर्वक व्यतीत किया। यहाँ राम–भरत मिलाप भी हुआ। अतः हमें यह प्रेरणा मिलती है कि प्रत्येक कार्य को धैर्य पूर्वक जिम्मेदारी से करना चाहिए तभी कार्य की सिद्धि होती है। साथ ही सबके सद्भाव की भावना होनी चाहिए।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी के निदेशक श्री सुशील कुमार का स्वागत करते श्री ओमशंकर जी

अंतर्विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में वैजयन्ती प्राप्त करते ऋषि तिवारी व अरविन्द प्रताप सिंह

ग्राम सेवा में रत दीनदयाल शोध संस्थान

✍ पुलकित अग्रवाल

एकादश – क

१ – आश्रम पद्धति विद्यालय (गनीवाँ) :– गनीवाँ स्थित दीन दयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने हम सभी को अत्याधिक प्रभावित किया। अति आदिवासी क्षेत्रों से लाए गए ऐसे छात्र यहाँ शिक्षा ग्रहण करते है जिनके पास खाने तक तो क्या पहनने के लिए भी कुछ नहीं था। दीनदयाल शोध संस्थान ने ऐसे विद्यार्थियों का सम्पूर्ण खर्च देने का निश्चय किया तथा विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ चिकित्सा सबंधी शिक्षा भी देने का प्रबंध किया। यहाँ के विद्यार्थी न केवल अपने मित्रों की चिकित्सा करते हैं बल्कि आस–पास के गावों में भी चिकित्सा के लिए जाते हैं। प्रधानाचार्य जी ने एक बाल चिकित्सक से बात की तथा चिकित्सा संबंधी सही व सुस्पष्ट जानकारी भी प्राप्त की।

२. बालिका विद्यालय (मझगवाँ) :– यह विद्यालय मध्य प्रदेश स्थित मझगवाँ नामक ग्राम में स्थित है। इस विद्यालय में आदिवासी क्षेत्रों से विवाहित तथा अविवाहित छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही है। यह विद्यालय भी दीनदयाल शोध संस्थान के अन्तर्गत संचालित है। इस विद्यालय का अविस्मरणीय प्रभाव मुझ पर यह सुनकर पड़ा कि यहाँ कि छात्राओं ने पहाड़ी क्षेत्र में पूरी जिम्मेदारी व सफलता के साथ एक अमरुद के पेड़ का बाग तैयार किया। जिसमें अति अल्प समय में ही फल आ गए। साथ ही यहाँ की एक बालिका ने पूरे मध्य प्रदेश में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया।

३. दीनदयाल कृषि अनुसंधान केन्द्र (मझगवाँ) :– मात्र दस वर्ष पहले तक मझगवाँ तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में जल नहीं पाया जाता था। यहाँ एक दिन जल का मूल्य ४ से ५ रुपये था। यहाँ पर दीनदयाल शोध सस्थान ने कृषि अनुसधान खोला तथा देश के प्रमुख वैज्ञानिकों को सेवा तथा अनुसंधान के लिए भेजा। यहाँ पर वैज्ञानिकों ने ट्रेंच बनाकर पानी को एकत्र किया जिससे इस क्षेत्र का जल स्तर २५० से ४० तक आ गया। अब यहाँ पानी की बहुतायत है। साथ ही पहाड़ पर कृषि व्यवस्था के भी उचित प्रबंध किए।

४. रामदर्शन मंदिर :– दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा निर्मित रामदर्शन मंदिर में संसार विभिन्न भागों में प्रचलित राम लीलाओं के दृश्य तथा हस्त निर्मित रामायण के प्रत्येक भाग के चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। यहाँ के तीन चित्र देखकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि हम त्रेतायुग में प्रवेश कर गए हों। विभिन्न देशों में प्रचलित रामलीला को देखकर मेरे मन से यह भ्रम सदैव के लिए दूर हो गया कि हिन्दू धर्म की और कही मान्यता तथा सम्मान नही है। इस प्रकार इस ने भी हमारे मन में अमिट छाप छोड़ी।

५. रामनाथ आश्रमशाला :– रामनाथ आश्रम–शाला विद्यालय प्राचीन काल में प्रचलित आश्रम पद्धति पर आधारित है। दीन दयाल शोध सरथान के अधीन यह विद्यालय आदिवासी तथा असमर्थ बच्चों की शिक्षा एवं सम्पूर्ण विकास के लिए बनाया गया है। यह प्राचीन काल की भांति आम के पेड़ों के नीचे सामूहिक कक्षाओं का प्रावधान है। यहाँ इस प्रकार की शिक्षा देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि हम प्राचीन काल के किसी गुरूकुल को आधुनिक रू॰ मे देख रहें हैं। मुझे इस पद्धति से विद्यालय संचालित करने का कारण यह लगा कि यहाँ आदिवासी बच्चों में पढाई का एक वातावरण सा बन जाता है। उनके अन्य साथी विभिन्न कक्षाओं में होते हुए भी उनके साथ ही पढते हैं। जिससे छात्रों में प्रेरणा व प्रतिस्पर्धा की भावना रहती है।

६. कृषि अनुसंधान केंद्र गनीवाँ :– गनीवाँ स्थित यह कृषि अनुसंधान केंद्र चित्रकूट तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में स्थापित प्रथम अनुसंधान केन्द्र है। यहाँ कृषकों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम तैयार किए जाते

हैं। यहाँ प्रति हेक्टेयर धान, आलू, तथा अन्य सब्जियों के विकास पर शोध कार्य चल रहा है। यहाँ सुअर पालन, मत्स्य पालन, गोशाला क्षेत्रों में भी शोध तथा विकास कार्य चल रहा है। इस प्रकार यह शोध केन्द्र किसानों को विविध क्षेत्रों में भी शोध तथा विकास कार्य चल रहा है। इस प्रकार यह शोध केन्द्र किसानों को विविध क्षेत्रों में ज्ञान प्रदान कर उन्हें लाभान्वित कर रहा है। यह अनुसंधान केंद्र भी दीन दयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित है।

७. आरोग्य धाम :– दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित यह केन्द्र मरीजों की विभिन्न प्रकार जैसे आयुर्वेदिक, होम्योपैथी आदि पद्धतियों से चिकित्सा करने की सुविधाओं से युक्त चिकित्सालय है। यहाँ पर औषधि के लिए आवश्यक वृक्षों तथा पौधों का एक बहुत बड़ा बाग है। यहाँ पर औषधियों का निर्माण भी होता है। आरोग्य धाम में चिकित्सा संबंधी पुस्तकों का एक पुस्तकालय भी है। आरोग्य धाम के औषधि निर्माण भवन जो ग्रामोदय नाम से प्रचलित है में च्यवनप्राश तथा विभिन्न प्रकार की सभी रोगों के लिए औषधियाँ बनायी जाती हैं। यहाँ एक गौशाला भी है जिसमें विभिन्न प्रदेशों से लायी गई गायों के विकास की योजना बनायी जाती है। आरोग्य धाम जानकी कुंड क्षेत्र में स्थित है तथा एक पहाड़ पर बना हुआ रमणीय स्थल है। यहाँ निर्मित भवनों के द्वारा सरकार को इस प्रकार के कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। यहाँ के योगसदन में ही हमारा साधना शिविर रूका था।

८. उद्यमिता व सुरेन्द्र पाल विद्यालय :– दीन दयाल शोध संस्थान के अधीन कार्यरत उद्यमिता में विभिन्न प्रकार की इकाइयाँ जैसे बेकरी इकाई, लोह इकाई, फल परीरक्षण इकाई, हस्तकला इकाई आदि हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को इन सब विषयों में पारंगत करना है। सुरेन्द्र पाल विद्यालय हमारे विद्यालय की भांति संचालित हो रहा है। यह सभी प्रकार के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते है।। यह प्राइमरी तथा उच्चमाध्यमिक विद्यालय की मान्यता प्राप्त है।

शिक्षा साधना शिविर एक अनुभव

शिक्षा साधना शिविर हम सबके लिए एक अनोखा अनुभव रहा। दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यो ने हमें प्रेरणा दी कि :–

मन में विश्वास अटल हो, कुछ करने की भावना प्रबल हो निस्वार्थता से करके देखो, तुम असंभव का संभव करने में सबल हो

नाना जी देशमुख ने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की। असंभव कार्यों को संभव करके दिखाया। उनके इस प्रकार के कार्यो को देखकर हमारे मन में नयी चेतना का विकास हुआ तथा ऐसे कार्यो के लिए प्रोत्साहन भी मिला।

शिक्षा साधना शिविर ने हम छात्रों में परस्पर भाईचारे को बढावा दिया। आचार्यों व छात्रों के मध्य निकाला शिक्षा साधना शिविर के कारण आयी। हमने साथ रहते हुए, भोजन करते हुए, यहाँ तक कि नहाते हुए एक दूसरे के विचारों को जाना, समझा। इस शिविर से हमे अनुभव हुआ कि अभी तो हमने कुछ कार्य किया ही नहीं है। अभी जीवन में जितना लक्ष्य बनाया था उससे कहीं अधिक कार्य और करना चाहिए। इस शिविर ने हमें वास्तविक जीवन का परिचय कराया। आदिवासी छात्रों से मिल के ऐसा लगा कि हम कितनी अधिक सुख सुविधाओं में पले हैं, हम कितने सौभाग्यशाली हैं। इस प्रकार शिक्षा साधना शिविर ने हमें जीवन की सच्चाइयों का अनुभव कराया।

राधा पीड़ा का प्रबन्ध है श्याम कर्म की गीता
श्री राम जगत आधार यज्ञ की अग्नि ज्वाल है सीता
मानवता की व्यथा कथा युग बाल्मीकि कहता है
अधिकारों की रक्त धार में व्यास अवश बहता है।

देवभूमि पर चार दिन

✍ रोहित कटियार
सप्तम 'क'

यात्रावृत्त हिन्दी साहित्य की सुरुचिपूर्ण और समृद्ध विधा है। यात्रावृत्त वह ही सार्थक होता है जो पाठक के समक्ष चित्रपट की तरह सारे दृश्य उकेर दे। राहुल सांस्कृत्यायन दुनिया के सबसे बड़े घुमक्कड़ थे। जिस देश में पहुँचे वहाँ की भाषा सीखी, वहाँ का साहित्य पढ़ा और बहुत कुछ लिखा। लेकिन यहाँ बात राहुल जी की नहीं रोहित की है जो चित्रकूट के शैक्षिक–शिविर में गए थे और उन्होंने अपनी उम्र से बेहतर लेखन किया है।

यात्रा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है। यात्रा से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं होता। पुस्तकें कुछ–कुछ यात्रा का रस प्रदान कर सकती हैं परन्तु वह यात्रा का पूर्ण प्रतिबिम्ब नहीं हो सकता। मानचित्र देखकर कोई किसी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तो जान सकता है परन्तु वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति नहीं कर सकता। उसको स्वयं में किसी क्षेत्र को समझने का सबसे बेहतर उपाय उसे देखना, घूमना एवं उसका निरीक्षण करना है।

यही उद्देश्य लेकर हमारे विद्यालय ने इस बार चित्रकूट देशदर्शन आयोजित किया। हमारा विद्यालय पूर्व में भी तीन देशदर्शन आयोजित कर चुका है, जो देवभूमियों के थे। इस वर्ष हमारे विद्यालय ने चित्रकूट देशदर्शन आयोजित किया। यह ऐतिहासिक और पौराणिक दोनों प्रकार के महत्व का है। इस देशदर्शन की सूचना हमें द्वितीय मासिक परीक्षाओं से पूर्व ही मिल गई। तिथि निर्धारित थी २३ अक्टूबर परन्तु आकस्मिक कारणों से तिथि परिवर्तित करके ३१ अक्टूबर कर दी गई। शिविर लगने का स्थान आरोग्य धाम बताया गया। इसे नाम दिया गया– शिक्षा साधना शिविर। कुल १०१ छात्र जाने के लिए तैयार हुए।

३१ अक्टूबर को हमने सुबह ७:०० बजे हनुमान जी का आशीर्वाद ले व प्रसाद ग्रहण कर दो यात्री बसों से चित्रकूट प्रस्थान किया। रास्ते में फतेहपुर बाँदा होते हुए हम चित्रकूट पहुँचे। मार्ग की ६ घण्टे ३० मि० लम्बी यात्रा का कष्टकारी अनुभव तब आनन्द में परिणत हो गया जब हमने आरोग्य धाम की मनोहर छटा का अवलोकन किया।

वर्णनातीत सौन्दर्य में चार चाँद लगाता वैदेही सरोवर में गिरता कृत्रिम और मनोहर फौव्वारा। शीघ्र ही बड़े छात्रों ने बस से सामान उतारा और हम सब अपना–अपना सामान लेकर सामने वाले आयुर्वेद सदन में गए। वहाँ एक कमरे में अपना सामान रखकर विद्यालय वेश पहनकर शिविर उद्घाटन समारोह में भाग लेने भवन के प्रांगण में उपस्थित हुए। वहाँ हमें नाना जी देशमुख का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ तथा समारोह के बाद आरोग्य धाम के श्री राम जी ने हमें आगे के कार्यक्रम बताए। इसके बाद हम लोग बस से लगभग १ किमी दूर रामघाट (मंदाकिनी नदी) गए। यह वही घाट है जहाँ पर तुलसी और राम का मिलन हुआ था। यहाँ से हम चाँदनी रात में नौका विहार का आनन्द लेते हुए नाना जी के घर पहुँचे। वहाँ पर सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहा था। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद हमने धीर ग्रहण की। खीर ग्रहण करके हम वापस आरोग्य धाम लौटे। कुछ विश्राम के पश्चात् हम भोजन ग्रहण करके सो गए। सुबह जल्दी उठना था। पूर्व सूचना के अनुसार हमें स्नान के लिए प्रतिदिन मंदाकिनी नदी जाना था।

अगले दिन १ नवंबर की सुबह नित्यकर्म करके हम मन्दाकिनी नदी गए। नदी बहुत दूर नहीं थी। सुबह ५

बजे नदी के शीतल जल में नहाने का साहस न हुआ। पर आचार्य श्री उमेश जी के साथ गए एक दल को नहाता देखकर कुछ उत्साहित हुआ। आशा के विपरीत नदी का जल बहुत ठण्डा न था। स्नान के बाद आनन्द का वर्णन शब्दों में करना असभव है। नहाकर विद्यालय वेश पहनकर तैयार हुए और फिर जलपान दिया गया। जलपान ग्रहण करके हम मझगवाँ की ओर चल दिए। दोपहर तक कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ पहुँच गए। वहाँ के विभिन्न प्रयोग जैसे चट्डैम बनाकर जल संग्रहण, ट्रेन्च खोदकर पहाडी क्षेत्रों को भी उपजाऊ बनाना देखकर हमने ज्ञानार्जन किया। वहीं पर हमने भोजन किया। फिर निकटस्थ कृष्णा देवी बालिका विद्यालय देखने गए। वहाँ बालिकाओ द्वारा बनाए गए अमरुद के बाग को देखकर हमें बहुत प्रेरणा प्राप्त हुई। मझगवाँ से लौटते समय मुख्य मार्ग से आठ किमी दूर गुप्त गोदावरी के दर्शन किए। वहाँ पर पाखण्डियों को श्रद्धालुओं की भावनाओं को आहत करके उनसे धन लूटते देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। वहाँ आरोग्य धाम लौटते समय हमने सती अनुसूया और कर्ण ऋषि आश्रम देखा। वहाँ के परम हंस धाम में हमने सती अनुसूया के जीवन से सम्बन्धित चित्र तो देखे ही साथ ही साथ समन्वय की भावना और साम्प्रदायिक सद्भाव को प्रदर्शित करता ईसामसीह का चित्र और उनका श्री राम के विषय में कथन भी देखा। वहाँ से लौटते समय हम रामदर्शन गए। वहाँ हनुमान जी की विशाल मूर्ति देखी। हमने विभिन्न मुखौटों, चित्रों, पुस्तकों तथा एक चलचित्र द्वारा यह जाना कि राम विश्व के प्रत्येक देश में हैं चाहें वह जावा हो, सुमात्रा हो, चीन हो, फिलीपींस हो या इण्डोनेशिया। फाइबर निर्मित कृत्रिम गुफा से गुजरकर, चित्रों, भित्तिचित्रों तथा जीवन्त मूर्तियों के माध्यम से हमने राम के चरित्र को जाना। वहाँ से हम वापस आरोग्य धाम लौटे। विश्राम के उपरांत हमने भोजन ग्रहण किया और सो गए।

अगले दिन २ नवंबर को सुबह ६:०० बजे हम हनुमान धारा दर्शन के लिए लगभग ५०० सीढियाँ चढ़कर हनुमान धारा पहुँचे। वहाँ हनुमान जी की एक मूर्ति की बायीं भुजा पर एक जल धारा गिर रही थी। वहाँ से हम ८:०० बजे लौटे और कुछ समय पश्चात् उद्यमिता पीठ के लिए प्रस्थान किया। उद्यमिता पीठ एक व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र है जहाँ आसपास के क्षेत्रों के ग्रामीण बेरोजगार लोगों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। ताकि वे अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकें और प्रशिक्षण के बीच निर्मित वस्तुओं के बेचा जाता है। इसकी तीन इकाइयाँ हैं – लौह कार्य इकाई, खाद्योन्पादन इकाई और बेकरी इकाई यहीं इसी के साथ हमने सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय देखा। यह सुविधा सम्पन्न विद्यालय है तथा इसने इसी वर्ष इण्टरमीडिएट तक की मान्यता प्राप्त की है। यहाँ बहुत ही कम शुल्क में आसपास के ग्रामों के निर्धन बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है। इसी शृंखला में हमने 'नन्ही दुनिया' देखी जहाँ बच्चों को उनके परिवेश से शिक्षा प्रदान की जाती है। यहाँ उस समय रेडक्रॉस का शिविर लगा हुआ था जिससे इन बच्चों को सेवाभावना और कर्तव्यपरायणता मिलती है। वहाँ से लौटकर हम आरोग्य धाम आए और भोजन किया और कुछ विश्राम के पश्चात् आरोग्य धाम का भ्रमण किया। आरोग्य धाम या जे०आर०डी० टाटा आयुर्वेद एवं योग विज्ञान संस्थान दीनदयाल शोध संस्थान की चित्रकूट शाखा का केन्द्र है। सर्वप्रथम हमने इसके निदान सदन को देखा। यह यहाँ का बाह्य रोगी विभाग है। यहाँ पर हमने उनके सात उद्देश्य जाने। इसके बाद हमने औषधि उद्यान में विभिन्न औषधियों के निर्माण को देखा और गोशाला में गोपालन। आरोग्य धाम से ४:०० बजे हमने गनीवाँ के लिए प्रस्थान किया। गनीवाँ के तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र सबसे रोचक प्रयोग केंचुओं द्वारा खाद निर्माण था। इसके बाद हम परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गए। वहाँ की एक विशेष बात वहाँ के बाल चिकित्सक थे जो अन्य छात्रों की चिकित्सा तो करते ही है। साथ ही पास के गावों में जाकर लोगों की चिकित्सा करते हैं। यहाँ से हम राजापुर गए जो तुलसीदास जी की जन्मस्थली व कार्यस्थली है। यहाँ पर हमने रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड की मूल प्रति देखी। वहाँ से हम वापस आरोग्य धाम आ गए।

अगले दिन ४ अक्टूबर को सुबह ७:०० बजे हम जलपान ग्रहण करके कामदगिरि गए। वहाँ से वापस आरोग्यधाम लौटकर अपना–अपना सामान बस में लादा तथा विद्यालय वेश पहनकर शिविर समापन समारोह में

भाग लिया। इसके बाद भोजन हुआ जिसमें नाना जी भी सम्मिलित हुए। एक बजे हम आरोग्य धाम से निकले तथा २:०० बजे आश्रमशाला पहुँच गए। आश्रमशाला पूर्ण आश्रम पद्धति विद्यालय है। यहाँ स्वदेशी को युगानुकूल बनाया गया है। यहाँ के बच्चे आत्मनिर्भर हैं। ये अपना साबुन, चॉक आदि खुद बनाते हैं। यहाँ से हमने ३:०० बजे कानपुर के लिए प्रस्थान किया और मार्ग में यात्रा का आनन्द उठाते हुए रात्रि ११:३० बजे विद्यालय पहुँच गए।

आज इस यात्रा को बहुत दिन नहीं हुए परन्तु समय बीतने के साथ ये भी विस्मृत होती जाएगीं। गंगा मंदाकिनी आज मन को झंकृत करती है शायद कल ऐसा न हो। क्या इनका स्थान सिर्फ धूमिल यादों तक ही शेष है। हृदय से स्वर उठता है नहीं मैं तुम्हें भूला नही हूँ। अंतः करण कहता है मेरा इन्तजार करना मैं फिर आऊँगा। पुनः–पुनः आऊँगा।

चित्रकूट की डायरी

✍ प्रज्ञेश गुप्त

एकादश 'क'

प्रज्ञेश विद्यालय के लगभग सभी कार्यक्रमों में ब्योरा तैयार करने में अपनी भूमिका निभाते हैं। चित्रकूट शिविर की एक–एक घटना उन्होंने सिलसिलेवार अपनी डायरी में लिखी है।

शैक्षिक शिविर का प्रारंभ (दिनांक ३१–१०–२००१)

सभी छात्रों का जागरण प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में ४:०० बजे हुआ। ४:०० बजे से ६:०० बजे तक सभी छात्रों तथा आचार्यो ने अपनी प्रातःकालीन क्रियाओं को पूर्ण किया। ततपश्चात् प्रातः ६:०० बजे सभी ने पवनपुत्र हनुमान जी की पूजा, अर्चना करके जलपान किया। सामान बस में चढ़ाकर सभी बस में विराजमान हुए। शिविर के लिए दो Tourist बसों की व्यवस्था की गयी थी तथा साथ में विद्यालय बस भी थी।

'सियावर राम चन्द्र की जय' 'पवनपुत्र हनुमान की जय', 'भारतमाता की जय', आदि का जयघोष करते हुए विद्यालय परिवार ने प्रातः ७ बजकर ३८ मिनट पर राम की तपस्थली, तुलसीदास की कर्मस्थली, सती अनुसुइया आदि देवी देवताओं की पूज्य धर्मस्थली चित्रकूट की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में हम लोगों ने लगभग ११:३० बजे शाह नामक एक कस्बे में एक ढाबे में बैठकर भोजन किया फिर हम लोग चित्रकूट के लिए चल दिये। हम लोगों ने ४ बजे के आस–पास चित्रकूट मे प्रवेश किया। और लगभग ४:३५ पर आरोग्य धाम पहुँच गए। वहाँ पर पहुँचकर हम लोगों ने बस से सामान उतारा और जहाँ पर जिसका स्थान निश्चित था, वे अपना सामान लेकर वहाँ पहुँच गए।

शैक्षिक साधना शिविर का उद्घाटन

शैक्षिक साधना शिविर उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि युगद्रष्टा, सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी द्वारा हुआ। संयोगवश उसी दिन नानाजी का जन्म दिवस था। मा. प्रधानाचार्य जी ने इस अवसर पर नानाजी का माल्यार्पण तथा उत्तरीय भेंट कर सम्मान किया गया। नाना जी ने अपन प्रेरणादायी संबोधन से हम

सभी का मार्गदर्शन किया।

उनके वक्तव्य के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं – "सभी प्राणी खाते, पीते हैं, पेट भरते हैं, कमाते हैं और अपना जीवकोपार्जन उचित प्रकार से करते हैं चाहे वह मनुष्य हो या फिर कोई जानवर ही क्यों न हों ? परन्तु मनुष्य जानवर से अलग है। मनुष्य जानवर से अलग क्यों है ? आखिर कौन सी ऐसी चीज है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करती है। सभी मनुष्य जिनके पास पढ़ने की उचित सुविधायें हैं, वे पढ़ते हैं। आप लोग भी पढ़ते हैं। आखिर आप लोग दीन दयाल विद्यालय में ही क्यों पढ़ते हैं। ? शिक्षा मनुष्यों को ही क्यों दी जाती है, आखिर पशुओं को क्यों नहीं दी जाती है ?"

आगे नानाजी अपने जीवन की ही एक घटना के माध्यम से बताते हैं कि "हम लोगों को जीवन पर्यन्त ऐसे महापुरुषों अथवा प्राणियों की जीवनी पढ़ते रहना चाहिए जिससे हमें कुछ सीख मिलती है। हमें महापुरुषों के जीवन की ऐसी घटनाओं को पढ़ना चाहिए तथा अपने जीवन में उतारना चाहिए जिसके कारण वे महापुरुष बने।"

नानाजी स्वयं भी महापुरुषों तथा प्राणियों की जीवनी पढ़ा करते हैं उन्होंने कहा कि जब तक उनकी आँखे काम करेंगी और उनकी साँसे चलती रहेगी तब तक वे जीवनियाँ पढ़ते रहेंगे। यहाँ तक कि उन्होंने गधे की जीवनी भी पढ़ी है।

उद्घाटन कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य पं० ओम शंकर त्रिपाठी जी ने अपने वक्तव्य के द्वारा सर्वप्रथम माननीय नानाजी के प्रति आभार प्रकट किया जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय छात्रों तथा आचार्यों के बीच दिया। इसके बाद प्रधानाचार्य जी न माननीय नानाजी से सविनय निवेदन किया कि वे दिनांक २३–०२–२००२ को विद्यालय के स्थापना दिवस पर आकर पाठ्य तथा पाठ्येत्तर गतिविधियों में अव्वल रहे छात्रों को पुरस्कारित करें। ततपश्चात् राष्ट्रगीत द्वारा इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस कार्यक्रम के पश्चात् सभी छात्रों तथा आचार्यों ने जलपान ग्रहण किया और रामघाट की ओर प्रस्थान किया।

रामघाट – प्रस्थान, भ्रमण, नौकायान

हम लोग ६:४५ पर रामघाट पर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर मन्दाकिनी नदी पर हम लोगों ने नौकाविहार किया और साथ ही साथ अनेक देवी–देवताओं की जयकार की। चूंकि आज शरद पूर्णिमा थी और ऐसा प्रचलित है कि उस दिन चन्द्रमा अपनी अमृतकला में अमृत वर्षा करता है। इस पवित्र दिन पर तथा नानाजी के जन्म दिवस पर उनके ही आवस पर मन्दाकिनी नदी के तट पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम को शरदोत्सव कार्यक्रम का नाम दिया गया था। इस कार्यक्रम में सन्त पाठक जी ने नानाजी को उनके जन्मदिवस पर अपनी कविता द्वारा बधाइयाँ दी। उनकी कविता पाठ का प्रमुख अंश 'नाना जी का जन्मदिवस शत–शत आज बधाइयाँ .....' था। जिसने सभी के मन को मोह लिया। इस कार्यक्रम में जूनियर अनूप जलोटा के नाम से जाने जाने वाले श्री पवन तिवारी की सशक्त अभिव्यक्ति 'रामकहानी, सुनो रे राम कहानी' के द्वारा सारा वातावरण राममय ही कर दिया। कार्यक्रम के पश्चात् नाना जी की ओर से सभी को खीर खिलायी गयी। नाना जी के आवास पर डॉक्टर हेडगेवार की विशाल मूर्ति लगी थी जिसके रंग बिरंगे रंगों ने अपनी सुषमा बिखेरते हुए सभी का मन मोह लिया। इस कार्यक्रम के बाद हम लोग लगभग ८:०० बजे आरोग्य धाम पहुँचे जहाँ पहुँचकर हम लोगों ने भोजन किया और रात्रि १०:०० बजे दीप विसर्जन किया। इस प्रकार ४ दिन के शैक्षिक शिविर का पहला दिन समाप्त हुआ।

(दिनांक १–११–२००१)

प्रातःकाल ब्रह्मवेला में हम लोगों का जागरण हुआ फिर हम लोग नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर मन्दाकिनी

नदी में स्नान करने के लिए गए। वहाँ से आकर थोड़ी देर मैं आरोग्य धाम के प्रागंण में टहला जिससे मन को बड़ी शान्ति मिली। इसके बाद सभी लोग स्वल्पाहार करके कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ जाने के लिए तैयार हुए। हम लोगों ने ८:१५ पर आरोग्य धाम से प्रस्थान किया। आरोग्य धाम से कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ (सतना) लगभग ३५ किमी० दूर था। हम लोग लगभग ६:३५ पर कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ पहुँच गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ (सतना)

किसी भी कृषि क्षेत्र को कृषि विज्ञान केन्द्र तभी घोषित किया जाता है अथवा वह इसके अन्तर्गत आता है जब तक इसके पास कम से कम ५० एकड़ जमीन नहीं हो जाती है। कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ की स्थापना माननीय नानाजी देशमुख की प्रेरणा द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली द्वारा मार्च १९९१ में सतना जिले में हुई। इस क्षेत्र में पहले बड़े – बड़े पहाड़ थे परन्तु दीन दयाल शोध संस्थान के तथा वहाँ के लोगों के अथक प्रयास के द्वारा आज यह एक कृषि विज्ञान केन्द्र बन गया जहाँ पर न जाने कितनी प्रकार की सब्जियाँ, फल–फूल और बड़े–बडे लहलहाते वृक्ष हैं। इस क्षेत्र में पहले जल की बहुत कम व्यवस्था थी। परन्तु इन लोगों ने वर्षा के जल को विविध विधियों द्वारा रोककर आज इतनी मात्रा में जल उपलब्ध कर लिया है कि किसी को जल की अप्राप्ति नहीं होती। इन लोगो ने वर्षा के जल रोकने के लिए बड़े–बड़े तालाब बनाए और बाँध बनाए तथा नाले भी बनाए गए। एक स्थान जो बिल्कुल बंजर था वहाँ पर पहाड़ था। पहाड़ ढालू होने के कारण वर्षा का सारा जल बह जाता था। इस वर्षा के जल को संचित करने के लिए उन्होंने पूरे पहाड़ में ऊपर से नीचे तक एक कतार मे मेड़ बना दीं तथा थोड़ी–थोड़ी दूर पर गढ्ढा करके उसमें अच्छी खाद तथा मिट्टी मिलाकर छोटे–छोटे पेड़ लगाए थे जो आज भी फलफूल रहे हैं। वे अपने प्रयोग गाँव–गाँव में जाकर चलाते हैं जिससे जिन लोगों के पास अपना घर चलाने के लिए पैसा नहीं है वे इन योजनाओं के द्वारा घर भी चला लें और अपने पुत्रों को पढ़ा भी लें। उन्होंने एक इस प्रकार की योजना भी बनायी थी जिससे जो बहुत गरीब कृषक हैं – उनको भी सारे खर्चे, पढ़ाई के बावजूद करीब साढ़े ६ हजार रूपये वार्षिक मुनाफा हो।

कृषि विज्ञान केन्द्र के उद्देश्य

१. ग्रामीण कृषकों को इस बात की जानकारी देना कि उनके पास कौन–कौन से उपलब्ध संसाधन हैं तथा उनका कैसे सदोहन किया जा सकता है।

२. कृषि विज्ञान केन्द्र का मुख्य उद्देश्य गाँव–गाँव में जाकर कृषकों के लिए स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करना।

कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण करने के पश्चात् हम लोगों ने वहीं पर एक प्रांगण में बैठकर भोजन किया। ततपश्चात् हम लोग कृषि विज्ञान केन्द्र के समीप दीन दयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित 'कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवाँ' में गये।

कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय, विद्यालय

हम लोग १२:०५ पर इस विद्यालय में पहुँचे। वहाँ पर पूजा स्थल में बैठने के बाद बालिकाओं ने 'हम भारत के बच्चे कुछ कर के दिखाएंगे, दुनियां भर के लोगों को अपना मित्र बनाएंगे।' सुन्दर सा गीत प्रस्तुत किया। वहाँ की प्रधानाचार्या ने अपने विद्यालय के परिचय में बताया कि इस समय वहाँ पर १०० बालिकाएं पढ़ती हैं जो वहीं पर छोटे–छोटे कमरों में रहती हैं। पढ़ती है– व्यायाम करती हैं, साज सज्जा आदि अनेक कार्य करती हैं। वे रोज कुछ न कुछ समय बागवानी को भी देती हैं। उन्होंने बताया कि शुरुआत में इनको वहाँ पढ़ने हेतु लाने के लिए उनके अभिभावकों को धन का लालच दिया गया और जब वे यहाँ आयीं तो दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा उनको जो कपड़े दिए जाते थे, वे फेंक देतीं थीं। परन्तु आज वे यहाँ आनन्दपूर्वक रहती हैं और विद्यालय के कार्यों में सहयोग देने के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र में कृषि कार्यों में भी श्रम करती हैं। ये बालिकायें बहुत ही गरीब परिवारों

से आयीं थी।

उन्होंने आगे बताया कि सभी बालिकाओं को अमरुद का एक–एक पेड़ लगाने के लिए कहा गया था। इन बालिकाओं ने पूरी मेहनत के साथ अमरुद के पेड़ लगाए और आज अमरुद का एक पूरा बाग तैयार हो गया। यह उनकी लगन को प्रकट करता है।

इसके बाद अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि दीन दयाल शोध संस्थान द्वारा सचालित विद्यालय तथा दीनदयाल विद्यालय इन सब का उद्देश्य हिन्दुत्व की रक्षा करना है। अगर आप लोग पाश्चिमीकरण से संघर्षरत हैं तो हम लोग हिन्दी माध्यम के विद्यालय द्वारा समाज के पिछड़े लोगों को ईसाइयत से मुक्त करके धर्मान्तरण को कडा जवाब दे रहे हैं।

इसके बाद हम लोगो ने १:४५ पर मझगवाँ से गुप्त गोदावरी के लिए प्रस्थान किया।

गुप्त गोदावरी

हम लोग २:४५ पर गुप्त गोदावरी पहुँच गए। यहाँ पर पहुँचकर हम लोगों ने गोदावरी में प्रवेश किया। इसमें दो गुफाये थी। पहले हम लोग प्रथम गुफा में गए जहाँ पर घुटनों तक पानी था। इस गुफा में भ्रमण करते समय हम लोगों ने अनेक देवी–देवताओ तथा गोदावरी मैया के दर्शन किए। यहाँ पर राम सीता तथा लक्ष्मण की प्रतिमायें लगी है। यहाँ पर एक स्थान है जहाँ पर खटाखटा चोर एक शिलाखण्ड के रूप में ऊपर लटका है। खटाखटा चोर सीता जी के कपडे चुरा लेता था। इसलिए एक बार श्रीराम चन्द्र जी ने उस चोर पर अपना तीर छोड़ा और वह ऊपर जाकर लटक गया।

प्रथम गुफा की परिक्रमा करने के बाद देवताओ को प्रणाम करते हुए हम लोग बाहर निकले गुफा के अन्दर कटे हुए पहाड़ों की प्राकृतिक कटान को देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते थे। यह प्रकृति की अनुपम कारीगरी है। इन गुफाओं के अन्दर गोदावरी नदी का जल है जिससे ये शोभायमान होती हैं। गुप्त गोदावरी की गुप्त धारा का पता आज तक कोई नहीं लगा पाया।

गुफाओं से बाहर आकर कुछ छात्रों तथा आचार्यो ने दुकानों में बिक रही धार्मिक पत्रिकायें खरीदी तथा कुछ धार्मिक शिलाखण्ड भी खरीदे। यहाँ से आकर हम लोगो ने छोटा सा स्वल्पाहार किया।

गुप्त गोदावरी के दर्शन करने के पश्चात हम लोगों ने ३:४५ पर सती अनुसुइया मंदिर की ओर प्रस्थान किया।

सती अनुसुइया मंदिर

हम लोग ३:४५ पर सती अनुसुइया मंदिर पहुँच गए। परम हस आश्रम के पास नवनिर्मित सती अनुसुइया मंदिर मे महासती अनुसुइया के जीवन चरित्र पर आधारित अनेक प्रसंग भित्तिमूर्तियों के रूप में चित्रित हैं। अनुसुइया जी और इनके पति अत्रि मुनि का आश्रम पहाड़ी के ऊपर कामतानाथ से लगभग १० मील दक्षिण में है। यहाँ एक मंदिर में अत्रि मुनि, अनुसुइया और उनके पुत्र दत्तात्रय, दुर्वासा तथा चन्द्रमा की मूर्तियाँ है। यहाँ कुछ महात्मा लोग रहते हैं। जिनके कारण यात्री जनों को किसी भी प्रकार का डर रहता है।

इसी मंदिर के किनारे नदी के तट पर एक स्फटिक शिला है जिस पर अत्रि मुनि बैठते थे। यह शिला सफेद रंग की थी। नदी तट पर सभी लोगो ने मछलियों को दाने खिलाकर आनन्द लिया। सती अनुसुइया मंदिर का भ्रमण करने के बाद हम लोगों ने ४:४५ पर रामदर्शन मन्दिर के लिए प्रस्थान किया।

राम दर्शन मन्दिर

हम लोग ६:०० बजे रामदर्शन मंदिर मे पहुँच गए। इस मन्दिर का निर्माण प्रसति समाज सेवी श्री बाबा जी देशमुख से प्रेरित समाज सेवी श्री मगतु राम जयपुरिया जी ने किया। यह स्थल रामघाट से ४ किमी० की दूरी

पर है। इस मंदिर में प्रवेश करते ही सामने हनुमान जी की विशाल मूर्ति है जिनके हृदय में रामचन्द्र जी का चित्र लगा है। भगवान श्रीराम सम्पूर्ण समाज की संस्कृति, मर्यादा त्याग और तपस्या के प्रतीक थे। उनके पुरुषोत्तम रूप को देशकाल की सीमाएँ बाँध नहीं सकीं। और भगवान श्रीराम सम्पूर्ण हुए। इस मंदिर में अनेक देशों से जैसे **म्यांमार, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया** आदि से रामचन्द्र जी का स्वरूप, रावण का स्वरूप लक्ष्मण जी का स्वरूप, हनुमान, जामवन्त का स्वरूप तथा अनेक भाषाओं और स्वरूपों में लिखी गयी रामचन्द्र जी के जीवन की झांकी प्रस्तुत करने वाली पुस्तकें एकत्रित की गयी हैं। मंदिर में एक स्थान पर बैठकर सर्वप्रथम हम लोगों ने पूरे मंदिर का दृश्य टी०वी० पर देखा। इसके बाद कृत्रिम गुफा के अन्दर प्रवेश किया। इस गुफा के अन्दर श्री सुहास बहुलकर, पराग घलसासी तथा आशुतोष सरतोपदार द्वारा चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गयी श्री रामचन्द्र जी की जीवन्त झाँकी को देखा।

इस मन्दिर में गुफा से बाहर आने पर श्री रामचन्द्र जी और माता सीता की अयोध्या की राजगद्दी पर विराजमान चित्र है जिसको देखकर रामराज्य की याद आ गयी थी। आगे चलने पर काँच के डिब्बे के अन्दर विराजमान कृत्रिम बाल्मीकि जी तथा तुलसीदास जी को प्रतिमायें हैं जिसमें बाल्मीकि जी रामायण लिय रहे है और तुलसीदास जी रामचरतिमानस पढ़ रहे हें। इस भव्य रामदर्शन मन्दिर को देखकर सभी ने दाँतों तले उंगलियाँ दबा ली। इस मन्दिर में पहुँचने पर ऐसा लगता है कि वास्तव में हम लोग श्रीराम चन्द्र जी सम्पर्क में आ गए हों।

श्री रामदर्शन मंदिर को देखकर हम लोग लगभग ८:०० पर पुनः आरोग्य धाम पहुँच गए। वहाँ पहुँचने के बाद थोड़ी देर हम लोगों ने विश्राम किया तथा फिर भोजन के लिए एकत्रित हुए और भोजन के बाद हम लोगों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें छात्रों में चि० प्रकाश चन्द्र त्रिवेदी, चि० पुलकित अग्रवाल, चि० आशुतोष द्विवेदी ने कविता पाठ किया। अभिनय में भैया मयंक गुप्त, निशान्त आनन्द का एकल अभिनय रहा तथा षष्ठ कक्षा के छात्र भैया शशांक पन्त का अभिनय गति हुआ। तथा भैया अंकुर राय ने फिल्मी जगत के अनेक कलाकारों का अभिनय किया था। आचार्यों में सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर लक्ष्मण का अभिनय करने वाले श्री मनोज जी ने श्लोकों के माध्यम से कुछ कथायें हम लोगों के समक्ष प्रस्तुत कीं। श्री हेमन्त जी ने स्टीम इंजन चलने की आवाज अपने मुँह से निकाली और श्री गया प्रसाद जी का हास्य कार्यक्रम रहा। अंत में कार्यक्रम समापन में श्री वीरेन्द्र जी ने फिल्मी कलाकारों के अभिनय के माध्यम से हास्य वातावरण बनाया। रात ११:०० बजे दीप विसर्जन हुआ।

दिनांक २–११–२००१

हम लोग प्रातः ४:०० बजे जाग गए और दैनिक कार्यो से निवृत्त होकर ६:०० बजे स्वल्पाहार करके 'हनुमान धारा' की ओर चल दिए।

हम लोग ६:३० बजे हनुमान धारा पहुँच गए। वह मंदिर अत्याधिक ऊँचाई पर था। इस मंदिर में पहुँचने के लिए हम लोगों को ७०० सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ी। चढ़ते समय बीच–बीच में हनुमान जी की छोटी–छोटी प्रतिमायें थीं। थोड़ी देर बाद हम लोग ऊपर पहुँच गए। यहाँ हनुमान जी की प्रतिष्ठित मूर्ति है जिसके ऊपर एक पतली जल की धारा निकल रही है जो आगे कुण्ड में गिरती है। वहाँ पर बीच–बीच में बहुत सारे काले मुँह के बन्दर थे। लगभग ५० सीढ़ियाँ और ऊपर जाने पर सीता जी की रसोई थी पास ही में एक स्थान था जिसमें सीता जी ने पाँच ऋषियों को भोजन कराया था। निकट में ही हनुमान जी का बालक रूप में दिखाया गया। हनुमान मंदिर से चित्रकूट शहर का बड़ा ही रमणीक दृश्य दिखाई पड़ता है।

हनुमान मंदिर से लौटने के बाद हम लोगों ने ८:३० बजे उद्यमिता विद्यापीठ के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पर प्रमुख रूप से तीन इकाइयाँ थी।

१. बेकरी इकाई

२. खाद्योत्पादन इकाई

३. लौह उत्पादन इकाई

बेकरी इकाई में बिस्कुट बनाने की विधियाँ, उनको पैकटों में भरने की विधि दिखायी थी। कुछ बच्चों ने बिस्कुट खरीदे भी थे। इसके बाद खाद्योत्पादन में विभिन्न प्रकार के शुद्ध मसालों, आचार, मुरब्बा, आँवले और करौंदा के कम्पट आदि दिखाये गये और स्वाद भी करावाया गया तथा इनके बनाने की विधियाँ भी बताई गई। तत्पश्चात् लौह उत्पादन इकाई में गये जहाँ पर लोही की वस्तुएं से किस प्रकार समान बनाया जाता है, यह बताया गया। दीनदयाल शोध संस्थान में जितना भी लौह कार्य चित्रकूट में हुआ, सब यही से हुआ।

ततपश्चात् हम लोग सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय गए जहाँ की प्रार्थना में हम लोगों ने भाग लिया और इसके बाद प्रधानाचार्य जी ने उनके विद्यालय के छात्रों से बातचीत की और अपने विद्यालय के बारे में बताया। बालक तथा बालिकाओं से प्रधानाचार्य जी ने पूठे कि वे भविष्य में क्या बनना चाहते है ? इसके बाद प्रधानार्य जी ने बताया कि किसी भी कार्य को करते रहते हुए हमें कि किसी भी कार्य को करते रहते हुए हमें सदैव अपने अन्दर देश के प्रति सजगता लानी चाहिए।

तत्पश्चात् सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय के प्रधानाचार्य ने हम लोगों को अपने स्कूल के बारे में बताया तथा स्कूल की योग्यताओं के बारे में बताया। इसके बाद हम लोगों ने पूरे विद्यालय का भ्रमण किया। इसके बाद हम लोग इसी विद्यालय से सम्बन्धित छोटी बच्चों की 'नन्ही दुनिया' नामक स्कूल में घूमें। छोटे बच्चों से बातचीत की।

वहाँ से लौटकर हम लोग पुनः आरोग्य धाम और भोजन करके थोड़ी देर विश्राम करके दीनदयाल शोध संस्थान का ही एक संस्थान गनीवाँ में था, वहाँ पर गए। वहाँ हम लोग खेत के बीच से होते हुए तथा दीनदयाल संस्थान पर निर्मित पशु इकाइयों जैसे गौ पालन, सुअर पालन तथा मत्स्य पालन इकाइयाँ को देखा। फिर खेतों के बीच से होते हुए हम लोग 'परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय' में गए। वहाँ के प्रधानाचार्य जी ने विद्यालय के विषय में बताते हुए कहा कि इस विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को सुदूर क्षेत्रों के गरीब परिवारों से लाया गया है। जिनकी मासिक आय २० रु० या इससे भी कम है। ये सभी छात्रावास में रहते हैं तथा कुछ छात्रों के बीच मे एक प्रमुख होता है। उन्होंने बताया कि उनके यहाँ १८ बाल चिकित्सक हैं जो आपस में एक दूसरे का बीमार होने पर इलाज करते हैं साथ–साथ गाँव में जाकर बीमार लोगों की दवाइयाँ करते हैं वहाँ के बच्चों का एक सुन्दर सा गीत 'नदियाँ न पिएं कभी अपना जल, वृक्ष न खाएं कभी अपने फल। अपने तन को मन को धन को देश को कर दूँ दान रे। ओ सच्चा इन्सान रे ! ....।' सुनाया जिसने वहाँ बैठे सभी लोगों को मुग्ध कर दिया। इसके बाद वहां के बच्चों द्वारा नियुद्ध सिद्ध का प्रदर्शन किया गया।

आश्रम पद्धति विद्यालय, गनीवाँ में घूमने के पश्चात् हम लोग राजापुर गाँव में लगभग ५:३० बजे पहुँचे जहाँ पर तुलसीदास जी का जन्म हुआ था। तंग गलियों तथा खेत खलिहानों के बीच से होते हुए हम लोग पैदल ही तुलसीदास जी के मंदिर में गए जहाँ पर उन्हीं के द्वारा लिखी गयी रामचरित मानस के अयोध्या कण्ड के अंश को दिखाया गया। नीचे यमुना नदी का घाट था जहाँ पर बालकों ने आनन्द लिया। मंदिर का दर्शन पहुँचे। भोजन करके हम लोगों का रात्रि १०:३० बजे दीप विसर्जन हो गया।

३–०१–२००१

प्रातः ब्रह्ममूर्त में जागकर प्रातः कालीन क्रियाओं से निवृत्त होकर हम लोग ६:३० बजे कामदगिरि की परिक्रमा के लिए आरोग्य धाम से प्रस्थान किया।

७:०० बजे हम लोग कामदगिरि के पास पहुँच गए। कामतानाथ जी के मंदिर में प्रसाद इत्यादि चढ़ाने के बाद हम लोगों ने लगभग ७:३० बजे कामदगिरि की परिक्रमा प्रारम्भ कर दी। यह परिक्रमा अलग–अलग ग्रुप में थे। कुछ लोग आठ–आठ के ग्रुप में परिक्रमा लगा रहे थे। मेरे ग्रुप में श्री कैलाश जी, चि० मयंक गुप्त, चि० अवतंस

प्रभात, चि० अभिषेक और चि० संतग्नि थे। हम लोग विभिन्न मंदिरों के दर्शन करते हुए एक स्थान पर गए जहाँ पर राम--भरत, लक्ष्मण--शत्रुघ्न, सीता--कौशल्या का मिलाप हुआ था। वहाँ पर उनके पदचिह्न भी देखने को मिले जिनके चरण स्पर्श करके हम लोग आगे बढ़े। इसके बाद एक स्थान पर हम लोग आगे बढ़े। इसके बाद एक स्थान पर गए जिसे 'लक्ष्मण टीला' कहते है वहाँ पर लक्ष्मण जी पहरा दिया करते थे। वहाँ पर अन्दर एक मंदिर था जिसमें लक्ष्मण जी के खडाऊ थे जिनको चरण स्पर्श किया। लक्ष्मण टीला में पहुँचने के लिए १५८ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है। इसके बाद हम लोगो ने परिक्रमा जारी रखा। आगे बढ़ते हुए हम लोग एक मंदिर में आए जहाँ पर लेटे हुए हनुमान जी की प्रतिमा ग्रहण करके हम लोग आगे बढ़े। फिर हम लोगों ने कामतानाथ जी के मंदिर में पहुँचकर अपनी परिक्रमा पूरी की।

इसके बाद हम लोग वहाँ से लौटकर लगभग ६:०० बजे आरोग्य धाम पहुँचे वहाँ पर जलपान करने के पश्चात् हम लोग शैक्षिक साधना शिविर के समापन कार्यक्रम में पहुँचे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा दीनदयाल शोध संस्थान के महासचिव भी भरत पाठक जी थे। सर्वप्रथम श्री जगपाल जी के सुंदर गीत के द्वारा कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। इसके बाद वन्दना तथा वन्दना के पश्चात् कुशल जी का सुंदर गीत हुआ तथा भैया अभिषेक अग्निहोत्री द्वारा माननीय मुख्य अतिथि जी का पुष्प गुच्छ भेंट करके उनका सम्मान किया गया। इसके बाद भरत पाठक जी ने अपने वक्तव्य में दीनदयाल शोध संस्थान के प्रयासों उसकी सफलताओं तथा आगे की योजनाओ के बारे में बताया। उन्होंने राष्ट्र में फैले धन लोलुप्ता के विषय में बताया कि कर्मचारी पैसे के लिए कुछ भी कर सकते हैं। ११:३० बजे तक चले इस कार्यक्रम के पश्चात् शिविरार्थियों ने नानाजी देशमुख के साथ भोजन किया। भोजन के पश्चात हम लोग अपना सारा सामान लेकर आरोग्य धाम से चल दिए। रास्ते में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित रामनाथ आश्रमशाला विद्यालय पड़ा जहाँ पर आम के बड़े वृक्षों के नीचे अध्ययन होता है। यह विद्यालय शिशु से अष्टम् तक है। यहाँ पर घूमने के बाद बच्चो ने एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें एकल अभिनय, बॉक्सिंग आदि था। रामनाथ आश्रमशाला के बच्चों द्वारा नदियाँ न पिए कभी अपना जल ...... इंसान रे।' गीत प्रस्तुत किया गया।

यहाँ से लगभग ३:२५ बजे हम लोगों ने कानपुर विद्यालय में आने के लिए प्रस्थान किया। हम लोग सकुशल रात्रि ११:३० बजे विद्यालय पहुँचे।

हमारी परम्परा और संस्कृति हमें बताती है कि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं और इच्छाओं का पिण्ड नहीं, अपितु वह एक आध्यात्मिक तत्त्व है, जिसने भौतिक शरीर धारण कर रखा है। अतः मन्दिर की सब प्रकार से चिन्ता करते हुए भी उसका मन्दिरत्व उसमें प्रतिष्ठित मूर्ति के कारण है तथा मूति का शृंगार, धूप-दीप, नैवेद्य, अर्चन आदि उसमें निहित देवत्व के कारण हैं - इस तथ्य का विस्मरण नहीं होना चाहिए। यदि मन्दिर की रक्षा और निर्माण में मूति को भूल गए, तो हमारा सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ हो जायेगा।

- पं० दीन दयाल उपाध्याय

सैर की दुनिया की गाफ़िल ...

आशुतोष द्विवेदी
एकादश 'क'

सैर कर दुनिया की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ,
जिन्दगानी ग़र रही तो नौजवानी फिर कहाँ।

मौलवी इस्माइल की उर्दू की चौथी किताब का यह शेर सदैव ही जिज्ञासुओं को देशाटन हेतु प्रेरित करता है। हमारे बैरिस्टर साहब भी यही कहते थे कि ''यदि तुम देश को प्यार करना चाहते हो तो देश को देखो।''

इसी से प्रेरणा लेकर पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय प्रबन्धन में शिविरायोजन का निर्णय लिया।

चित्रकूट तीर्थो का सिरमौर है। प्रकृति ने अपना समस्त वैभव और विधाता ने अपना समस्त निर्माण कौशल यहीं पर उड़ेल दिया है। उस पर पतित पावन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, शत्रुदलन श्री लक्ष्मण और जगज्जननी माता जानकी के श्री चरणों के स्पर्श ने उसे परम श्रेष्ठ महातीर्थ का सुशोभनीय स्थान प्रदान करने में किंचित मात्र भी कसर नहीं छोड़ी है। अतः शिविर के लिए चित्रकूट को ही उपयुक्त समझकर उसी का चयन किया।

माननीय प्रधानचार्य जी की सद्प्रेरणा से मैं भी चित्रकूट जाने को तैयार हुआ, तो चलिए आप को भी ले चलें तीर्थ शिरोमणि चित्रकूट की यात्रा पर।

हम सभी को एक दिन पहले ही समस्त सूचनाएँ दे दी गई और सभी छात्र अत्यन्त हर्ष पूर्वक अपने सामान बाँधने लगे। मन प्रमुदित होने पर हमारे सभी कार्य शीध्र ही हो गए। हम सभी को शीध्र सोने के लिए कहा गया था किंतु सभी आपस में वहाँ की बातें करते हुए देर तक जागे। किंतु आश्चर्यजनक रुप से प्रातः शीघ्र ही उठ गए।

सभी लोग जल्दी ही तैयार होकर बस के निकट पहुँच गए। दो बसे किराए पर ली गई थी और एक विद्यालय की बस। विद्यालय की बस पर कर्मचारी थे और शेष दो बसों पर विद्यार्थी और आचार्य थे। हम सबने मिलकर सामान बस के ऊपर लदवाया और हनुमान जी, माता सरस्वती और भारत माता का जयघोष करते हुए प्रस्थान किया।

मार्ग में हम सभी जयघोष करते जा रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था माने बसें भी तीर्थ श्रेष्ठ से मिलने के लिए व्यग्र हों। रास्ते में हमने शाह नामक स्थान पर पूरी–सब्जी का जलपान किया। आगे चलने पर हमे जो निहाँ के पास से वापस फतेहपुर की ओर मुडना पड़ा।

मार्ग में कुछ अन्य छोटे विरामों के बाद हमें उच्च पर्वत शिखरों के दर्शन हुए। अहा ! क्या रमणीय दृश्य था। हम सभी के मन–मयूर नृत्य करने लगे। फिर थोड़ी देर बाद तो पर्वत अत्यन्त निकट से देखे। कोई हरे–भरे सुन्दर पर्वत तो कोई उजाड़ नंगा पर्वत।

थोड़ी देर में हमे युगऋषि नानाजी देशमुख की प्रेरणा से निर्मित सड़क पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंदाकिनी का पुल पार करते ही एक उच्च सीमेंट के फाटक पर 'आरोग्य–धाम' लिखा दिखा। यही युगऋषि नाना जी देशमुख का आश्रम है। यहीं के संकाय योग सदन में हमारे रुकने की व्यवस्था थी। पहुँचते ही हमें सूचित किया

गया कि नाना जी आने वाले है। हम तुरंत तैयार होकर वहाँ के विस्तृत आँगन में बैठे। थोड़ी देर में नाना जी आए। उनका व्यक्तित्व इतना चित्ताकर्षक था कि सभी मंत्रमुग्ध हो गए। उनकी प्रभावशाली वाणी ने हमारी सारी थकान समाप्त कर दी। उन्होंने अपने जीवन के संस्मरण सुनाए और हमें प्रेरणा दी कि हमें महापुरुषों की जीवन गाथाएँ पढ़नी चाहिए। उन्होंने बताया कि **''वह अभी भी जीवन चरित्र पढ़ते है और मृत्यु तक यदि आँखों ने साथ दिया तो पढ़ेंगे।''**

तत्पश्चात् हमने रामघाट के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पर नौकायन की व्यवस्था थी और तत्पश्चात् नाना जी के निवास पर जाना था। उस दिन शरद पूर्णिमा थी और नानाजी का जन्म दिवस भी था। उसदिन खीर खाने की व्यवस्था थी। हम सर्वप्रथम नौकायन के लिए गए। सजी–हुई नौकाएँ हमारे स्वागत के लिए तैयार थीं। एक नाव पर २५ विद्यार्थियों की बैठना था।

नौका विहार के समय पर सहसा कविवर सुमित्रानन्दन पन्त की ये पंक्तियाँ स्मरण में आ गई।

''चाँदनी रात का प्रथम प्रहर
हम चले नाव लेकर सत्वर''

नाना जी के निवास स्थान 'सियाराम कुटीर' नाव द्वारा ही गए। वहाँ पर नाना जी का जन्म दिवस मनाया जा रहा था। वहाँ पर नानाजी का जन्म दिवस मनाया जा रहा था। वहाँ पर मंच नावों को जोड़कर बनाया गया था। वहाँ पर वन्दना सारस्वत ने अपने कोकिल कण्ठ से सरस्वती वन्दना गाई और जूनियर अनूप जलोटा ने **''सुनो रे रामकहानी''** गाकर, सबका मन मोहा। वन्दना सारस्वत की वन्दना **''माँ सरस्वती वर दे''** गा कर मंत्र–मुग्ध किया। फिर खीर खाकर हम लोग वापस आरोग्य धाम आए। फिर वहाँ के दृश्य देखकर हम प्रसन्न हुए। एक ओर इतना अच्छा लॉन था जिसकी घास एकदम करीने से कटी हुई थी। एक ओर ऊँचा सा गगनचुम्बी फव्वारा था तो दूसरी ओर कम ऊँचाई का फव्वारा था जो पीली रोशनी में ऐसा लग रहा था मानो पिघला सोना बह रहा हो। 'वैदेही सरोवर' में जहाँ एक ओर मछलियाँ कूद रहीं थीं तो दूसरी ओर बतखें जलक्रीड़ा में निमग्न थीं। इन सभी स्मृतियों को संजोए हुए हम निद्रा देवी की गोद में चले गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर हमने शौच और मंजन किया और फिर आचार्य जी के साथ पुण्य सलिला, स्वच्द मंदाकिनी के तट पर पहुँचे। मंदाकिनी का निर्मल जल और नीचे से झाँकते पत्थर हमें आकर्षित कर रहे थे। फिर हम सभी ने स्नान किया। तैयार होकर हमने ''कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ'' के लिए प्रस्थान किया। हमारे साथ हमारे शिविर प्रभारी दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ता **श्रीयुत श्रीराम जी** भी थे।

वहाँ पहुँचकर हमने अनेक प्रकार के कृषि यंत्र देखे। हमने ऐसा यंत्र देखा जिससे कीड़ पकड़े जाते हैं और यह पता चलता है कि यह कीड़ा आ चुका है। हमने वहाँ पर जल प्रबंधन का कार्य देखा। वहाँ पर दो पहाड़ों के मध्य बाँध बनाकर और पहाड़ों पर २ फुट चौड़ी और १० फुट लम्बी क्यारियाँ बनाकर जल संग्रहण किया गया था। वहाँ पर **'वेणु कुटी'** थी जो सम्पूर्णतः बाँस से यह सब देखने के पश्चात् हमने चिरौंजी, कत्था, सीताफल आदि के वृक्ष देखे। वहाँ की गौशाला भी दर्शनीय थी।

हमने वहाँ पर साथ लाया गया भोजन किया और फिर हम बढ़े ''कृष्णादेवी वनवासी आवासीय बालिका विद्यालय'' की ओर। वह विद्यालय माननीय नाना जी और दीनदयाल शोध संस्थान के कर्मठ कार्यकर्ताओ के परिश्रम का फल है। यहाँ पर दूर–दूर से आयी वनवासी बहनें विद्यार्जन करती हैं। शुरू में इन्हें यहाँ रहना अच्छा नही लगता था और ये अध्यापिकाओ से लड़कर भाग जाती थीं किंतु अब वे यहीं पर पढ़ती हैं। उन्होंने स्वयं पर्वतों पर अमरूद की बाग लगाई है। उन्होंने हमें एक गीत भी सुनाया –

''हम भारत के बच्चे हैं कुछ कर के दिखाएँगे, दुनिया भर के बच्चों को हम मित्र बनाएँगे।'' **इस गीत को सुनकर अभीभूत होने के पश्चात् हम वापस लौटे।**

रास्ते में हमने **गुप्त गोदावरी** के दर्शन किए। आचार्यों ने हमारे टिकट लिए और हम पंक्तिबद्ध होकर प्रथम गुफा में गए। गुफा के रास्ते में एकदम संकरा रास्ता और अन्दर विस्तृत प्रक्षेत्र देखकर हम आश्चर्यचकित हो गए। वहाँ पर हमने **जानकी कुण्ड** में आचमन किया और **खटखटा चोर** भी देखा। उसके बारे में प्रचलित है कि वह जानकी कुण्ड में स्नान करती माँ जानकी के कपड़े चुराकर भागा तो श्री राम ने उसे तीर मार दिया और वह पत्थर बनकर लटक गया।

वहाँ से निकलकर हम दूसरी गुफा में गए जहाँ गोदावरी का जल प्रवाहित हो रहा था। वहाँ भी पत्थरों पर प्रकृति की नक्काशी दृष्टव्य है। गोदावरी के जल का उद्‌गम गुप्त है। गुप्त गोदावरी भ्रमण के पश्चात् हमने सती अनुसूया की ओर प्रस्थान किया। यहाँ का परमहंस आश्रम दृष्टव्य है। **सती अनुसूया** और अत्रि मुनि के जीवन के कई प्रसंग यहाँ पर चित्रों के माध्यम से वर्णित है।

सती अनुसूया से लौटकर हम **रामदर्शन मंदिर में गए**। वहाँ के प्रभारी **श्री बृजेश जी** थी। श्री राम के विश्वव्यापी व्यक्तित्व का दर्शन वहाँ पर हुआ। वहाँ पर **कम्बोडिया, चीन, ताइवान, थाइलैंड, कोरिया** से लाए चित्र आदि रखे थे। वहाँ पर टेलीविजन पर चीन का नाटक चल रहा था जो श्रीराम के जीवन पर आधारित थे। फिर हम वहाँ की कृत्रिम गुफा में गए जहाँ पर श्रीराम से सम्बन्धित तैल चित्र थे। वास्तव में यह मंदिर पाँच मंदिरों से बना है जो आपस में कृत्रिम गुफाओं से जुड़े हैं। वहाँ के चित्र इतने सजीव थे कि हम सब देखते ही रह गए।

वहाँ पर रंग बदलते फव्वारे को भी हमने देखा। वहाँ पर महर्षि वाल्मीकि की मूर्ति थी जो चलती था। उसमें वाल्मीकि जी लिखते हुए दिखाए गए थे। उसी के साथ ही कवि तुलसी दास जी भी थे जो पढ़ रहे थे। वहाँ पर पवनतनय श्री हनुमान की अत्यंत विशाल मूर्ति थी। वह मूर्ति देखकर हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई

यह सम्पूर्ण मंदिर माननीय नाना जी के प्रेरण से **सेठ मंगतू राम जयपुरिया** ने बनवाया है। यहाँ के चित्र आदि **श्री सुहास बहुलकर, पराग धलसासी और आशुतोष सरपोद्दार ने बनाए हैं**। इस अनुपम झाँकी के दृश्यों को अपने हृदय में संजोए हुए हम वापस आरोग्य धाम की ओर लौटे। भोजन के पश्चात् हम सो गए।

२.११.२००१ को मंदाकिनी स्नान के पश्चात् हम सुबह ६ बजे हनुमान धारा की ओर चले। लगभग ६००–७०० सीढ़ियों की चढ़ाई के बाद हम मुख्य मंदिर में पहुँचे। वहाँ एक पतली धारा निकलकर श्री हनुमान के चरण पखारती है। यह दर्शन करने के बाद हम उससे थोड़ा ऊपर **सीता रसोई** में गए। वहीं पर भरत जी श्री राम को मनाने गए थे। नीचे लौटते समय हमें चित्रकूट का विहंगम दृश्य दिखा। आरोग्य धाम भी वहाँ से दिख रहा था। हमने हनुमान धारा के जल का आचमन किया और नीचे लौट आए।

वहाँ से हमने **उद्यमिता विद्यापीठ** देखा। यह भी दीनदयाल शोध संस्थान से प्रेरित है। यहाँ पर बेरोजगारों को विभिन्न कार्य सिखाए जाते हैं। वहाँ पर बेकरी उद्योग, साबुन उद्योग, वाशिंग पाउडर उद्योग, मसाला उद्योग आदि हैं। इनका प्रशिक्षण भी दिया जाता है। उद्यमिता विद्यापीठ के पश्चात् हम **सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय** गए। यहाँ के प्रधानाचार्य जी ने बताया कि यहाँ के एक छात्र ने मध्य प्रदेश की श्रेष्ठता सूची में स्थान पाया। हमारे प्रधानाचार्य जी ने उन्हें देशकार्य में संलग्न होने का उपदेश दिया।

वहाँ से हम वापस आरोग्य धाम आए। भोजन के उपरांत हमने आरोग्य धाम में घूमने का कार्यक्रम बनाया। **जे.आर.डी. टाटा आयुर्वेद एवं योग विज्ञान शोध प्रतिष्ठान** घूमने गए। यहीं पर रसशाला भी संचालित है। वहाँ हमने च्यवनप्राश बनाने की विधि जानी और विभिन्न भस्म बनाने का प्रत्यक्ष अवलोकन किया।

वहाँ पर **दादी माँ का बटुआ** के विषय में भी जाना। यह एक ३३ जड़ी बूटियों से युक्त एक बक्सा होता है जिसे गाँव के किसी सेवाभावी प्रौढ़ को दे दिया जाता है और वह रोगियों का उपचार करता है।

आरोग्य धाम के **औषधि उद्यान** में अनेक जड़ी बूटियाँ लगी हुई थी। उनमें से कई ऐसी थीं जो कि गाँवों में कई जगह देखने को मिलती हैं किंतु अज्ञानतावश लोग उनके महत्व को नहीं समझते।

वहाँ की **गौशाला में थारपाकर, गीर, कांकरेज, साहीवाल, खिलार** प्रजातियों की गायों को देखा। कांकरेज

के मोटे और खिलार के लंबे सींग काफी भयानक लग रहे थे।

वहाँ से चलकर हम **तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां** पहुँचे। वहाँ पर मत्स्य पालन, शूकर पालन आदि कार्यों का अवलोकन करते हुए हम ऐसी इकाई में पहुँचे जहाँ केंचुओं के द्वारा प्राकृतिक खाद बनाई जाती है।

वहाँ से पदयात्रा के द्वारा हम परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय, गनीवां पहुँचे। यहाँ के छात्रों ने नियुद्ध प्रदर्शन में अपनी कला का प्रदर्शन किया किंतु उनके गीत, **''नदिया न पिए कभी अपना जल, वृक्ष न खाएँ अपना फल''** ने सभी को भावविह्वल कर दिया। यहाँ पर छात्र चिकित्सकों का एक दल है जिसके छात्र न केवल अपने विद्यालय के छात्रों की चिकित्सा करते हैं अपितु गाँवों में जाकर भी चिकित्सा करते हैं। जिससे गाँवों में नीम हकीमों का प्रभाव खत्म हो गया है। वहाँ के छात्रों से प्रेरणा लेते हुए हम वापस लौट चले।

वहाँ से हम महाकवि तुलसीदास की जन्मस्थली **राजापुर पहुँचे**। राजापुर की ऊबड़–खाबड़ गलियों में पदयात्रा करते हुए हम यमुना तट पर पहुँचे। लगभग ८० सीढ़ियाँ उतरकर हमने यमुना जल का आचमन किया। गहराई बहुत होने के कारण अन्य छात्रों को वहाँ नहीं जाने दिया गया। फिर हम सबने मंदिर में श्रीराम का दर्शन किया और फिर हमने कविवर द्वारा हस्तलिखित अयोध्याकाण्ड का अवलोकन किया।

पुलकित होते हुए हम वापस आरोग्य धाम को लौट आए।

तीन दिसम्बर को वहाँ हमारा अंतिम दिन था। नित्य कर्मों से निवृत्त होकर हमने **कामदगिरि परिक्रमा** हेतु प्रस्थान किया। थोड़ी यात्रा के बाद धनुषाकार कामदगिरि हमारा स्वागत करता हुआ दिखाई दिया। भगवान कामतानाथ के दर्शनों के पश्चात् हमने परिक्रमा प्रारम्भ की। सम्पूर्ण मार्ग में बन्दरों के कई गुट थे। उन्होंने कुछ छात्रों के प्रसाद भी छीन लिए। हम सभी ने जयकारा बोलते हुए परिक्रमा पूर्ण की। मार्ग में एक बहुत ही गहरा सीढ़ीदार तालाब भी हमने देखा। इसकी सीढ़ियाँ चारो तरफ बनी थीं और अनन्त तक जाती प्रतीत होती हैं।

कामदगिरि से हम **समापन समारोह** के लिए वापस आरोग्यधाम पहुँच गए। समापन समारोह में मुख्य अतिथि दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव **श्री भरत पाठक जी थे**। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि मानव में निराशावादी सोच पनप रही है। दीनदयाल विद्यालय तथा विद्याभारती आदि संस्थाएँ मानव को मानव बना रही हैं। उन्होंने बताया कि दीनदयाल शोध संस्थान ने १ करोड़ रुपये में ४–५ किमी रोड बनवायी जो अभी भी अच्छी अवस्था में है और मध्य प्रदेश सरकार ने ४.५ करोड़ रुपये में १ किमी रोड बनवायी जो कि टूट चुकी है। इस उदाहरण के माध्यम से उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश सरकार तथा अन्य लोगों को यह दिखाना कि प्रयास से कुछ भी हो सकता है, यही दीनदयाल शोध संस्थान का उद्देश्य है।

माननीय प्रधानाचार्य जी ने स्वदेशी कम्पनियों पर आए संकट पर चिंतन करने के लिए कहा। इसके पश्चात् सभी ने युगऋषि नाना जी देशमुख के साथ भोजन किया और पावन स्मृतियों को अपने हृदयस्थल पर समेटे हुए प्रस्थान किया।

मार्ग में हमनें **रामनाथ आश्रमशाला** नामक विद्यालय को भी देखा। यह विद्यालय आवासीय है और जनजाति के विद्यार्थियों के लिए है। यहाँ कक्षा १ से ८ तक का अध्ययन होता है। सामान्यतः कक्षाएँ बाहर बाग में लगती हैं किंतु जाड़े और बरसात में अंदर कक्षाओं की व्यवस्था थी। यहाँ के छात्र अपने लिए साबुन बना लेते हैं।

यहाँ पर विद्यालय बस की प्रतीक्षा में हमने यहाँ के छात्रों के गीत सुने जिसमें कि गनीवाँ में सुना गया गीत **'नदिया न पिए कभी अपना जल, वृक्ष न खाएँ कभी अपना फल भी था।''**

दीनदयाल विद्यालय के कुछ छात्रों ने भी छोटे–छोटे नाटकों का भी मंचन किया।

फिर हम सभी ने चित्रकूट से भरे मन से विदाई ली। श्रीराम जी भी भाव विभोर हो गए और सभी ने भरे मन से विदाई ली। तो मैं भी अब आप से विदाई लेता हूँ और अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

चित्रकूट का शैक्षिक शिविर

मृत्युञ्जय प्रताप सिंह
नवम् 'क'

विद्यार्थियों की वैचारिक–चेतना का बहुआयामी विकास करने के लिये देशाटन का बहुत ही महत्व है। देश–दर्शन के कार्यक्रम बड़ी दूरी के और लम्बी अवधि के भी होते हैं। देश–दर्शन एक ऐसा कार्यक्रम बनाया गया, जिसने अनुभूतियों को एक नयी दिशा दी। यह था श्री राम की पद–रज से पवित्र तथा मा. नानाजी देशमुख की कर्मभूमि चित्रकूट का भ्रमण तथा शिक्षा साधना के स्वरूप को संस्कृत करने के लिये लगभग तीन दिन का शिविर। आइये, देखते हैं मृत्युंजय के शब्दों में इस यात्रा का रोचक वर्णन।

सोलह नवम्बर की सदाचार वेला में प्रधानाचार्य जी ने एक ऐसी सूचना दी जिससे मेरा रोम–रोम प्रफुलित हो उठा। इस वर्ष हम लोग द्वितीय मासिक परीक्षा के बाद चित्रकूट में शैक्षिक शिविर के लिये जायेगें। मैंने चित्रकूट जाने वाले छात्रों की सूची में अपना नाम दर्ज करा दिया। दिनांक ३०–१०–२००१ को हम अपना सारा सामान लेकर विद्यालय में पहुँचे। उस रात हम लोग विद्यालय में पहुँचे। वह रात हम लोगों ने विद्यालय में ही गुजारी। सुबह हम लोगों ने अपने–अपने सामान बस में रखे व ७ बजकर १५ मिनट पर जलपान करके हम विद्यालय से जयकारे लगाते हुए चले। शैक्षिक साधना शिविर के लिए हमारे साथ १०१ छात्र कुछ आचार्य गण व कुछ कर्मचारी थे। लगभग १२ बजे फतेहपुर के आगे एक ढाबे पर हम लोगों ने जलपान किया। मनोरम दृश्यों का आनन्द लेते हुए हम लगभग ४ बजकर ३५ मिनट पर चित्रकूट पहुँचे। चित्रकूट में 'आरोग्य धाम' में ठहरने की व्यवस्था थी। पाँच बजे शिविर का उद्घाटन होना था। अतः जल्दी–जल्दी हम लोगों ने विद्यालय वेश पहना। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता परम् पूज्य श्री नानाजी देशमुख ने की। उनके उद्बोधन नें हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या मानव का उद्देश्य पढ़–लिख कर धन कमाना ही है। नानाजी ने हमें अपने जन्म दिन पर खीर भोज के लिए आमंत्रित किया। मैं यहाँ पर आरोग्य धाम की छटा का वर्णन करना नहीं भूल सकता एक तरफ पहाड़ों से घिरा दूसरी तरफ मन्दाकिनी नदी बह रही थी, वैदेही सरोवर की सुन्दरता भी कम न थी, चाँदनी रात में आरोग्य धाम की छटा देखते ही बनती थी ऐसा लग रहा था जैसे मानो हम स्वप्नों के स्वर्ग पहुँच गये। तट पश्चात हम रामघाट गये, रामघाट में हमने नौका बिहार किया। फिर हम नाना जी के जन्म–दिवस के उपलक्ष्य में हो रहे कार्यक्रम को देखने गये। हम रामघाट से ८ बजकर ३० मिनट पर लौटे। उसके पश्चात् भोजन करके सो गये। पुनः सुबह ५ बजे उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर मन्दाकिनी नदी में स्नान किया। मन्दाकिनी नदी में स्नान करके हम स्वयं को सौभाग्यशाली समझ रहे थे। स्नान करके हम लोगों ने जलपान ग्रहण किया तत्पश्चात हम चित्रकूट भ्रमण को निकले। सर्वप्रथम हम मध्यप्रदेश के जिला सतना में मझगवाँ नामक स्थान पर गये वहाँ पर हमने पहाड़ों पर खेती का अकल्पनीय नजारा देखा। इस कृषि विज्ञान केन्द्र का मूल उद्देश्य वहाँ के किसानों को कम भूमि में अधिक उपज उत्पन्न करने के लिए उपाय बताना। उसके बाद भोजन करके हमने एक वनवासी बालिका विद्यालय देखा वहाँ की छात्राओं ने गीत सुनाकर हम लोगों का स्वागत किया गया। वहाँ की प्रधानाचार्या ने अपने विद्यालय को प्रधानाचार्य जी ने भी हमारे विद्यालय क्रे बारे में उन लोगों को बताया। लगभग १ बजे हम लोगों ने वहाँ से प्रस्थान किया। हम सब मझगवाँ के शैक्षिक स्थानों को देखने के बाद 'गुप्त गोदावरी' की सुन्दर छटा को देखने गये। पहाड़ों को काटकर अद्भुत तरीके से एक गुफा बनाई। उस स्थिान को दिखाया जहाँ से जल की धारा

निकलती है। एक ढाबे पर चाय पीने के बाद हमने 'गुप्त गोदावरी' से प्रस्थान किया। हमने अब सती अनुसुइया आश्रम की तरफ प्रस्थान किया। हम जिस सड़क पर चल रहे थे उसे दो ओर पहाड़ घेरे हुये थे व एक तरफ मन्दाकिनी नदी बह रही थी, प्रकृति की इस छटा को देखकर हमारे मन को अति प्रसन्नता मिली। हमने अनुसुइया आश्रम को देखा वहाँ के बारे में बाल्मीकी जी के अनुसार एक बार अकाल पड़ा था तब माता अनुसुइया ने अपने तप से मन्दाकिनी को पवित्र धारा प्रवाहित की थी। यह मन्दिर अति सुन्दर व शोभनीय है। अनुसुइया आश्रम से प्रस्थान करके हम रामदर्शन मन्दिर को देखने गये। यह मन्दिर प. पूज्य नाना जी से प्रभावित होकर कानपुर के श्री भगतराम जयपुरिया ने बनाया था। इस मन्दिर में राम के जीवन से सम्बन्ति चित्रों को दर्शाया गया है। इस में किस देश में किस तरीके से रामलीला मनाई जाती है यह दर्शाया गया था। राम–दर्शन मन्दिर को देखने के बाद हम लगभग ७ बजे आरोग्य धाम पहुँचे। आरोग्य धाम पहुँच कर रात्रि के ६ बजे भोजन किया तत्पश्चात हम सो गये।

अगले दिन सुबह हम ४ बजे उठे। लगभग ४:३० बजे दिशा–मैदान को गये। वहीं से स्नान करने गये। मन्दाकिनी में स्नान करने गये। मन्दाकिनी में स्नान करके हम ५ बजकर ३० मिनट पर आरोग्य धाम पहुँचे। वहाँ लगभग ६ बजकर हमने जलपान किया उसके बाद हम हनुमान धारा देखने के लिए ६:३० पर चले। लगभग १५ मिनट बस में बैठने के बाद हम हनुमान धारा पहुँच गये। हनुमान धारा में मंदिर तक पहुँचने के लिए ५८० सीढ़ियाँ हमको चढ़नी पड़ी। हनुमान धारा में बहुत से लंगूर थे, पता नहीं उनका स्वभाव सामान्य लंगूरों से अलग क्यों था, ऐसा लग रहा। था जैसे वो हम लोगों को हनुमान धारा का मार्ग बता रहे हों। हनुमान धारा के कुछ और ऊपर चढ़ने पर हमने सीता रसोई देखी। सीता की रसोई को देखने के पश्चात हम पुनः आरोग्य धाम लौटे। हमने वहाँ जलपान किया व पुनः सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय देखने गये। हमने वहाँ मसाले कैसे बनाये जाते है देखा। सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय के छोटे–छोटे बच्चों को देखकर हमें अपना बचपन याद आ गया। तत्पश्चात हमने रशसाला व गौशाला देखी, भोजन करने के बाद हम गनीवाँ गये वहाँ कृषि विज्ञान के बाद हम गनीवाँ गये वहाँ कृषि विज्ञान केन्द्र व एक बनबासी विद्यालय देखा उस विद्यालय में एक ऐसी व्यवस्था थी जो हमारे मन में अभी तक रमी हुई है। विद्यालय मे बच्चे ही आपस में एक दूसरे का इलाज करते है। गनीवाँ के पश्चात हम राजापुर गये। यहीं पर तुलसी दास जी का जन्म हुआ था। यहाँ पर यमुना जी का विराट रूप देखा। सबसे बड़ी उपलब्धि यह हुई कि हमने हस्तलिखित रामचरित मानस का एक भाग देखा। राजापुर से लगभग १ घण्टे का सफर तय करके हम सो गये।

सुबह ३ बजे उठकर नित्य कर्मो से निवृत्त हुए। स्नान करने के बाद हमने चाय पी। उसके पश्चात हम कामदगिरि पर्वत को परिक्रमा करने के लिए कामदगिरि गयें। वहाँ हमने भगवान कामतानाथ जी के दर्शन किये, कामतानाथ जी के दर्शन करने के पश्चात हमने कामदगिरि की परिक्रमा प्रारम्भ की। कामदगिरि की परिक्रमा करने में साढ़े पाँच किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है। हमने मनोरंजन करते हुए परिक्रमा पूरी की। परिक्रमा में हमने काँच का मंदिर व लक्ष्मण पहाड़ी देखी। परिक्रमा पूरी करने के बाद हमने कुछ सामान खरीदा। सामान खरीदने के बाद हमने पुनः आरोग्य धाम की ओर प्रस्थान किया। आरोग्य धाम जाकर हमने अपना सारा सामान तह किया व चलने की तैयारी की । सारा सामान तह हो जाने पर हमने अपना सामान बस पर रखा। अन्तिम दिन समापन समारोह की अध्यक्षता डा. भरत कुमार ने की। हमने प० पूज्य नाना जी के साथ भोजन किया। लगभग २ बजे हमने कानपुर की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित आश्रम पद्यति से चलने वाला विद्यालय देखा। लगभग ४ बजे हमने वहाँ से प्रस्थान किया। ६:३० पर बाँदा के आगे एक ढाबे पर हमने भोजन किया। रात्रि में चुटकुले बाजी करते हुए हम ११ बजे कानपुर पहुँचे। वहाँ से हमने अपने–अपने घरों की ओर प्रस्थान किया। यह यात्रा हमारे जीवन का अनोखा अनुभव था। हम आज भी चित्रकूट भ्रमण की यादें अपने दिल में संजोये रखे हैं।

हमारा आचार्य-परिवार

१.	श्री ओमशंकर त्रिपाठी, एम०ए० (हिन्दी), बी०एड०	- प्रधानाचार्य
२.	श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी, एम०एस०सी० (जन्तु विज्ञान), बी०एड०	- उप प्रधानाचार्य
३.	श्री राजेश कुमार शुक्ल, एम०एम०सी० (रसायन विज्ञान), बी०एड०	- प्रवर आचार्य
४.	श्री रामतीर्थ मिश्र, एम०ए० (हिन्दी), बी०एड०	- प्रवर आचार्य
५.	श्री हेमन्त कुमार, एम०एस०सी० (भौतिकी), बी०एड०	- प्रवर आचार्य
६.	श्री कैलाश जोशी, एम०एस०सी० (गणित), एम०एड०	- प्रवर आचार्य
७.	श्री बिहारी लाल मिश्र, एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०	प्रवर आचार्य
८.	श्रीमती शारदा राव, एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०	- प्रवर आचार्या
९.	श्री आनन्द प्रसाद वर्मा, आई०जी०डी० (बाम्बे)	- कला आचार्य
१०.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव, एम०एस०सी० (गणित), एम०ए० (समाजशास्त्र), बी०एड०	- आचार्य
११.	श्री दीपक राजे, बी०ए०, बी०एड०	- आचार्य
१२.	श्री सुभाषचन्द्र शर्मा, एम०ए० (भूगोल), बी०एड०, डी०पी०एड० व्यायाम विशारद	- आचार्य
१३.	श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय, एम०ए० (समाजशास्त्र), बी०एड०	- आचार्य
१४.	श्री गणेश शंकर बाजपेयी, एम०ए० (संस्कृत), बी०एड० शास्त्री	- आचार्य
१५.	श्री गया प्रसाद वर्मा, एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०	- आचार्य
१६.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त, एम०ए० (प्राचीन इतिहास, राजनीति शास्त्र), एम०एड०	- आचार्य
१७.	श्री महेन्द्र प्रताप दुबे 'सुमन', एम०ए० (हिन्दी दर्शन शास्त्र), बी०एड०	- आचार्य
१८.	डॉ० उमेश चन्द्र तिवारी, एम०एस०सी०, पी०एच०डी० (वनस्पति विज्ञान), बी०एड०	- आचार्य
१९.	श्री जगपाल सिंह, एम०ए० (भूगोल), बी०एड०	- आचार्य
२०.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया, एम०एस०सी० (रसायन), बी०एड०	- आचार्य
२१.	श्री अरुण कुमार शुक्ल, एम०एस०सी० (रसायन), बी०एड०	- आचार्य
२२.	श्री श्रीप्रकाश ओझा, एम०एस०सी० (भौतिकी), बी०एड०	- आचार्य
२३.	श्री प्रदीप वाजपेयी, एम०एस०सी० (गणित), बी०एड०	- आचार्य
२४.	श्री सुधीर अवस्थी, एम०एस०सी० (रसायन), बी०एड०	- आचार्य
२५.	डॉ० मनोज शुक्ल, एम०ए० (संस्कृत), पी०एच०डी०	- आचार्य
२६.	श्री विवेक भागवत, एम०टेक० (आई०आई०टी०)	- विभागाध्यक्ष कंप्यूटर विभाग

हाईस्कूल परीक्षा २००२ में सम्मिलित छात्रों की सूची

अनुक्रमांक	नाम	पिता का नाम
0833,292	Abhinav Chaturvedi	Shri Ram Pratap Chaturvedi
0833,293	Abhinav Dwiwedi	Shri Ashor Kumar Dwiwedi
0833,294	Abhishek Gupta	Shri Pramod Kumar Gupta
0833,295	Abhishek Kumar	Shri Umesh Chandra
0833,296	Abhishek Pandey	Shri Aditya Narayan Pandey
0833,297	Abhishek Rusia	Shri Govind Das Rusia
0833,298	Abhishek Sharma	Shri Anil Kumar Sharma
0833,299	Ajay Pratap Singh	Shri Shiv Pratap Singh
0833,300	Ajeet Singh	Shri Kishuna Lal
0833,301	Akhil Chaturvedi	Shri Ved Prakash Chaturvedi
0833,302	Akhil Kumar Mishra Pundhir	Shri Arvind Kumar Singh Pundhir
0833,303	Alok Kumar Mishra	Shri Mahavir Mishra
0833,304	Aman Kumar Gupta	Shri Shivnesh Kumar Gupta
0833,305	Amit Diwedi	Shri Dinesh Chandra Divedi
0833,306	Amit Kumar Gautam	Shri Kailash Chandra Gautam
0833,307	Amit Kumar Gupta	Shri Sambhu Dayal Gupta
0833,308	Amit Mishra	Shri Ashok Kumar Mishra
0833,309	Anand Narayan Patel	Shri Subhash Chandra Patel
0833,310	Anand Shukla	Shri Dhavi Ram Shukla
0833,311	Anil Kumar	Shri Mohan Lal Nishad
0833,312	Anil Singh Chauhan	Shri Sita Ram Singh Chauhan
0833,313	Ankit Arya	Shri Ved Mitra Arya
0833,314	Ankit Sachan	Shri Suresh Chandra Sanchan
0833,315	Ankit Tiwari	Shri Shree Prakesh Tiwari
0833,316	Ankit Trivedi	Shri Om Prakash Trivedi
0833,317	Ankush Jain	Shri Manoj Kumar Jain
0833,318	Anoop Patel	Shri Satish Babu
0833,319	Anubhav Srivastava	Shri Krishna Kumar Srivastqva
0833,320	Anuj Awasthi	Shri Ram Krishna Awashthi
0833,321	Anup Kuamr Singh	Shri Ram Murti Singh
0833,322	Anurag Rajput	Shri Virendra Kumar Singh
0833,323	Apoorv Vajpayee	Shri Rakesh Vajpayee
0833,324	Aradhuya Dev Mishra	Shri Sanjeev Kumar Mishra
0833,325	Arpit Gupta	Shri Anil Kumar Gupta
0833,326	Arpit Shivhare	Shri Priya sharan Shivhare
0833,327	Arvind Pratap Singh	Shri Gyanendra Kumar Singh
0833,328	Ashish Pal	Shri Om Prkash pal
0833,329	Ashish Shukla	Shri Ashwini Kumar Shukla

0833,330	Ashutosh Katiyar	Shri Onkar Katiyar
0833,331	Ashutosh Verma	Shri Rama Kant Verma
0833,332	Avanish Katiyar	Shri Om Prakash Katiyar
0833,333	Avinesh Singh Pal	Shri Kashmir Singh Pal
0833,334	Avnish Pratap Singh	Shri Narendra Singh
0833,335	Bhupendra Kumar Pal	Shri Ranvir Singh Pal
0833,336	Brij Kishor Yadav	Shri Ram Gopa; Yadav
0833,337	Deepak Singh Sengar	Shri Anil Singh Sengar
0833,338	Dharmendra Tiwari	Shri Dinesh Chandra Tiwari
0833,339	Dhrwe Gupta	Shri Arvind Kumar Gupta
0833,340	Gqurav Bajpai	Shri Rajesh Kumar Bajpai
0833,341	Gqurav Katiyar	Shri Suresh Chandra Katiyar
0833,342	Gqurav Kumar Singh	Shri Arivend Kumar Singh
0833,343	Gqurav Mishra	Shri Rakesh Mishra
0833,344	Gqurav Shukla	Shri Rajendra Kumar Shukla
0833,345	Gqurav Srivastava	Shri Yogendra Srivastava
0833,346	Girijesh Kumar	Shri Chandra Bhal Patel
0833,347	Hari Pratap Singh	Shri Gyan Singh
0833,348	Harsh Kulshreshtha	Shri Subod Kumar Kulshreshtha
0833,349	Himanshu Tiwari	Shri Badri Vishal Tiwari
0833,350	Kapil singh Niranjan	Shri Krishna Pal Singh
0833,351	Kritivash	Shri Subodh Sharma
0833,352	Kshitiz Kumar Dubey	Shri Yogendra K. Dubey
0833,353	Kuldeep Kumar	Shri Beche lal
0833,354	Kuldeep Pandey	Shri Raj Kumaar Padey
0833,355	Kundan Singh	Shri Ghan Shyam Singh
0833,356	Manikant Kishore	Shri Arjun Prasad
0833,357	Mohit Katiyar	Shri Suresh Babu Katiyar
0833,358	Naman Chturvedi	Shri Vimlesh K. Chaturvedi
0833,359	Naveen Tiwari	Shri Brijendra Kumar Tiwari
0833,360	Neeraj Katiyar	Shri Pratap Narayan Katiyar
0833,361	Neeraj Kumar Rajpoot	Shri Siya Ram Rajpoot
0833,362	Nikhil Sachan	Shri Ashok Kumar Sachan
0833,363	Nikhil Srivastava	Shri Dhruv Srivastava
0833,364	Nitin Kumar Gupta	Shri Krishna Narayan Gupta
0833,365	Nitin Pal	Shri Asha Ram Pal
0833,366	Om Prakash Gupta	Shri Chandrika Prasad Gupta
0833,367	Pankaj Niranjan	Shri Pradeep Kumar Niranjan
0833,368	Pankaj Purwar	Shri Pradeep Kumar Purwar
0833,369	Pankaj Tiwari	Shri Ganesh prasad Tiwari
0833,370	Pradeep Tripathi	Shri Jagdish Narayan Tripathi
0833,371	Prafulla Srivastava	Shri Gyanendra Pratap
0833,372	Prashant Bhardwaj	Shri Dinesh Bhardwaj

0833,373	Prateek Shukla	Shri Nand Bharadwaj
0833,374	Prateek Singh	Shri Raghvendra Singh
0833,375	Prateek Singh	Shri Babu Ram Singh
0833,376	Praveen Dubey	Shri Anil Kumar Dubey
0833,377	Praveen Kumar Agrawal	Shri Raj Kumar Agrawal
0833,378	Priyanshu Agrawal	Shri Ravi Kumar Agrawal
0833,379	Puneet Dubey	Shri Ramesh Chandra Dubey
0833,380	Rahul Agrawal	Shri Rajeev Agrawal
0833,381	Rahul Kumar Niranjan	Shri Ashok Kumar Niranjan
0833,382	Rahul Mishra	Shri Kamleswar Mishra
0833,383	Rahul Pathak	Shri Satyendra Prakash
0833,384	Rahul Verma	Shri Ram Naresh Verma
0833,385	Ram Ji Shukla	Shri Raj Narayan Shukla
0833,386	Ranjeet Singh	Shri Sheo Putan Singh
0833,387	Ravi Prakash	Shri Raghvendra Kumar
0833,388	Rishabh Gupta	Shri Gurudev Krishana Gupta
0833,389	Ritesh Agrawal	Shri Ramesh Chandra Agrwal
0833,390	Rohit Gupta	Shri Jai Prakash Gupta
0833,391	Sameer Singh	Shri Aswini Kumar
0833,392	Sanchit Mishra	Shri Shekhar Saran Mishra
0833,393	Sandeep Kumar Gupta	Shri Umesh Chandra Gupta
0833,394	Sandeep Mishra	Shri Kalaish Nath Mishra
0833,395	Saumy Dixit	Shri Vinay Kumar Dixit
0833,396	Saurabh Jha	Shri Karuna Shanker Jha
0833,397	Saurabh Singh Niranjan	Shri Man Singh Niranjan
0833,398	Shailendra Parwal	Shri Sudhir Parwal
0833,399	Shashank Pachauri	Shri Virendra Kumar Pachauri
0833,400	Shawat Dixit	Shri Mahendra Dixit
0833,401	Shishir Sharma	Shri Chandra Shekhar Sharma
0833,402	Shiva Sanena	Shri Vinod Kumar Sanena
0833,403	Shubham Chaturvedi	Shri Sadshara Chaturvedi
0833,404	Siddharth Bajpai	Shri Pramod Kumar Bajpai
0833,405	Siddharth Tiwari	Shri Ashok Kumar Tiwari
0833,406	Snehil Tripathi	Shri S.P. Tiwari
0833,407	Somkant Mishra	Shri Mahendra Prasad Mishra
0833,408	Subodh Rajput	Shri Raja Ram Rajput
0833,409	Sumit Jaiswal	Shri Umesh Chandra Jaiswal
0833,410	Sunil Kumar Yadav	Shri Kishori Prasad Yadav
0833,411	Surendra Mohan Singh	Shri Surya M. Singh
0833,412	Surendra V.V.B. Singh Chauhan	Shri Ghan Shyam Singh
0833,413	Suvesh Sachan	Shri Arun Kumar Sachan
0833,414	Utkarsha Mishra	Shri Kapil Dev Mishra
0833,415	Utkarsh Tripathi	Shri Kamlesh Kumar Tripathi

0833,416	Vaibhav Mishra	Shri Vainash Kumar Mishra
0833,417	Vaishnavi Vivek	Shri Radha Raman Prasad
0833,418	Varun Gupta	Shri Sushil Kumar Gupta
0833,419	Varun Kumar Mishra	Shri Arun Kumar Mishra
0833,420	Vishor Dwivedi	Shri Amar Nath Dwivedi
0833,421	Vinay Narayan Verma	Shri Shiva Narayan Verma
0833,422	Vinod Kumar	Shri Trilok Narayan
0833,423	Vishal Shukla	Shri Anil Kumar Shukla
0833,424	Vishal Singh	Shri Yogendra Bahadur Singh
0833,425	Yogendra Kumar	Shri Nawas Singh

इंटरमीडिएट परीक्षा २००२ में सम्मिलित छात्रों की सूची

अनुक्रमांक	नाम	पिता का नाम
0305048	Abhi Shukla	Shri Virendra Kumar Shukla
0305049	Abhinav Chaturvedi	Shri Ramesh Babu Chaturvedi
0305050	Abhinav Gupta	Shri Vijay Gupta
0305051	Abhinav Kushwaha	Shri Rajendra Prasad
0305052	Abhishek Agnihotri	Shri Avdhesh Chandra Agnihotri
0305053	Abhishek Dubey	Shri Jeev Prakash Dubey
0305054	Abhishek Dwivedi	Shri Ashok Kumar Dubey
0305055	Abhishek Mishra	Shri Ram Tirth Mishra
0305056	Abhishek Negi	Shri Kuldeep Singh Negi
0305057	Abhishek Tiwari	Shri Shyam Behari Tiwari
0305058	Adarsh Kumar Singh	Shri Arvind Kumar Singh
0305059	Ajay Gupta	Shri Prem Chandra Gupta
0305060	Ajay Kishan Gupta	Shri Kishan Chandra Gupta
0305061	Ajay KUmar Yadev	Shri Ramanand Yadev
0305062	Ajay Pratap Singh	Shri Ajendra pal Singh
0305063	Ajit Tiwari	Shri Prakash Narayan Tiwari
0305064	Akarsh Srivastava	Shri Krishna Chandra Srivastava
0305065	Alok Chaturvedi	Shri Santosh Chaturvedi
0305066	Ambuj Singh	Shri Prem Kumar Singh
0305067	Amit Mishra	Shri Dinesh Kumar Mishra
0305068	Amit Ranjan Trivedi	Shri Kamlesh Kumar Trivedi
0305069	Amit Sharma	Shri Raj Kumar Sharma
0305070	Amit Singh	Shri Ramendra Singh
0305071	Amit Tiwari	Shri Shankar Dayal Tiwari
0305072	Anish Vatsya	Shri Santosh Mishra
0305073	Ankit Shukla	Shri Hari Nath Shukla
0305074	Anshul Rastogi	Shri Anil Kumar Rastogi
0305075	Anup Singh	Shri Raghubir Singh

0305076	Anurag Chaturvedi	Shri Ramesh Babu Chaturvedi
0305077	Anurag Pandey	Shri Aditya Narayan Pandey
0305078	Arun Singh	Shri Shiv Prasad Singh
0305079	Ashish Pratap Singh	Shri Kali Prasad Singh
0305080	Ashish Kumar Sahu	Shri Charan Sahu
0305081	Ashish Shukla	Shri Nirmal Kumar Shukla
0305082	Ashish Tiwari	Shri Shyam Behari Tiwari
0305083	Ashok Kumar	Shri Raj Narayan Pandit
0305084	Ashutosh Karn	Shri Kranti Kumar Karn
0305085	Ashutosh Tripathi	Shri Krisha Mani Tripathi
0305086	Avinash Dixit	Shri Umakant Dixit
0305087	Devendra Singh	Suresh Chandra
0305088	Deepak Dixit	Shri Surya Dixit
0305089	Gagan Deep Singh	Shri Narendra Singh
0305090	Gaurav Dwivedi	Shri Rajesh Kumar Dwivedi
0305091	Gaurav Shukla	Shri Ramendra Shukla
0305092	Gaurav Tiwari	Shri Mahesh Chandra Tiwari
0305093	Jainendra Kumar Shukla	Shri Vidya Sagar Shumla
0305094	Kanhaiya Ji Tiwari	Shri Om Prakash Tiwari
0305095	Kapil Dev Gangwar	Shri Santosh Kumar Gangwar
0305096	Keshav Kishore	Shri Pawan Kumar
0305097	Kuldeep Singh Rajput	Shri Jagdeesh Rajput
0305098	Kuldeep Kumar Yadev	Shri Mukat Singh Yadev
0305099	Lalit Sachan	Shri prveen Sachan
0305100	Love Kush Sharma	Shri Ram Krishna Sharma
0305101	Manoj Kumar Kushwaha	Shri Ram Chandra Kushwaha
0305102	Mohit Nigam	Shri Sanjay Nigam
0305103	Mohit Sachan	Shri Gaya Prasad Sachan
0305104	Pankaj Pal	Shri Ram Autar Pal
0305105	Pankaj Singh Kushwaha	Shri Ravindra Kushwaha
0305106	Pankaj Kumar Yadav	Shri Gulab Chand Yadav
0305107	Paresh Pandey	Shri Purshottam Narain Pandey
0305108	Pawan Kumar Singh	Shri Raghubar Singh
0305109	Prashant Agnihotri	Shri Rameshwar Dayal Agnihotri
0305110	Prashant Dwivedi	Shri Krshna Murari Dwivedi
0305111	Prashant Kumar	Shri Pradeep Kumar Barnwal
0305112	Prashant Mishra	Shri Man Mohan Mishra
0305113	Prasoon Gupta	Shri Munna lal Gupta
0305114	Prateek Singh	Shri Ram jee Singh
0305115	Parveer Dubey	Shri Mahesh Kumar Dubey
0305116	Pundrik Singh	Shri Ram Singh
0305117	Rahul Gupta	Shri Gaya Prasad Gupta
0305118	Rahul Joshi	Shri Sunil Kumar Singh

0305119	Rajat Awasthi	Shri Mahendra Kumar Awasthi
0305120	Rajeev Verma	Shri Pooran Lal Verma
0305121	Rajnesh Patel	Shri Rajendra Kumar Katiyar
0305122	Ravi Kumar	Shri Om Prakash
0305123	Ravi Prakash Pandey	Shri Ram Bahadur Pandey
0305124	Ravi Prakash	Shri Ram abhilash Mishra
0305125	Rishi Gupta	Shri Anand Swaroop Gupta
0305126	Rishi Tiwari	Shri Suresh Chandra Tiwari
0305127	Rishi Raj Singh	Shri Govind Singh
0305128	Rishi Raj Tiwari	Shri Arun Kumar Tiwari
0305129	Rohit Singh	Shri Naipal Singh
0305130	Pramit Rajput	Shri Ved Ram Rajput
0305131	Sameer Bhattacharya	Shri Rakesh Bhattachya
0305132	Samir Gupta	Shri Ranesh Chandra Gupta
0305133	Sanjay Singh	Shri Gaudeen Singh
0305134	Safyam Sharma	Shri Kapildev Sharma
0305135	Saurabh Bajpai	Shri Ganesh Shanker Bajpai
0305136	Saurabh Shukla	Shri Dinesh Cahndra Shukla
0305137	Saurabh Singh	Shri Anil Singh
0305138	Saurabh Tripathi	Shri Radha Krishna Tripathi
0305139	Saurabh Yadav	Shri Jaypal Singh
0305140	Shailendra Nath	Shri Girish Kumar
0305141	Shanti Prakhar Awasthi	Shri Ashok Kumar Awasthi
0305142	Shaurya Jeet Singh	Shri Narendra Singh
0305143	Sitesh Sachan	Shri Raj Badhur Sachan
0305144	Shivam Pandia	Shri Jitendra Kumar Srivastava
0305145	Shivaji Shukla	Shri Ram Prakash Shukla
0305146	Swapnil Mishra	Shri Sobodh Kumar Mishra
0305147	Swapnil Nigam	Shri Ajit Kumar Nigam
0305148	Swayam Kumar Srivastava	Shri Jai Prakash Narayan Srivastava
0305149	Upendra Mishra	Shri Avadhesh Kumar Mishra
0305150	Vaibhav Mishra	Shri Rajendra Kumar Mishra
0305151	Vaibhav Sachan	Shri Vijay pal Sachan
0305152	Vaibhav Kumar	Shri Narendra Kumar
0305153	Vijay Pratap Singh	Shri Ramdas Singh
0305154	Vikash Shukla	Shri Raj Kumar Shukla
0305155	Vinay Kumar Dwivedi	Shri Gayadutt Dwivedi
0305156	Vinod Singh	Shri Ram Kishori Singh
0305157	Vishal Singhal	Shri Anil Kumar Singhal
0305158	Vivek Pandey	Shri Rakesh Chandra Pandey
0305159	Yogesh Mishra	Shri Awadh Bihari Mishra

English Section

Our Budding Authors

Editorial

Literature is the mirror of society. The literature of a particular age reflects the socio-cultural and economic condition of the times. Authors and poets are held in great esteem by people. They express the desires and aspirations of the people in a soul stirring manner. But apart from delighting the readers, the authors have a greater social responsibility of serving as a source of inspiration for the masses. It is the moral duty of authors to write boldly about the social degradation and serve as torch-bearers to the suffering mass of humanity. All great revolutions were inspired by great authors. It has been rightly said-"The pen is mightier than the sword."

\- *SHARDA RAO*

Prose : A reflection of intellect, wit and wisdom

Work is its own reward

- G.P. Verma
M.A. Eng.

This famous proverb is really very valuable and inspiring for every person. Though work apparently seems to be a burden for us, yet it implies a secret pleasure and that is the reward of the doer. Generally people shirk and avoid work. They do not feel the pleasure behind it. We can feel the pleasure of work if we do our duty honestly and sincerely. The work or labour has a kind of mirth that can be felt when we go into the depth of it. The most precious pearls are found at the bottom of the sea. In order to get those pearls one has to dive into the sea and reach the bottom of it. In the same way we have to strive and contrive to achieve the pearls of joy. We should cultivate a habit to do our work whether manual or mental. In the beginning we may confront some obstacles, but later on, we are sure to feel rapture that is beyond description. The reason of the miracle is also mysterious. Actually the pleasure is the outcome of the labour done by us for the good of others. The moment others are benefitted by our work, the pleasure comes to the heart or mind of the man to relieve him of his pain. So we should try to perceive this mysterious pleasure. Thus we can make the earth heaven by our own efforts. We are rewarded by our own work. Then we never look forward to the result of our labour and we unknowingly do the 'Nishkam Karm' of the 'Gita'.

1. *Great authors are always greater than their books.* *- Patmore*
2. *There is nothing either good or bad, but thinking makes it so.* *-Shakespeare*
3. *In a great attempt it is glorious even to fail.* - *Longinus*
4. *Prosperity doth best discover vice, adversity doth best discover virtue.* *- Bacon*
5. *A book is like a garden carried in the pocket.* *- Proverb*

Pollution

- Naman Kumar
XI - 'A'

Pollution is a big problem of our country. Pollution is very harmful for human environment. Pollution is spreading very rapidly in our country, which is harming our generation in many ways - physically, mentally, traditionally & environmentally.

Pollution is defined as the unfavourable changes in our surroundings completely or partly as a by product of human activities through direct or indirect effects of changes in energy pattern, (chemical and physical) of organisms. Substances, which pollute environment, are called pollutants. Pollutants are broadly divided into two groups :

1- Biodegradable pollutants
2- Nondegradable pollutants

Kinds of Pollution

1- Land Pollution : Solid waste materials cause land pollution. Main sources of land pollution are as follows :
(a) Domestic wastes (b) Industrial waste
(c) Agricultural waste etc.

2- Water Pollution : Water pollution is the main problem of our country. Because of it our national rivers as Ganga & Yamuna have become very dirty and harmful for human kind. Its causes are -
(a) Industrial wastes (b) Radioactive wastes
(c) Agricultural wastes etc.

3- Air Pollution : Many gases are harmful for our environment, which pollute our air. Because of it we have many diseases. It provides CO_2, O_2 & N_2 to the living organisms. Because of air pollution there are holes in ozone layer. Its causes are :-
(a) Burning fuel (b) Automobiles
(c) Industrial Smoke etc.

4- Noise or Sound Pollution : Loudness of sound is measured in decibels. Decibel or D.B. is a ratio of loudness with reference to the softest audible sound.

It is called sound pollution. Loudness of sound, which is called sound pollution, is harmful for human being.

Because of pollution our country appears very dirty and unhygienic. Our duty is to keep clean our country and make our country pollution free.

रंगमंचीय कार्यक्रमों में अभिनय गीत बोलो जयजयकार उतारो आरती

इंटरनेट एक्सेस करते छात्र

The Book I Like Most

- Sudhanshu Shekhar
IX 'C'

I like to read books, but I always try to find out good books. I believe in wise reading not in wide reading. I generally like to read two kinds of books. They are poetry and Biography.

One of the most outstanding books that I have read is Mahatma Gandhi's "My experiments with truth" The book was presented to me by my father on my last birthday. I read the story of the father of the nation. The very first chapter of the book touched my heart. The book was written by Mahatma Gandhi in Gujrati. The book was later translated into other languages of the world. Initially the book was translated into English by Mahavir Desai. I read the first chapter twice then I proceeded to read other chapters. The book is remarkable for its style and description. While reading the book the reader feels Mahatma Gandhi is talking to him face to face. He forgets for a moment that he is reading the life story of a man who is no more in the world. The book is very popular and is liked by many. It has got literary recognition and has been rewarded too. This is the best biography in Gujrati. So I like the book most.

The Education of Children

- Pankaj
VI

The teacher undertakes to co-operate in the education of the children committed to his custody. He co-operates with the parent. The latter is expected to provide food, clothes and shelter to the child, to look after his health, to in culcate good habits in him and send him to school clean and tidy. While in school the child stays under the control of the teacher whose chief duty is to instruct him.

Education, then includes instruction. But embraces much more; in chief sense it includes all the influences which act upon an individual during his passage from the cradle to the grave. Now everything that happens to each of us leaves some impact. The happenings of early life produce greater and more lasting effects than those of mature life. The objects of education are to produce good behaviour in conduct, which promotes the welfare of society.

GLORIOUS INDIA

- Ashutosh Dwivedi
XI 'B'

- World's first university, the university of Taxila was established in 700 B.C. It had a strength of 10,500 students and a subject list of about 60 subjects.
- University of Nalanda was also a renowned university of India.
- World's earliest dam for irrigation was built in Saurastra Region of India.
- World's oldest civilization, the Harrappan culture flourished in the Sindhu valley about 5000 years ago in India.
- Chess was invented in India.
- Until 1890, India was the only source of diamonds to the world.
- Ayurveda is the earliest school of medicine known to the world.
- Art of Navigation also started in India about 5000 years ago.

Glorious Mathematicians

- The value of pi (π) was first of all calculated by Buddhayan.
- The theorem known as Pythagoras theorem was also given by Buddhayan about 1200 years before Pythagoras.
- Number system was given by India.
- 'Zero', the base of whole arithmetic was given by Aryabhatta.
- The place value system and the decimal system were given by India in about 100 B.C.

Glorious Computer Technologists

- The co-founder of Sun-Microsystems in Vinod Khosla.
- Pentium chip, on which today's 90% computers run, was created by Vinod Dahm.
- The president of AT and T-Bell labs in Arun Netravalli
- The General Manager of Hewlett Packard is Rajiv Gupta.
- The founder and creator of world's No. 1 web based e-mail program, Hotmail is Sabeer Bhatia.
- The new Microsoft testing director of Windows-2000 is Sanjay Tejwrika.
- Sanskrit, an Indian language is the most suitable language for computers according to the Forbes Magazine.

Glorious in other Countries

- 1.5% of American population is Indian, yet 36% of doctors in U.S.A. are

Indian.

- 12% of scientist in U.S.A. are Indians.
- 36% of NASA scientists are Indians.
- 34% of Microsoft employees are Indians.
- 28% of IBM employees are Indian.
- 17% of INTEL scientists are Indians.
- 13% of Xerox employees are Indians.

And Also...

- Chief Executive of Citi Bank is Victor Menezes, an Indian.
- Chief Executive of Starchart is Rana Talwar.
- Azim Premji is the third richest man of the world.

Science : Uses and Abuses

- Satyam Gupta
VII 'B'

Science has made rapid progress in recent years. For much of our comforts in life, the credit goes to science. You turn the switch on and the whole city is illuminated with a dazzling light. Science is search for truth. Science discovers those laws of nature by which the world is governed. Science equips man with power and reality of life. Science in itself is not harmful. It makes a discovery or an invention and leaves it to man to use it or abuse it. Science is neutral. It is our feeling that makes it fruitful or harmful. It is not science but its abuse that has made our life a sort of curse. Modern wars have become so terrible because of the invention of poisonous gases, tanks, cannons, bombs, torpedoes and similar other destructive weapons. Production of goods is quick and cheap now. This brings about a slump. This again causes a large scale of unemployment. Machines need hands to make them work. It is mistakenly said that science trains the intellect but not the human nature. Man has controlled the forces of nature but he has not controlled his passions and emotions. The results are simply tragic. Man has become too greedy and selfish. They want to excel each other in capturing more of the world's market and keeping more of the world's men under bondage. Actually these are not evils of science. In fact we have almost failed to pace with the spirit of science. It is silly that science can not make for man's happiness. Science can utmost provide us physical comforts. It is up to us to use or abuse science. Science itself is not an evil.

The Heroic Religion - Hinduism

- Abhishek
VI 'A'

'Hindu' is a word, which has become very common as a definition of our race and our religion. The world 'Hindu requires a little explanation. This word 'Hindu' was the name that the ancient Persians used to apply to the river 'Sindhu' when ever in Sanskrit there is "S" in ancient Persian it changes into "H". So that 'Sindhu' became 'Hindu'.

Now this word 'Hindu' was applied to the inhabitants of the other side of the 'Indus'. However, it is very hard to find any common name for our religion. Seeing that this religion is a collection of various religions of various ideas, of various ceremonials and farms.

We have yet somethings to teach to the world. To the other nations of world, religion is one among the many occupation of the life. There is politics, there are enjoyment of the social life all that wealth can buy or power can bring among all these. There is perhaps a little bit of religion. But here in India religion is the one and only occupation of the life. What the world has yet to learn from India, is the idea, not only of toleration, but of sympathy towards one another.

Ancient Indian culture and its traditions preach us to do work for each other with real love, with intense love for truth. We should not have the least desire for our own personal fame, our own personal prestige our own personal advantage.

India's gift to the world is the light of spirituality.

The Problem of Unemployment

- Nishant

There are various problems in our country and unemployment is one of them. In the present time, it is our greatest enemy. The point is that the jobs are few and claimants are many unemployment is posing a great challenge to us. It is affecting every section of society. It causes frustration and unrest among the educated youth. This frustration leads to two situations. Sometimes it increases to the extent that they commit suicide while in other cases they indulge in illegal businesses causing a great harm to the nation. There are

many causes of unemployment.

Fisrtly, our education system is faulty because it provides only bookish knowledge. But, today we find that accumulating a number of degrees is becoming the purpose of education. The students are not given any practical or technical type of education. Due to lack of employment opportunities in villages, the rural folk run towards cities with the hope of getting jobs. Increasing population at a rapid speed is also a major factor of creating unemployment. The schemes of the government to create more jobs opportunities are dwarfed by the rapidly increasing number of job seekers. The political situation in the country is also responsible for this. No government wants to end quota system in government services because of the fear of losing party's vote bank. Moreover, it is going on increasing and increasing crafty politician's interference in appointment of government employees has given birth to nepotism. All this situation have added to frustration and anger among the educated youths.

The problem of unemployment can be ended by taking some steps. Our education should be more practical based, career oriented and technical so that, after completing education if one does not get a job he can engage himself in some sort of self-employment. Problem of over population should be dealt carefully. Government should issue loans to unemployed youth easily. Interest should be increased in self employment to divert the attention of youths from government services. For license based enterprises license should be issued on less and easier conditions. Educated youth should be given priority in this regard. The planners of our country should give top priority to the problem of unemployment; otherwise all schemes will fail. ●

The Importance of Trees

- Kuldeep Yadav

VI 'B'

The biggest creator and sculptor is God Himself. Everything Created by God is in some or the other way useful for man. Trees are one of the most important creations of God. They produce oxygen in the presence of sunlight, which is one of the most important gases for the survival of man. Trees maintain the ecological balance of nature and bring rain through transpiration. The roots of trees bind the soil and prevent soil erosion. They act as the home for many animals and birds, give gum, lac, wood and many other products for the use of man. So we should avoid cutting of trees and try to grow more. ●

Mahabharat: The Great Epic in Indian History

- Nishit Kumar
VII 'A'

Lord Vyasa, the celebrated compiler of the Vedas was the son of saint Parashar. It was he who gave Mahabharata to the world.

Having conceived the Mahabharata he thought of giving the story to the world. He pleased Brahma, the creator. Vyasa prayed to him by bowing before him. He said, "Lord, I have conceived an excellent work, but can't think of one who could take it down at my dictation".

Brahma praised Vyasa and said, "O Sage invoke Ganpati and beg him to write it down for you". After saying this he disappeared. Vyasa invoked Ganesh. Vyasa said to him, "Lord, I shall dictate the story of Mahabharata and I pray you to be graciously pleased to write it down".

sGanapati replied, "I shall do as you wish. But my pen should not stop while I am writing. So you must dictate without pause. I can write only on this condition".

Vyasa agreed and guarding himself cleverly he said, " I agree but you must first grasp the meaning of what I dictate before writing".

Ganapati smiled and agreed. Then Vyas began to recite the epic. He would occasionally dictate complex stanzas which would make Ganapati pause a while to get at the meaning and meanwhile Vyas would conceive many stanzas in his mind.

Thus Mahabharata came to be written by Ganapati at the dictation of Vyas.

It was before the days of printing and books began in the minds of people. Vyas first taught the great epic to his son, Saint Suka. Later he told it to many other disciples.

"A man is great not by birth but by noble deeds".

Cowards die many times before then deaths.

Our Duty Towards Mankind

- Munish Sharma

Introduction :- When self-oriented considerations are getting dominance, any talk about man or mankind or the nature of man must start with the definition of terminologies. While introducing all these we need not do much labour; man and mankind, how much have they deviated from their path which was prescribed by that almighty needs no explanation.

Mankind consists of man :- Unless we define a man we can not proceed further. Here we are going to define a man who is more selfish than any other living being. Present day man has no time to think about a man living next door, to say the least about mankind. It is obvious that having such a self centered man we can not expect any other type of mankind and that is selfish. And if we want any success in our duty that our title tells us as "helping mankind" for the purpose at the very outset we will have to make a man helpful only then mankind can become so.

Here two things are worthy of consideration, there are "our duty" and another is "helping". These two phrases need some more clarification. Let us start with "our duty". Here too "our" gets most of our attention.

Our duty :- As said above that the word "our" denotes the doer or who will do because in our world the duty is on the shoulders of the initiator so friends it is time to change the tradition. It is time to pause and throw a beacon light on our past from "I" to "we" will only make it "our" duty. Then arises a perennial question, "who will be the initiator"?

Helping mankind :- "What is help"? Does it mean trivial money, which a rich man donates, to the poor. No, certainly not you can not materialize help, it is a state of mind it resides in soul of man it is still there the need is to revive it. The need of time is to clean the dust which has overshadowed a man's kind heart. The duty lies upon us from that state of mind.

Conclusion :- Helping mankind is our business, yes, it is our duty to transform mankind into humankind. Mankind is guided by mind but humankind is powered from the heart of that very man. So leave the material and leave the mind-hold the heart every-thing will come automatically.

PARENTS : God's Most Wonderful Gift

- Sandeep Shivhare
VII 'B'

Once a wise man asked me, name the most influential people in your life. I stuttered and hesitated and finally answered "my parents". Parents - the people who always stand by you, who watch you grow and develop, and become too big for your books. They know your deepest fears; your greatest assets, in fact, they know you better than they know themselves. They are always forgotten, always uncared for, because they are simply always there. Ready to cushion our fall. By life's relentless barricade when they are not there, we think and feel that we do not need them, but we are wrong, oh so wrong. They suck your thumb when you cut it, and lovingly apply first aid to it. You may love them. Or hate them, it really does n't matter. because you are what you are from those feelings itself. But whenever, you need love, go to your parents and everything will seem like heaven.

Violence in Young Children

- Pratyush Pranjal
VI 'A'

Today India is facing a big problem of violence in young children. Children are treated cruelly and they in turn become aggresive and violent. Such children always quarrel with one another. Research shows that many children are being ill-treated in the modern world. Parents today are not devoting proper time to children. The children stay alone in their houses and develop a defective and destructive attitude.

It is the need of the hour that proper attention be paid to children so that they can develop in a congenial atmosphere. The future of the nation depends on the children. They have a right to enjoy a happy childhood so that they grow into peace-loving and tolerant citizens of the country.

Look before you leap. *- Proverb*

The Value of Sports

-*Ankit Gupta*
VII 'B'

It is said - "The battle of waterloo was won at the play fields of Eton and Harrow". It means that young lads acquire on the playground not only physical efficiency but also discipline, habit of obedience and will to win. These virtues make them good soldiers. Thus sports, besides giving pleasure, educates youth in virtues which helps them to win the battle of life. On the playground the youths learn the lesson of discipline. Obedience and tenacity voluntarily while enjoying games they develop character. They develop the sense of discipline. They obey the rules of games as well as the orders of the captain. A sports man is never lawless. He knows the value of the Proverb "He who knows how to obey knows how to command ? Sports teach the value of team spirit and unity of action. Unity of action inspired by unity of purpose always brings success. The selfish desire of a single individual to shine at the cost of others brings disaster. In every play we often see this happening. In the hard battle of life we do not always get justice. But we should not be disheartened. We have to make further efforts. Thus sports of all kinds are good not only for the body. They are good for the mind and the character also. They make us well equipped to face any adversity in life.

The World of Advertisment

- *Ashwini Kumar*
XI 'A'

Modern world is the world of advertisements. You cann't do anything without advertisement. Every company and every man is running after advertisement.

Modern man wants his fame at any cost. For fame, it is obvious that many a man should know you.

For this advertisement is necessary. Modern forms of Media are giving a new trend to advertisements.

Various spurious goods are also getting popularity and profit only because they advertise their goods.

By public opinion poll, the result comes that about 75% of people decide what goods to buy only after reading or watching advertisment.

Now a days, every company is advertising by almost all the modes of communication.

As people depend on advertisement only, the company which does not spend much on advertisement cannot succeed.

So, in other words, it is the obligation of every company to advertise.

Even educational institutions are publishing their advertisements. All the guardians and students are confused where to get admitted.

The impact of advertisements is clear even on the children. Once a student was asked, " Sachchai kya hai". he simply said, " Hamam".

This example clearly illustrates the impact of advertisement on the children.

I am not saying that advertisement is a bad thing. But running a rat race in advertising is very bad.

For putting an end to this condition even the common man should be warned misuses against its.

Mystery of Success

- Pranjal Srivastava
XI 'B'

A life without action is lame and disabled. Man can not achieve anything great in his life unless he works hard. A man who has ability, but is not ready to work hard, can not achieve his goal. On the other hand, a man who does not have any ability, but is laborious can achieve success in his life.

Many great men of the world, did not have any support, but their hard work, perseverance and courage helped them to achieve the goal of their lives. Success comes to those who only stand the trials of time and are never tired of their work. It is not esay to get anything without working hard because -

"There is no substitute for hard work." We have to take each and every step slowly and firmly, so that we could reach the goals of our life.

Some people achieve this goal through short-cut ways or with the help of others. But this type of success is not permanent and stable. Often people point fingers at them and question their ability. Success achieved through self-recognition is universally admired and accepted permanently.

A man who has achieved success in his life, through his hard work and who has reached on top of his career, knows how to stand on the top of

something. The peak which is slopy and slippery can not support a man who does not have self determination and self-confidence. Just as going on the top is not easy, in the same way, standing and staying there is also not an easy task. Therefore, man should be careful while standing. His eyes should be directly on his action and position and he must follow the NORMS of life.

Atleast, we should always adopt an optimistic attitude to life, because without this vision, we can not pay attention to our work, disappointment can mar our enthusiasm and can even take our goals away form us. The flame of hope should remain burning inside us so that its heat could give us courage and help us to continue our journey towards the goal of our life.

" The higher the goal, the harder the climb.

But taken each day, one step at a time.

The goal is accomplished, the dream is attained.

And the prizes, The wisdom and strength.

That are gained." ●

Fasting-the true spirit

- Ravi Prakash

'12' B

If one tells you anything about fasting, then you will say I know that fasting on this particular day is associated with this God or Goddess and one has to perform these methods of prayer or eat this kind of foods on that day. I have heard many people who are advised by their priests to keep fasts on a particular day and to pray to a certain God as their stars are not favourable. For such kind of rigid fasting or prayer if you love to continue this process for a year then, one can't go on with it with true devotion and dedication as is required. Some times people perform their prayers in a great hurry as they are either getting late for office or college. In this kind of prayer one does not offer his devotion and love as is required. One can achieve his aim or make progress in life if he starts following the rules related to spirituality or for the benefit of mankind and not to religion alone. Rigid rules which are related to one's religion make strong chains with which man binds himself and he can't open his hearts for everyone. Man is unable to shower love or kindness upon everyone. The rules relating to the benefit of mankind are not related with religion or caste but they are related to a person and his heart where God

actually lives. If we understand the presence of God, we can avoid hatred and jealousy. If we fast on a particular day it is easier than the fast which I am going to explain. That only-

1- Just for today, I will not be angry.

2- Just for today, I will not worry.

3- Just for today, I will do my work honestly.

4- Just for today, I will be kind to my neighbour and every living thing.

5- Just for today, I will give thanks for the many blessings I have received from God.

This determination 'Just for today' is more important than any other fast observed during the week because one remains filled with the dirt of every, jealousy, wickedness, cruelty and can't carry this process for a long time. Only for a day and only for today if man follows this rule he will experience a divine happiness & ease at heart. The burdens of life will become lighter by this method. It will help man to elevate himself spiritually and mentally. I consider this kind of fast greater than the usual code of fasting. In this world there are rare people who follows this process but there is always a ray of hope and I am sure, people will realise this deeper meaning behind this article and implement it in their lives - for their own upliftment and the betterment of mankind.

Attitude is 100 Percent

- Ankit Bhatnagar
XI - A

Success - A word which delights everyone. A thing which every one wants. We all want to succeed in our lives. But most of us don't know the true way of success. We insist on Knowledge rather than wisdom for success. But wisdom is the biggest factor in success. Dr. Norman Vincent peale' has said in his world famous book 'the power of positive thinking'-

"The biggest difficulty with the mankind of the present is that our knowledge has increased much faster than our wisdom."

- Dr. Norman Vincent Peale

Whatever we achieves in our life does not depend on our theory based knowledge. It all depends on the way we think, the way we plan and the way we work. When it is all said and done, all of us should also known about the essential factors of success.

The most important factor is attitude. Attiude is related to our way of thinking that how we think about various people and various aspects of life. Attitude must be highly positive for success in any sphere of life. Think positve and be an optimist. An optimist always sees the bright side of life. Everything in life has advantages and drawbacks, hopes and disappointments, joys and woes, a dark side and a bright side. But all that we need is to focus on the bright side. We must be focussed on the happiness, the joys, the hopes and the good things in life. The value of attitude has been defined by 'Clement Stone' -

"There is a little difference in people, but that little difference makes a big difference. The little difference is attitude. The big difference is whther it is whether it is positive or negative." *- Clement Stone*

Our attitude must be so positive that it should not be affected by the negative influences and pessimistic thoughts. ' Burke Hedges' has said -

"Attitude is Everything" *- Burke Hedges*

The other related factor is SELF CONFIDENCE. Success always begins with the spirit of ' I CAN DO IT ' Any thing, which we want to achieve, we must have a spirit of ' I CAN ' for achieving it. ' Napolean Hill ' has said -

"Any thing the mind can conceive... and the heart can believe... you can achieve. "

- Napolean Hill

For this, we will have to finish the thinking of ' I can't '. If we want to do some thing, we will have to think ' I CAN DO IT '. we can achive a goal only if we think we can achieve it, Because ' You CAN ONLY IF You THINK You CAN'

This spirit is developed by a strong desire to gain something. This inspiration comes from mental pictures called 'DREAMS'. Don't confuse these dreams from the nightmares or the fantasies. Dreams are the mental pictures that inspire every real human endeavour our dreams must be clearly visualised in our minds which is possible only by the vision. 'Jonathan Swift' has defined vision - "Vision is the art of seeing things invisible to others." Every successful person's success began with a dream. 'Eleanor Roosevelt' has said -

"The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams."

- Eleanor Roosevelt

The another most important factor is 'Persistent Action'. Our attitude is positive, we have an 'I CAN' spirit, we have visualised our dreams but ultimately we will have to start efforts to achieve something. Only the

endeavours full of persistency can make the above ideas work. Our work must be goal oriented either in short or long term. Persistency is defined by 'Newt Ginrich' in following words -

"Persistence is the hard work you do after you get tired of doing the hard work you already did."

Persistence of efforts can only be developed by the visualisation of dreams and goal orientation with a strong self-confidence. If our goals are clear in our minds that what we want from our lives, no negative influence or small defeats would be able to depress us. We will have to build our attitude so postive that nothing could disappoint us.

"No one can make you feel inferior with out your consent."

- Eleanor Roosevelt

So, Let us begin our efforts for achieving success in our lives right now. Just say to yourself -

"I CAN DO IT. I HAVE TO DO IT. I WILL DO IT AND NO ONE CAN STOP ME FROM ACHIEVING WHATEVER I WANT IN MY LIFE."

And you would find a changed person in you. Start by doing what is necessary, then what is possible and suddenly you are doing the impossible.

My experience on selecting Biology

- Abhinav Kushwaha

12th 'B'

When I passed my high school examinations. I had two options :- Maths or Biology. I preferred Bio to Maths to make a career in medical. But what was it ? I was surprised that everyone was asking me, "Why have you selected Biology ?" All my friends and even some relatives were also surprised and I was surprised to sec hem surprised. But my father said that there was no need to be worried. So I shut my ears from these comments. But there was some doubt in a corner of my heart whether my choice was right or wrong. With this doubt. I attended my first class of Biology of Sri Umesh ji. He made me realise that my choice was not wrong and really, after that class I became totally confident.

One day, a friend of my father asked me which subject I had selected. I normally replied that I had selected Biology. "Bio ?" He said as if it was the worst subject in the world.

"But why ? I think your maths is good and you have got 85% marks in Maths in U.P. Board Examinations.?"

"yes"

"Then why have you selected bio ? Look ! my son has selected maths..."

"And have got the written stamp paper that he will be selected in I.I.T. Is it not ?" I asked him.

Now he was shocked. But making himself normal he said," But in case of Maths, if you are not selected anywhere, you can complete the course of computers."

"And similarly in case of Bio, you can complete paramedical courses." I replied.

After this discussion, he agreed with me and said that my choice was right.

Many students think that if they select Bio, they will have to dissect animals and it is a sin. One day, when we (bio-students) were doing the practicals of Biology and were dissecting the earth worm. Our Physics teacher Sri Hemant ji, came there and began to observe us. Suddenly he asked.

"How do you do such type of sins. You destroy an animal, which is already dead, for practice ?"

"But sir ! this prctice will save several lives in future and that will wash out today's sins." I replied. He said nothing but "Very True."

I would like to request my younger brothers of High School to think a little on this matter. It they want to select Bio, but are forced by their friends to select Maths, they must select Biology. Your choice must be your choice. If you are intersted in biology, you select bio.

Friends, Earth worms and Cockroachs are waiting for you in bio-lab to be dissected !

We must always change, renew, rejuvenate ourselves; otherwise we harden.
- Goethe

Life's aspirations come in the guise of children. *- Tagore*

GREENING THE RED PLANET

- Ashutosh Dwivedi
IX 'A'

The Roman God of War was a brute and a lengthy series of unmanned missions has made clear that the planet named after him, Mars, in no less hideous. Its crust; of the colour of dried blood, is studded with volcanoes more than 600 kilimetres wide, with volcanoes wide, slashed by gorges that make the grand Canyon look like a creek bed and in the southern hemisphere, is ulcerated by meteorites Over this scene streams an atmospere so cold it turns carbon dioxide into dry ice and so thin a human beeing who ventured into it without a space suit would die in minutes.

And yet, America plans to land human beings on mars before the year 2020, and highly respected scientists believe that we should investigate the posssibility of transforming Mars into a new home for man-kind. "Terraformation" the greening of Red Planet would be the most ambitious engineering project in human history. The investments would be large but the returns could be prodigious.

Now, we should ponder over the preparation which man would have to make in order to inhabitate Mars.

Outside the habitat, they will wear pressurized spacesuits. As Martian atmosphere is too thin to carry the sound of a human voice, they will converse by radio.

The weather for a walk on Martian equator in the middle of summer would be perfect about 20°c. A spacesuit would protect them from the sun's ultraviolet light and unbearable atmosphere containing 95% Carbon Dioxide.

Gravity on Mars is one- third of that on earth. The landscape would be fine sand littered with rocks and boulders. But the sand would be pink and reddish brown as Martian soil is about 13% iron, much of it is rusted.

The terrain would be much drier than any desert on Earth, so dry that an icecube placed on the ground would evaporate before it could melt.

Mars rotates once every 24 hours, 37 minutes, so a day is about as long as it is on Earth. The summer would last almost twice as long because mars takes 687 day to orbit the sun.

Mount Everest, at just about 8,848 metres would seem a foot hill compared to the Martian volcano olympus of hight 20000 metres. It is the highest known elevation in on solar system.

Valles Marineri's a series of gorges that extend almost about the entire length of India.

People would have to return home before dark as in nights the temperature drops below -80^0 C.

A big challenge would be to warm the plant. For this one way is to build chemical factories. For this one way is to build chemical factories, power them with nuclear reactors and pump out green house gases like carbon tera fluoride or sulphur hexafluoride to cover the escape of heat. The components of these compounds are present in Martian Crust.

As the temperature rises, the atmosphere would become thick but it would never become so thick to protect the planet from sun's deadly ultraviolet rays. On earth, ozone does this job but ozone is a form of oxygen and there is no oxygen on Mars. So, scientists would have to invent a substitute for ozone.

As the planet would warm to a mean temperature of -15^0 C, carbon dioxide, nitrogen and water will seep from the crust in ever increasing amounts. The atmosphere will continue to thicken. Water will pool in dead and long canyons. When the temperature would long canyons. When the temperature would reach - 9^0 C, tundra vegetation would be able to survive.

The people would start settling spacesuits and rebreathers. Now voice would be communicated by amplifiers as the atmosphere would be thick enough to carry sound waves.

Soon people will start settling on Mars. Then Earth and mars would be like Kanpur and Lucknow as regular space service would start from Mars to Earth.

The Earth would not be as populated as it is today but we would have to take care not to make Mars like Earth.

So, the Red Planet would be greened.

Civilization is the victory of persuasion over force. - Plato

Kuran-A-Sharif says

- Abhay Chaturvedi
IX A)

"The world is devided into two parts Darul Harab and Darul Islam." Darul Harab is the place of non muslims and Darul Islam is the place under the Islamic Flag. According to Kuran, Harab is the place of Kafirs. It says :-

"Make the whole world Darul Islam to make it use thoughts, money and power."

It means the Kuran orders its followers to take any step to make a man musalman. It is quite clear that it burns the fire of terror. Fanatic Muslims are strict followers of Kuran. They trampled the earth to fulfill their wishes and killed the population.

Now in modern era many followers of Islam are educated so they have become some what tolerant But even today there are many people and some countries who yet believe in old culture.

They spread violence in the name of Jehad. Some countries sponser it to fulfil their political wishes. So it clear that terrorism is related with Islamic Fanaticism but it is not related with real Islam.

Now if we see the current incidents in America in the light of above discussion, we will find that incident of America and incident of India are related fo fanaticism. So we should remove the fanaticism from world.

Then we will and we can make a different world that is full of love and sympathy.

Think it over

- Vivek Pandey
XII 'A'

We all live in a world filled with outside Influence by ather people's acts and wishes, by laws and customs, by our duties and responsiblities. We do have some effect on others and so, have their actions upon us. So still we have to find out how to live our own life, using our mind we must go on towards the dream we wish to achieve and for this, an ancient Greek philosopher had said." Know thy self." Yes this is the key advice for the man who

wants to be in all ways wealthy without knowing your self and being ourself you can not truly use the one great secret which gives you power to mould your future and make life carry you the way you want to go.

Now a days, we all use electricity for light. Edison, in fact gave the first practical electric light to the world, to be used through an electric bulb. His teacher had said that Edison had a dull mind and was not capable to take schooling. But Edison did not accept this comment. He decided to live his own life. Through early adversity, Edison discovered somethings, he might never have learnt through formal schooling first, he learnt that he had a mind he could control and direct towards any desired end. So, ultimately he was able to have his full control over his mind and it produced not only incandescent lamp but also many great discoveries. Hence, remember that adversity is a tonic not a stumbling block. But if you are in possession of your innerself there is no such thing as a knockout blow.

"You can never become a singer". This was the comment of an authority on music for the girl who wanted to be a singer. But the girl disagreed. She did not forget to become a singer. She kept possession of her own mind. She became all the more determined that she would learn to sing and sing well. This she did and the world could know her as one of the great opera stars at all times.

You can find many persons who have made fortunes, because their minds were well focussed on success. The power to use his mind with such drive and effect ? Was it unusual intelligence ? What was it then which impelled his mind to seize upon great goals and win over all the circumstances of life and make use of what could help him to achieve his ambitions ? It was success consciousness. When Henry Ford mastered the art of making good, inexpensive automobiles, he still went on using his success consciousness. So you must know your own mind and then you find success consciousness. When you come to know your own mind and live your own life. You can wipe out a record of failure just as surely as you can erase the message on a tape. You can do it yourself or you may take help of others. Swett-Morten has sightly said, "Get yourself in to the right frame of mind and you will either find what you need or find a way to do without and still achieve your goal. When your mind can truly picture a desired goal and feel success consciousness driving it towards that goal you can win that goal." We should therefore try to understand our own mind and try to over power our weakness, only then we can use our energy in right perspective which will lead us towards success.

Islam and Terrorism :
The two sides of a coin

-Abhay Chaturvedi
XI `A'

Terrorism is the problem that has shaken the world. Every country is attecked by the problem. The word terror means "Great fear" But there are many differences between terror and fear. Fear can be controlled by the force of will. But terror overwhelms the will power and paralyses it. Hence terror means a direct threat to peace.

After the incident of 11th September 2001 the world is forced to think deeply on the issue of "Terrorism". India who knows the pain of terror had many times warned the world before the black day of 11th September. But the Friend countries turned a deaf ear to India. **But when the problem entered in the yard of America suddenly they became 'Philanthropists'.**

Now the friend countries and their group NATO have made up their minds to eradicate the problem of terrorism from the world. Although we are late yet it can be a good start. For good results first we should find out the roots of terrorism. To get the roots it is essential to know what terrorism is.

In fact the think tank of world is also trying to describe terrorism. A majority. I think believes that it is due to Islamic Fanaticism. But the representatives of Islamic nations do not agree with it.

The Friend nations say that it is not because of Islam and have declared that the war is not against Islam. I think that it is not right.

I want to discuss the role of Islamic movement in the light of some facts. I don't say that each Muslim is a terrorist. I want to say that most terrorists are muslims.

It is time that we know what Islam is, what it's beliefs are and how it is related with the universal disease.

The noblest the best contentment has. - Edmend Spenser

The valiants never taste of death but once. - Shakespeare

Pearls of Wisdom

Alphabetical Order for Good Student

- Nitin Pratap Singh
VIII 'B'

A- Alert
B- Brave
C- Careful
D- Dutiful
E- Enthusiastic
F- Faithful
G- Gentle
H- Honest
I- Industrious
J- Jovial
K- Kind
L- Loving
M- Magnanimous
N- Noble
O- Obedient
P- Punctual
Q- Quiet
R- Regular
S- Smart
T- Truthful
U- Upright
V- Virtuous
W- Well-behaved
X- Excellent
Y- Youthful
Z- Zealous

Meaning of some words

- Sharad Kashyap
VIII 'B'

What is the meaning of TEACHER

T - Is for marvellous treatments
E - Is for easy way of teaching
A - Is for "Allround Knowledge"
C - Is for great calibre
H - Is for high thinking
E - Is for creation of "Enthusiasm" in us.
R - Is for being reputable

What is the meaning of School

S	-	Stands for sincerity
C	-	Stands for capacity
H	-	Stands for honesty
O	-	Stands for obedience
O	-	Stands for orderliness
L	-	Stands for learning

What is the meaning of Mathematics

M	-	Mood
A	-	Attention
T	-	Trick
H	-	Habit
E	-	Endurance
M	-	Method
A	-	Argument
T	-	Track
I	-	Interest
C	-	Concentration
S	-	Sincerity

Test your knowledge

1. Name the city, which give you shock ?
2. Name the city, which give you speed ?
3. Name the city, which give you wisdom ?
4. Name the city, which give you ability ?
5. Name the city, which give you truthfulness ?
6. Name the city, which give you mental vision ?

Answer :-

1. Electricity
2. Velocity
3. Sagacity
4. Capacity
5. Veracity
6. Perspicacity

Points to Ponder

- Amit Tiwari
XII 'A'

(1) If you give a man a fish, you feed him for a day. If you teach him how to fish, you feed him for a life time. **- Chinese Proverb**

(2) Study as if you were to live forever, live as if you were to die tomorrow. **- Mahatma Gandhi**

(3) He worked by day
And toiled by night,
He gave up play,
And some delight,
Dry books he read
New things to learn
He plodded on with
Faith and pluck;
And when he won
Men called it "Luck"

- Anonymous

(4) "A man is hero not because he is braver than anyone else. But because he is brave ten minutes longer." **- Ralf Waldo Ennercon**

(5) "Our greatest glory is not in never falling, but in rising everytime we fall". **- Confucius**

(6) Our thoughts are causes
You sow a thought
You reap an action
You sow an action
You reap a habit
You sow a habit
You reap a character
You sow a character
You reap a destiny
It all starts with a thought.

- Anonymous

Cricket v/s Examination : A comparison

- Shriyansh Purwar
VII 'A'

Cricket Stadium	Examination Hall
Bat & Ball	Pen & Pencil
Umpire	Invigilator
Third Umpire	Examiner
Batsman	Examinee
Run Out	Caught Cheating
Stumped	Caught by Examiner
Duck out	Failed
Century	Distinction
Man of the Match	First Position
Score Board	Mark Sheet
Man of the Series	First in School

The Poor

- Ashutosh Dwivedi
XI 'A'

When the whole world goes to sleep
Then the poor alone weep
We have clothes to wear and glare
But they only see and stare

We have food to eat and drink
But they only worry and think
We have house to enjoy and rest
But they have only a worn out hut

They also want to be joyful
But their life is sorrowful
Their kids also want to be happy
But they are forced to remain unhappy

They are also God's gem
Out duty is towards them
But we fear
To touch them mere

We have to break this dirty trend
Do you understand my dear friend
Is this their crime that they are poor?
We have to help them, be sure

कितने मृदु कितने कठिन प्राण

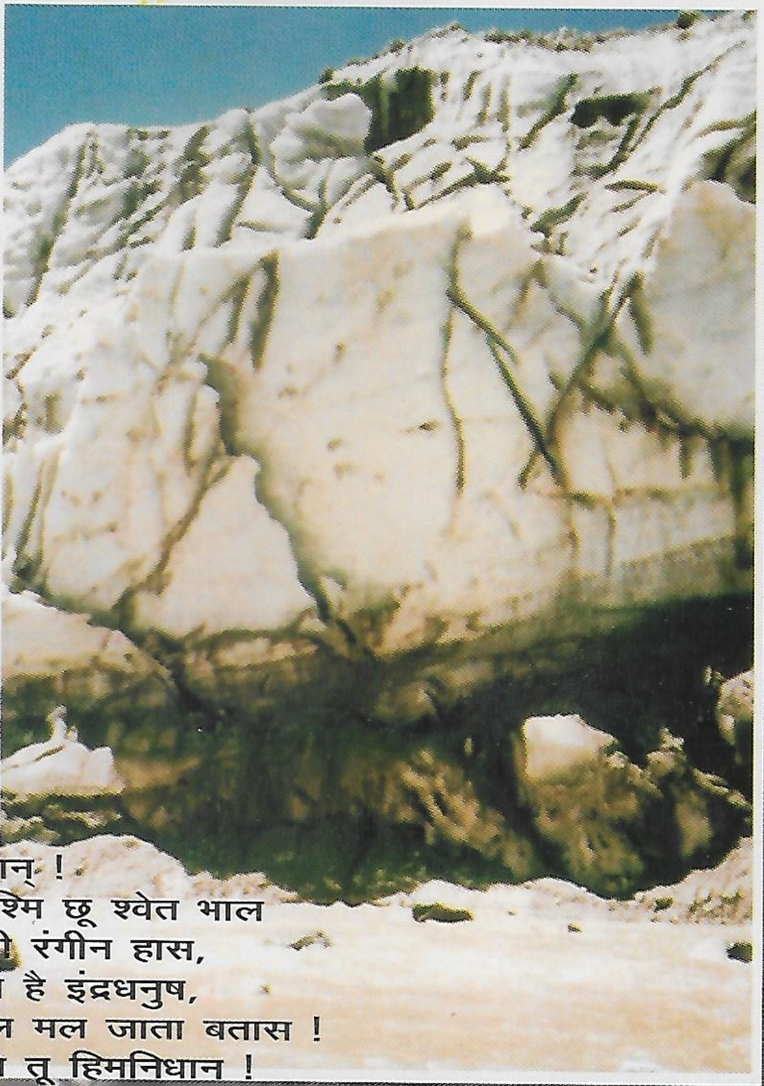

हे चिर महान् !
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल
बरसा जाती रंगीन हास,
सेली बनता है इंद्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास !
पर रागहीन तू हिमनिधान !
नभ में गर्वित झुकता न शीश,
पर अंक लिये है दीन क्षार,
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश-भार।
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!
टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार,
बह चला दृगों से किंतु नीर,
सुनकर जलते कण की पुकार
सुख से विरक्त दुख में समान !

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष - श्री इन्द्रजीत जैन, अधिवक्ता

उपाध्यक्ष - श्री ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, अ० प्रा० प्राध्यापक

मंत्री - श्री वीरेन्द्र जीत सिंह, चार्टर्ड एकाउन्टेंट

सहमंत्री - श्री इन्द्र प्रकाश रस्तोगी, अ० प्रा० प्राचार्य

सदस्य - प्रो० राजेन्द्र सिंह उपाख्य ' रज्जू भैया' सामाजिक कार्यकर्ता

श्री जयगोपाल, सामाजिक कार्यकर्ता

डॉ० जगमोहन गर्ग, उद्योगपति

श्री रामबालक मिश्र, अधिवक्ता

श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, व्यवसायी

श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी, व्यवसायी

श्री यतीन्द्रजीत सिंह, व्यवसायी

श्री ओमशंकर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य

श्री रामतीर्थ मिश्र, शिक्षक प्रतिनिधि

श्री हेमन्त शुक्ल, शिक्षक प्रतिनिधि

website : www geocities. com/pddusdv
email-pddusdv@hotmail.com

Desgin & Produced by :
Naveen Printers, Kanpur -Ph: 645966